

# संस्कृत भारती

(मैट्रिक कक्षाओं के लिए)



पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबजादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

**संस्करण : 2017-18 ..... 20,000 प्रतियाँ**

**All rights, including those of translation, reproduction and annotation etc., are reserved by the Punjab Government.**

सम्पादक

मनजीत सिंह

कृष्ण दत्त शास्त्री

संशोधक

डॉ० जीत सिंह खोखर

वेद प्रकाश शास्त्री

वीरन्द्र कुमार शर्मा

पवन कुमार मलकोटी

### चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों का जाली प्रकाशन, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी है।  
(पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मार्क' वाले कागज के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

**मूल्य : ₹ 32.00**

**सचिव,** पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज-8, साहिबजादा अजीत सिंह नगर-160062 द्वारा प्रकाशित। एवं मैसर्स नोवा पब्लिकेशन्स, सी-51, फोकल प्वाइंट एक्सटेंशन, जालन्धर द्वारा मुद्रित।

## प्राक्कथन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड का प्रमुख उत्तरदायित्व स्कूल स्तरीय सभी विषयों के पाठ्यक्रम तैयार करना, उन पाठ्यक्रमों के अनुसार पाठ्य-पुस्तकें तैयार करना तथा उन्हें नवीन शिक्षा नीति के अनुसार संशोधित करना है। संशोधित पाठ्यक्रमों के आधार पर विभिन्न विषयों की पाठ्य-पुस्तकें तैयार की जा रही हैं। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रवेश वर्ष 1998 से संस्कृत विषय की सभी पाठ्य-पुस्तकों के नवीनीकरण की क्रमिक योजना बनाई गयी है।

छठी, सातवीं और आठवीं श्रेणी की पाठ्य-पुस्तकों का नवीनीकरण पहले ही क्रमशः किया जा चुका है। हस्तिय पुस्तक इसी श्रृंखला की अगली कड़ी है। यह पुस्तक प्रवेश वर्ष 2003 से नौवीं और दसवीं श्रेणियों के लिए संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गयी है। पुस्तक को विद्यार्थियों के मानसिक स्तरानुरूप बनाने का यथेष्ट प्रयत्न किया गया है। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पाठ्यक्रम में निर्धारित व्याकरण तथा रचनात्मक भाग को पाठ्य पुस्तक में सम्मिलित किया गया है तथा शब्द कोश को पाठ्य-पुस्तक का अंग बना दिया गया है।

आशा की जाती है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। फिर भी पुस्तक को और अधिक लाभदायक बनाने के लिए विद्वानों द्वारा दिए गए सुझाव, बोर्ड द्वारा सादर स्वीकार किए जायेंगे।

**चेयरपर्सन**

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

## विषय-सूची

| क्रमांक         | विषय                                    | पृष्ठांक |
|-----------------|-----------------------------------------|----------|
| प्रथमः पाठः     | प्रार्थना                               | 1        |
| द्वितीयः पाठः   | परीक्षितं यः कुरुते, स शोभते            | 3        |
| तृतीयः पाठः     | दूत-वाक्यम्                             | 5        |
| चतुर्थः पाठः    | लोकोक्तयः                               | 8        |
| पञ्चमः पाठः     | न गङ्गदत्तः पुनरेति कृपम्               | 10       |
| षष्ठः पाठः      | महात्मा गांधीः                          | 13       |
| सप्तमः पाठः     | नीति श्लोकाः                            | 15       |
| अष्टमः पाठः     | पत्रम्                                  | 17       |
| नवमः पाठः       | साहसिकः वीरभद्रः                        | 20       |
| दशमः पाठः       | चित्र-श्लोकाः                           | 22       |
| एकादशः पाठः     | चित्रकर्णः उष्ट्रः                      | 24       |
| द्वादशः पाठः    | रूप्यकस्य आत्मकथा                       | 27       |
| त्रयोदशः पाठः   | सुभाषितानि                              | 30       |
| चतुर्दशः पाठः   | श्री गुरू नानक देवः                     | 33       |
| पञ्चदशः पाठः    | भाष्य-प्रतिज्ञा                         | 36       |
| षोडशः पाठः      | हितोपदेशः                               | 38       |
| सप्तदशः पाठः    | सूर्य-परिवारः                           | 40       |
| अष्टादशः पाठः   | तुलां लोहेन घटितां यत्र खादन्ति मूषिकाः | 43       |
| नवदशः पाठः      | सुप्रभातम्                              | 46       |
| विंशः पाठः      | संस्कृतस्य महत्त्वम्                    | 48       |
| एकविंशः पाठः    | स्वामी रामतीर्थः                        | 51       |
| द्वाविंशः पाठः  | गीतामृतम्                               | 54       |
| त्रयोविंशः पाठः | महाराजा रणजीत सिंहः                     | 57       |
| चतुर्विंशः पाठः | कश्मीर यात्रा                           | 60       |
| पञ्चविंशः पाठः  | मनु-वचनानि                              | 62       |
| षड्विंशः पाठः   | विज्ञानस्य चमत्काराः                    | 64       |
| सप्तविंशः पाठः  | भारत-कोकिला सरोजिनी                     | 66       |
| अष्टाविंशः पाठः | यक्ष-युधिष्ठिरयोः संवादः                | 69       |
| नवविंशः पाठः    | भारतम्                                  | 71       |
| त्रिंशः पाठः    | अन्त्याक्षरी                            | 73       |
|                 | व्याकरण भागः                            | 77       |
|                 | अनुवाद-भाग                              | 133      |
|                 | शब्द-कोषः                               | 153      |

## संक्षेप-सूची

|           |                 |
|-----------|-----------------|
| अ०        | अव्यय           |
| अदा०      | अदादिगण         |
| अव्ययी०   | अव्ययीभाव समास  |
| उ०        | उत्तम पुरुष     |
| ए०        | एकवचन           |
| कर्म०     | कर्मधारय समास   |
| क्रि० वि० | क्रिया विशेषण   |
| क्रया०    | क्रयादिगण       |
| चुरा०     | चुरादिगण        |
| जुहो०     | जुहोत्यादिगण    |
| तत्पु०    | तत्पुरुष समास   |
| तना०      | तनादिगण         |
| तुदा०     | तुदादिगण        |
| दिवा०     | दिवादिगण        |
| द्वन्द्व० | द्वन्द्व समास   |
| द्वि०     | द्विवचन         |
| नपुं०     | नपुंसकलिङ्ग     |
| पुं०      | पुंलिङ्ग        |
| प्र०      | प्रथम पुरुष     |
| ब०        | बहुवचन          |
| बहु०      | बहुब्रीहि समास  |
| भ्वा०     | भ्वादिगण        |
| म०        | मध्यम पुरुष     |
| रुधा०     | रुधादिगण        |
| वि०       | विशेषण          |
| सं०       | संख्यावाची शब्द |
| सर्व०     | सर्वनाम         |
| स्त्री०   | स्त्रीलिङ्ग     |
| स्वा०     | स्वादिगण        |

प्रथमः पाठः

## प्रार्थना

प्रभो ! देश-रक्षा-बलं मे प्रयच्छ ।  
नमस्तेऽस्तु देवेश ! बुद्धिं च यच्छ ॥  
सुताः ते वयं शूर-वीराः भवाम ।  
गुरुन् मातरं चापि तातं नमाम ॥

घृणायाः तु नाशः सदैक्यस्य वासः ।  
भवेद् भारते स्नेह-वृत्तेः विकासः ॥  
प्रजातांत्रिकं राज्यम् अस्माकमत्र ।  
सदा वर्धतां मंगलायात्र तत्र ॥

न कोऽपि क्षुधा-पीडितो मानवः स्यात् ।  
न रुग्णो न नग्नो न दीनश्च तस्मात् ॥  
न शिक्षा-विहीनञ्च पश्याम कञ्चित् ।  
प्रभो ! भारतस्योन्नतिः स्यात् कथञ्चित् ॥

सुखैः पूर्णमेतद् भवेद् भारतं मे ।  
भवेदत्र नित्यं प्रभोऽनुग्रहस्ते ॥  
इयं कामना प्रार्थनैषा विधातः ।  
इमां पूरयैकां अये लोकमातः ॥

## शब्दार्थः

मे = मुझे, मेरा  
तातम् = पिता को  
स्नेह-वृत्तेः = प्रेम भाव का

ते = तुझे, तेरा  
सुताः = पुत्र, पुत्रियाँ  
ऐक्यस्य = एकता का

वर्धताम् (वृध्) = बढ़े

इयम् = यह

क्षुधा-पीडितः = भूख से दुःखी

प्रजातान्त्रिकम् = जनता का

कथञ्चित् = किसी तरह

इमाम् = इसको

लोकमातः = मातृभूमि

### अभ्यास

1. प्रार्थना का सरलार्थ हिन्दी में लिखो।
2. सन्धिच्छेद करो  
देवेश, नमस्ते, सदैव्यस्य, कोऽपि, पूरयैकाम्, प्रार्थनैषा।
3. संस्कृत में उत्तर लिखो-  
(क) बालकः प्रथमं किम् प्रार्थनां करोति?  
(ख) भारतस्य सुताः कीदृशाः भवेयुः?  
(ग) अन्तिमे पदे का कामना अस्ति?





द्वितीयः पाठः

## परीक्षितं यः कुरुते, स शोभते

कस्मिंश्चित् वनप्रदेशे खरनखरः नाम सिंहः प्रतिवसति स्म । सः कदाचित् इतस्ततः परिभ्रमन् क्षुधया व्याकुलः न किञ्चित् अपि सत्त्वं प्राप्नोत् । ततः च सार्यकाले महतीं गिरीगुहाम् एकां प्राप्य प्रविष्टः सः अचिन्तयत्—“नूनम् एतस्यां गुहायां रात्रौ कः अपि जन्तुः आगमिष्यति । तत् प्रच्छनः भूत्वा तिष्ठामि ।”

एतस्मिन् अन्तरे गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः आगच्छत् । सः च अपश्यत् यत् सिंहस्य-पद-पङ्क्तिः गुहायां प्रविष्टा न च निष्क्रान्ता इति । ततः च सः अचिन्तयत्—“अहो, विनष्टः अस्मि । नूनम् अस्याम् अन्तर्गतः सिंहः अस्ति । तत् किं करोमि ?” कथं ज्ञास्यामि ?

एवं विचिन्त्य सः द्वारस्थः फूत्कर्तुम् आरभत—“अहो बिल, अहो बिल” इति । एवम् उक्त्वा तृष्णीभूय पुनः अपि सः तथैव अवदत्—“भोः, किं न स्मरसि मया सह कृतं समयं यत् बाह्यात् समागतः अहं त्वां वदिष्यामि त्वं च मां प्रतिवदिष्यसि इति ? यदि मां न प्रतिवदसि तत् अहम् अन्यद् बिलं गच्छामि ।”

अथ तत् श्रुत्वा सिंहः अचिन्तयत्—“नूनम् एषा गुहा अस्य समागतस्य सदा आह्वानं करोति । परम् अद्य मद् भयेन न किञ्चित् वदति । तत् अहम् अस्य आह्वानं करोमि, येन तदनुसारेण प्रविष्टः अयं मम भोज्यतां गच्छति ।”

एवं विचार्य सिंहः तस्य आह्वानम् अकरोत् । अथ सिंह-शब्देन सा गुहा प्रतिध्वनिसम्पूर्णा अभवत्, अन्यान् अपि च अरण्य-जीवान् अत्रासयत् । शृगालः अपि पलायमानः इदम् अवदत्—

परीक्षितं यः कुरुते स शोभते

न शोभते यः कुरुतेऽपरीक्षितम् ।

वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा

बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता ॥



### शब्दार्थः

|                                   |                                  |
|-----------------------------------|----------------------------------|
| इतस्ततः = (इतः+ततः) इधर-उधर       | समयम् = प्रतिज्ञा या नियम को     |
| सत्त्वम् = पशु को                 | गुहायाः = गुफा का                |
| परीक्षितम् = (परि+ईक्षितम्) अच्छी | प्रच्छन्नः = छिपा हुआ            |
| प्रकार से देखे हुए अथवा           | ज्ञास्यामि = जानूँगा, पता करूँगा |
| जाँचे हुए (काम) को                |                                  |

### अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो :-  
 (क) सिंह ने गुफा में प्रवेश क्यों किया?  
 (ख) गुफा किसका आह्वान करती थी?  
 (ग) इस कथा से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- सन्धिच्छेद करो—  
 इतस्ततः, तथैव, तदनुसारेण, वनेऽत्र, कदापि।
- रेखांकित पदों में यथानिर्दिष्ट परिवर्तन करो—  
 (क) मद् भयेन सा न किञ्चित् वदति (लङ् में)  
 (ख) तत्र प्रच्छन्नः भूत्वा तिष्ठामि। (लृट् में)  
 (ग) नूनं गुहायाम् अन्तर्गतः सिंहः अस्ति। (स्त्रीलिंग में)
- रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :—  
 (क) रात्रौ कः अपि ..... आगमिष्यति।  
 (ख) बाह्यात् समागतः ..... त्वां वदिष्यामि।  
 (ग) तत् श्रुत्वा ..... अचिन्तयत्।
- संस्कृत में उत्तर लिखो—  
 (क) वनप्रदेशे कः प्रतिवसति स्म?  
 (ख) गुहायाः स्वामी कः आसीत्?  
 (ग) कः न शोभते?



## तृतीयः पाठः

### दूत-वाक्यम्

- कञ्चुकीः— जयतु जयतु महाराज । एष खलु पाण्डवशिविराद् दौत्येन आगतः पुरुषोत्तमो नारायणः ।
- दुर्योधनः— मा तावद् भो बादरायण, किं किं सः कंसभृत्यः तव पुरुषोत्तमः ? स गोपालकः तव पुरुषोत्तमः ? आ ! सत्वरं निर्गच्छ, मम पुरतः ।
- कञ्चुकीः— प्रसीदतु प्रसीदतु महाराजः । दूतः प्राप्तः केशवः ।
- दुर्योधनः— भोः, सम्यक् कथयसि साम्प्रतम् । भो भो राजानः । योऽस्य केशवस्य कृते प्रत्युत्थास्यति, तमहं दण्डयिष्यामि । बादरायण ! प्रवेशय अधुना तं दूतम् ।
- कञ्चुकीः— यदाज्ञापयति महाराजः । इति निर्गच्छति ।
- दुर्योधनः— वयस्य कर्णं । अद्य कृष्णमतिः स कृष्णः पाण्डवानां दौत्येन अत्रागच्छति । युधिष्ठिरस्य नारी-मृदूनि वचनानि श्रोतुं त्वमपि कर्णो सज्जय ।
- (ततः प्रविशति वासुदेवः कञ्चुकी च)
- वासुदेवः— (स्वगतम्) कथं कथं मां विलोक्य संभ्रान्ताः सर्वे राजानः ? (प्रकाशम्) अलमलं संभ्रमेण । नूनं स्वैरमासतां भवन्तः ।
- दुर्योधनः— (स्वगतम्) कथं कथं केशवं दृष्ट्वा संभ्रान्ताः सर्वे नृपाः ? (वासुदेवं प्रति) भो दूत ! एतद् आसनमास्यताम् ।
- वासुदेवः— आचार्य आस्यताम् । श्रीभीष्मप्रमुखा राजानः ! स्वैरमासतां श्रीमन्तः । वयम् अपि उपविशामः ।
- दुर्योधनः— भो दूत । धर्मात्मजः, वायुसुतो भीमः, इन्द्रपुत्रो मे भ्राता अर्जुनः, विनीतौ च तौ नकुलसहदेवौ, कञ्चित् सन्ति सर्वे कुशलिनः ?
- वासुदेवः— सदृशमेतद् गान्धारीपुत्रस्य । कुशलिनः सर्वे, भवतो राज्ये शरीरे च कुशलमनामयं च पृष्ट्वा विज्ञापयन्ति युधिष्ठिरादयः पाण्डवाः

अनुभूतं महद् दुःखं, सम्पूर्णः समयश्च सः ।

अस्माकमपि धर्म्यं यद् दायार्थं तद् विभज्यताम् ॥

दुर्योधनः— कथं कथं दायार्थमिति ? देवात्मजास्ते नैवर्हन्ति दायार्थम् ।

वासुदेवः— भो राजन् । मा मैवम् । एवं परस्परविरोधस्य विवर्धनेन कुरुकुलं शीघ्रमेव नामशेषं भविष्यति । अत एव क्रोधं वैरञ्च अपहाय तदेव भवान् कर्तुमर्हति यत्त्वां युधिष्ठिर- प्रमुखाः प्रणयात् कथयन्ति ।

दुर्योधनः— मनुष्याणां देवात्मजैः सह कथं बन्धुता भवेत् ? भवन्तस्तु वारं-वारं एवं कथयन्ति । अस्य विषयस्य तु कथाऽपि न कर्तव्या ।

वासुदेवः— भो दुर्योधन ! न जानीषे तावदर्जुनस्य पराक्रमम् किं बहुना—  
दातुमर्हसि मद् वाक्याद् राज्यार्धं धृतराष्ट्रज !  
अन्यथा सागरान्तां गां हरिष्यन्ति हि पाण्डवाः ॥

दुर्योधनः— कथं कथं हरिष्यन्ति हि पाण्डवाः ? भो पुरुष-वचनदक्ष ! शृणु तावत्— यदि युद्धे भीमरूपो मारुतोऽपि मां प्रहरति, साक्षाद् अर्जुनरूपेण च इन्द्रश्च प्रहरति, तथापि त्वद् वचोभिः तृणादि न दास्ये किं पुनः राज्यार्धम् ।

वासुदेवः— एवमेव अस्तु । न वयम् अनुक्तसन्देशः गन्तुम् इच्छामः । तदा आकर्ण्यतां युधिष्ठिरस्य संदेश- अरे शठ ! त्वत् कारणात् कुरुवंशः शीघ्रं एव नशिष्यति । भो भो राजानः ! गच्छामः वयं तावत् । ( इति निर्गच्छति )

( भासकृत 'दूतवाक्य' नाटक से )

### शब्दार्थः

दौत्येन = दूत के रूप में

प्रत्युत्थास्यति = अभ्यागत के स्वागत के लिय उठना

बादरायणः = व्यास

आस्याताम् = बैठिए

सत्वरम् = शीघ्र

साम्प्रतम् = अब

सम्भ्रमेण = घबराहट से

अनामयम् = स्वस्थ

दायाद्यम्= पैतृक सम्पत्ति  
 नामशेषम्= नाम ही शेष  
 दास्ये= दूँगा

विवर्धनेन= बढ़ाने से  
 गाम्= पृथ्वी को

### अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो :—  
 (क) दुर्योधन के पास दूत के रूप में कौन गया ?  
 (ख) श्री वासुदेव को देखकर राजाओं पर क्या प्रभाव पड़ा ?  
 (ग) श्री वासुदेव ने पाण्डवों का क्या सन्देश दिया ?
२. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :—  
 (क) ..... निर्गच्छ मम पुरतः ।  
 (ख) आगतः पुरुषोत्तमः ..... ।  
 (ग) कथं कथं हरिष्यन्ति हि ..... ।
३. अव्ययों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करो :—  
 कृते, सत्त्वरम्, सम्यक्, अधुना, साम्प्रतम्
४. उपसर्ग अलग करो :—  
 प्रहरति, सम्पूर्णः, अनुभूतम्, प्रसीदतु, निर्गच्छति ।



चतुर्थः पाठः

## लोकोक्तयः

१. अति सर्वत्र वर्जयेत् ।
२. अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम् ।
३. आचारः परमो धर्मः ।
४. उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत ।
५. उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय, न शान्तये ।
६. उपायेन हि यच्छक्यं न तच्छक्यं पराक्रमैः ।
७. काव्य-शास्त्र-विनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
८. गते शोको न कर्तव्यः ।
९. चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च ।
१०. जननीं जन्म-भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।
११. न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।
१२. परोपकाराय सतां विभूतयः ।
१३. बुभुक्षितः किं न करोति पापम् ?
१४. यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ।
१५. वरम् एको गुणो पुत्रो, न च मूर्ख-शतान्यपि ।
१६. विनाश-काले विपरीत-बुद्धिः ।
१७. सत्यमेव जयते, नानृतम् ।
१८. सर्वाः आशाः मम मित्रं भवन्तु ।
१९. सुखं हि दुःखानि अनुभूय शोभते ।
२०. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।

### शब्दार्थः

|                                                 |                                 |
|-------------------------------------------------|---------------------------------|
| वर्जयेत् = छोड़ना चाहिए                         | परिवर्तन्ते = बदल जाते हैं      |
| घोषम् = ध्वनि को, आवाज को                       | गरीयसी = अधिक, महान्, बढ़कर     |
| यच्छक्यम् = (यत्+शक्यम्)<br>जो किया जा सकता है। | ब्रूहि = (वच् लोट्, म. ए.) बोलो |
| चक्रवत् = पहिये के समान                         | आशा = दिशाएं                    |
|                                                 | धीमताम् = बुद्धिमानों का        |

### अभ्यास

- सन्धिच्छेद करो—  
उपैति । तच्छक्यम् । स्वर्गादपि । भूमिश्च ।
- अव्ययों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करो—  
सर्वत्र, नूनम्, अति, मा, पुरतः ।
- कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—  
(क) सत्यमेव ————— नानृतम् (भवति, जयते, शोभते)  
(ख) न हि सुप्तस्य सिंहस्य ————— मुखे मृगाः  
(पश्यन्ति, प्रविशन्ति, गच्छन्ति)  
(ग) सुखं हि ————— अनुभूय शोभते ।  
(सत्यं, शोकं, दुःखानि)
- निम्नलिखित भावों से सम्बन्धित सूक्तियाँ लिखो :

| भाव                                                                   | सूक्ति |
|-----------------------------------------------------------------------|--------|
| मनुभूमि का गौरव<br>आलस्य<br>भूख और पाप<br>उपाय और पराक्रम<br>सुख-दुःख |        |





पंचमः पाठः

## न गङ्गादत्तः पुनरेति कूपम्

कस्मिंश्चित् कूपे गङ्गादत्तः नाम मण्डूक- राजः प्रतिवसति स्म । सः कदाचित् दायादैः उद्वेजितः अरघट्ट-घटीम् आरुह्य बहिः आगच्छत् । सः अचिन्तयत् “कथं तेषां दायादानां प्रत्यपकारं करोमि ?” तदैव सः बिले प्रविशन्तं कृष्ण- सर्पम् अपश्यत् । तं दृष्ट्वा सः पुनः अचिन्तयत्—“एनं सर्पं तत्र कूपे नीत्वा सकलानां दायादानाम् उच्छेदं करोमि ।” एवं आलोच्य सः तस्य बिल-द्वारं गत्वा तम् आह्वयत्—“एहि, एहि, प्रियदर्शन ।” । तत् श्रुत्वा सर्पः अचिन्तयत्—“यः एषः माम् आह्वयति सः वाण्या स्वजातीयः न भवति ।” अथ सः तम् अपृच्छत्—“भोः कः भवान् ?” सः अवदत्—“अहं गङ्गादत्तः नाम मण्डूक-राजः तव सकाशं मित्रतार्थम् आगतः ।” सर्पः अवदत्—“अश्रद्धेयम् एतत् यत् तृणानाम् अनलेन सह संगमः ।” गङ्गादत्तः आह—“भोः, सत्यं स्वभाव-वैरी त्वम् अस्माकम्, परं दायादैः अपमानितः अहं प्राप्तः तव सकाशम् ।”

एतत् श्रुत्वा सर्पः व्यचिन्तयत्—“अहं तावत् वृद्धः, कदाचित् कथंचित् मृषिकम् एकं प्राप्नोमि । तत् एषः कुलाङ्गारः इमं सुखावहं जीवनोपायं मां दर्शयति । तत् गत्वा तान् मण्डूकान् भक्षयामि ।”

एवं आलोच्य सः तम् अवदत्—“भोः गङ्गादत्त, यदि एवं तत् अग्रे भव, येन तत्र गच्छावः ।” गङ्गादत्तः अवदत्—“भोः प्रियदर्शन अहं त्वां सुखोपायेन तत्र नेष्यामि, परं त्वया मम परिजनः रक्षणीयः । यान् अहं तव दर्शयिष्यामि केवलं ते एव भक्षणीयाः” इति । सर्पः ‘एवं भवतु’ इति उक्त्वा बिलान् निष्क्रम्य तेन एव सह तस्य आलयम् अगच्छत् ।

ततः गङ्गादत्तः कृष्णसर्पं तान् दायादान् अदर्शयत् । सर्पः तान् क्रमेण अखादत् । अथ शत्रु-मण्डूकानाम् अभावे जाते सर्पः अकथयत् “भद्रः निश्शेषिताः ते रिपवः, तत् मण्डूकम् एकैकं स्ववर्गीयं प्रयच्छ । अन्यथा सर्वान् अपि खादिष्यामि ।” अथ भीतः गङ्गादत्तः नित्यम् एकैकं सुहृदं तस्मै अयच्छत् । सः अपि सर्वान् तान् शनैः शनैः भक्षयित्वा तस्य परोक्षे कदाचित् गङ्गादत्तस्य पत्नीं सुतं च अपि अभक्षयत् । केवलम् एकः गङ्गादत्तः अवशिष्टः ।



ततः प्रियदर्शनः अभणत्- “भोः गङ्गदत्त, बुभुक्षितः अहम्। दीयतां मे किञ्चित् भोजनं यतः त्वं माम् अत्र आनयः।” स अवदत्- “भोः मित्र, न त्वया अत्र विषये का अपि चिन्ता कार्या। यदि मां प्रेषयसि ततः अन्यस्मिन् कूपे स्थितान् मण्डूकान् अपि विश्वास्य अत्र आनयामि। सर्पः आह- “एवं क्रियताम्” इति।

सः अपि तत् श्रुत्वा अरघट्ट-घटीम् आश्रित्य तस्मात् कूपात् बहिः आगतः। अथ चिरम् अनागते गङ्गदत्ते प्रियदर्शनः अन्य कोटर-वासिनीं गोधाम् अभणत्- “क्रियतां स्तोकं साहाय्यम्। यतः चिर-परिचितः ते गङ्गदत्तः, तत् बहिः गत्वा तम् अन्विष्य मम सन्देशं कथय- यदि अन्ये मण्डूकाः न आगच्छन्ति, तत् आगच्छतु एकाकी एव भवान्। अहं भवता विना न अत्र वस्तुं शक्नोमि इति।

गोधा अपि तद्वचनात् गङ्गदत्तम् अन्विष्य अवदत्- “भद्र गङ्गदत्त, सः तव सुहृत् प्रियदर्शनः तव मार्गं प्रतीक्षमाणः तिष्ठति। तत् शीघ्रम् आगम्यताम्।” तत् श्रुत्वा गङ्गदत्तः अकथयत्—

बुभुक्षितः किं न करोति पापं ?

क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति ॥

आख्याहि, भद्रे, प्रियदर्शनस्य,

न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम् ॥

### शब्दार्थः

पुनरेति = (पुनः + एति) दोबारा आता है एहि = (आ + इ, लोट् म.ए.) (तू) आ

दायादः = पैतृक-सम्पत्ति में हिस्सेदार,

आलोच्य = (आ + लोच्, क्त्वा प्रत्यप्)

शरीक

सोचकर

अरघट्ट-घटीम् = रहट की घड़िया को

आह्वयति = (आ + ह्वे, लट् प्र. ए.)

प्रत्यपकारम् = बदले में बुरे काम को

बुलाता है

निःशेषिता = शेष नहीं रहने दिए,

मित्रतार्थम् = (मित्रता + अर्थम्) मित्रता

नष्ट कर दिये

के लिए

अवशिष्टः = बच गया

अश्रद्धेयम् = विश्वास न करने योग्य

आश्रित्य = सहारा लेकर

कुलाङ्गार = वंश के लिए अंगार रूप

स्तोकम् = थोड़ा सा

अर्थात् कुलनाशक

अन्विष्य = ढूँढ़ कर

परिजन = परिवार के सदस्य एवं अन्य

तद्वचनात् = उनके कहने से

रिश्तेदार

बुभुक्षितः = भूखा  
एकाकी = अकेला

प्रतीक्षमाणः = प्रतीक्षा करता हुआ

### अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो  
(क) बिल में जाते हुए साँप को देखकर गङ्गदत्त ने क्या कहा?  
(ख) गङ्गदत्त के पुत्र और पत्नी को खाने के बाद साँप ने क्या कहा?  
(ग) साँप ने गोह द्वारा क्या संदेश भेजा?  
(घ) गङ्गदत्त ने गोह को क्या उत्तर दिया?
२. सन्धिच्छेद करो:-  
जीवनोपायम्, एकैकम्, व्यचिन्तयत्, मित्रतार्थम्
३. कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर खाली स्थान भरो:-  
(क) न तृणानाम्..... सह संगमः (जलेन, वायुना, अनलेन)  
(ख) मण्डूकराजः बिले प्रविशन्तं .....अपश्यत्।  
(गोधाम्, सर्पम्, नकुलान्)  
(ग) अहम् अन्यान् मण्डूकान् अपि अत्र-----  
(आनयसि, आनयामि, आनयामः)
४. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो:-  
(क) अहं तव सह न गमिष्यामि।  
(ख) गोधा कूपेन बहिः आगच्छत्।  
(ग) संस्कृत-पुस्तकं मां प्रयच्छ।
५. संस्कृत में उत्तर लिखो:-  
(क) कूपे कः प्रतिवसति स्म?  
(ख) गङ्गदत्तः बिले प्रविशन्तं कम् अपश्यत्?  
(ग) सर्पः कान् अखादत्?



षष्ठः पाठः

## महात्मा गांधीः

महात्मनः गान्धिनः नाम को न जानाति । महापुरुषः अयं न केवलं भारतस्य हितम् अचिन्तयत् अपितु अखिलस्य विश्वस्य कल्याणार्थं प्रयत्नम् अपि अकरोत् । यद्यपि इदानीं सः भौतिक-देहेन अस्माकं मध्ये नास्ति तथापि यशः शरीरेण जनानां मानसमन्दिरे तिष्ठति । सत्यम्, अहिंसा, लोकसेवा च रत्नत्रयम् अस्य जीवनस्य प्रधानं उद्देश्यम् आसीत् । एतादृशैः श्रेष्ठैः गुणैः एव सः विश्ववन्दनीयः अभवत् ।

गान्धी-महोदयः 2 अक्तूबर 1869 तमे ईसाब्दे पोरबन्दर-नगरे अजायत् । तस्य पिता कर्मचन्दः गान्धी राजकोट रियासतस्य दीवानः आसीत् । तस्य माता पुतलीबाई सर्वगुणसम्पन्ना धर्मरता नारी आसीत् ।

गान्धी महोदयः बाल्याद् एव सदाचारम् अपालयत् । पूर्वम् अयं पोरबन्दरे शिक्षाम् अलभत् । ततः अयम् उच्च-शिक्षां प्राप्तुम् इंग्लैण्डदेशम् अगच्छत् । तत्र श्रीगान्धी कदापि न मदिराम् अपिबत् न च मांसम् अखादत् । विधि-शिक्षां प्राप्य अयं महानुभावः भारतं प्रत्यागच्छत् । ततः सः स्वदेशे मुम्बई-नगरे विधिवक्ता रूपेण कार्यम् अकरोत् । तथा च दक्षिण-अफ्रीका देशे सः भारतीयान् संगठितान् अकरोत् । तेषां जीवनस्तरम् उन्नतं कर्तुं प्रयत्नम् अकरोत् ।

भारतवर्षे अपि अयं महात्मा स्वतंत्रतायै भारतीयान् प्रेरितवान् । समये-समये सः 'असहयोग आंदोलनं, नमक-सत्याग्रहं, भारतं मुञ्च' च इति आह्वानम् अकरोत् । तस्य प्रयत्नेन 1947 तमे ईसाब्दे अगस्त मासस्य पञ्चदश तारिकायां भारतं स्वतन्त्रम् अभवत् ।

सः अछूत-उद्धारकः, ग्रामोद्योगस्य प्रेरणापुञ्जः, स्वदेशीयानां वस्तूनां प्रचारकः, राष्ट्रनायकः च आसीत् । धन्योऽयम् महापुरुषः यः जीवन-पर्यन्तम् मानवसेवा-व्रतम् आचरत् । अन्तेऽपि सः तदर्थम् एव 1948 तमे ईसाब्दे प्राणान् अत्यजत् ।

### शब्दार्थः

कल्याणार्थम् = कल्याण के लिए      धर्मरता = धर्म में लीन

विधिवक्ता = वकील

प्रेरितवान् = प्रेरित किया

आह्वानम् अकरोत् = बुलावा दिया।

अछूत-उद्धारकः = अछूतों का

उद्धार करने वाले

विधिशिक्षा = वकालत

मुञ्च = छोड़ो।

तारिकायाम् = तिथि में

प्रेरणा पुंजः = प्रेरणा देने वाले

विश्ववन्दनीयः = संसार के द्वारा पूजनीय

### अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो :-

(क) महात्मा गांधी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(ख) गांधी जी के जीवन का उद्देश्य क्या था?

(ग) गांधी जी ने कौन-कौन से आंदोलन आरम्भ किए?

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :-

(क) तस्य पिता .....रियासतस्य दीवानः आसीत्।

(ख) गांधी-महोदयः उच्चशिक्षां प्राप्तुं..... देशम् अगच्छत्।

(ग) गांधी-महोदयः विधिवक्ता-रूपेण..... अकरोत्।

३. समस्तपदों का विग्रह करो, समास का नाम भी लिखो-

कल्याणार्थम्। लोकसेवा। सर्वगुणसम्पन्ना। प्रेरणापुंजः। राष्ट्रनायकः।

४. संस्कृत में उत्तर लिखो -

(क) गांधी-महोदयस्य मातुः किम् नाम आसीत्?

(ख) भारतम् कदा स्वतंत्रम् अभवत्?

(ग) महात्मा-गांधी कदा प्राणान् अत्यजत्?



सप्तमः पाठः

## नीति-श्लोकाः

१. वरं पर्वत-दुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह ।  
न मूर्ख-जनसम्पर्कः सुरेन्द्र-भवनेष्वपि ॥
२. सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पल-कोमलम् ।  
आपत्सु च महाशैल-शिला-संघात-कर्कशम् ॥
३. एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्तं महीतलम् ।  
क्रियते भास्करेणैव परिस्फुरित-तेजसा ॥
४. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।  
नास्ति उद्यम-समो बन्धुः यं कृत्वा नावसीदति ॥
५. मालती कुसुमस्येव द्वे गतीह मनस्विनः ।  
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वने एव वा ॥
६. दुर्जनः परिहर्तव्यः विद्यायालंकृतोऽपि सन् ।  
मणिना भूषितः सर्पः, किमसौ न भयंकरः ॥
७. जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।  
नास्ति येषां यशः काये जरा-मरणजं भयम् ॥
८. परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।  
वर्जयेत् तादृशं मित्रं विपकुम्भं पयोमुखम् ॥
९. पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।  
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥
१०. अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम् ।  
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥



## शब्दार्थः

|                                    |                                   |
|------------------------------------|-----------------------------------|
| उदार चरितानाम् = विशाल हृदय वाले   | वसुधा = पृथ्वी                    |
| कुटुम्बकम् = परिवार                | विष कुम्भम् = जहर से भरा हुआ घड़ा |
| परोक्षे = पीछे                     | वरम् = श्रेष्ठ                    |
| वनचरैः = वनवासियों के साथ          | उत्पलकोमलम् = कमल के समान कोमल    |
| महाशैल = विशाल पर्वत               | कर्कशम् = कठोर                    |
| पादाक्रान्तम् = पैरों से दबाया हुआ | महीतलम् = भूमि                    |
| भास्करेण = सूर्य के द्वारा         | रिपुः = शत्रु                     |
| नावसीदति = दुःखी नहीं होता         | मनस्विनः = विद्वान की             |
| मूर्ध्नि = सिर पर                  | शीर्यते = नष्ट हो जाता है         |
| परिहर्तव्यः = त्याग देना चाहिए     | जयन्ति = विजयी होते हैं           |
| सुकृतिनः = पुण्यशाली               | रससिद्धाः = रसों के ज्ञाता        |
| कवीश्वराः = प्रसिद्ध कवि           | यशः काये = यश रूपी शरीर में       |
| जरामरणजम् = बुढ़ापे और मृत्यु का   | सुभाषितम् = अच्छा वचन             |

## अभ्यास

## १. हिन्दी में उत्तर लिखो :-

- (क) विपत्ति के समय महापुरुषों का मन कैसा हो जाता है ?
- (ख) मनस्वी मनुष्य के जीवन की कौन सी दो गतियां होती हैं ?
- (ग) कैसे मित्र का त्याग कर देना चाहिए ?

## २. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :-

- (क) आलस्यं हि ..... शरीरस्थो महान् रिपुः ।
- (ख) मणिना ..... सर्पः, किमसौ न भयंकरः ।
- (ग) मूढैः ..... रत्न-संज्ञा विधीयते ।
- (घ) अयं निजः परो वेति गणना---- ।

## ३. सन्धिच्छेद करो-

एकेनापि । पादाक्रान्तम् । गतीह । विद्ययाऽलंकृतोऽपि ।





## अष्टमः पाठः

### पत्रम्

प्रकाश- सदनम् २२७/१५,

चण्डीगढ़म्- १६००१५

दिनांक १५-४-२००३

प्रिय भ्रातः विवेक,

माध्यमिक-परीक्षायाः परिणामः अद्य घोषितः अस्ति। तं दृष्ट्वा अत्यन्तं हर्षम् अनुभवामि। त्वं प्रथम-स्तरे उत्तीर्णः, निजे च विद्यालये प्रथमं स्थानं प्राप्तः असि। साधु प्रिय, साधु ! दिष्ट्या वर्धसे।

प्रिय भ्रातः ! त्वम् अधुना उच्च-विद्यालये प्रवेक्ष्यसि। तत्र त्वम् अस्माद् अपि अधिकतरं साफल्यम् अधिगच्छेः इति इच्छामि। न तव कृते एतत् कठिनम् अस्ति। त्वं योग्यः असि, सर्वं कर्तुं पारयसि। यदि प्रारम्भाद् एव निजां दिनचर्यां नियमेन समयेन च पालयसि, तर्हि त्वं सदा शरीरेण चित्तेन बुद्ध्या च स्वस्थः तिष्ठसि।

प्रिय विवेक ! प्रातः सूर्योदयात् पूर्वम् एव उत्थाय, शरीरस्य शौचानि कृत्वा, भ्रमणाय बहिर् उपवनं गच्छ। तत्र तीव्रं चलनेन, धावनेन दीर्घ-श्वासैः, योगासनैः च व्यायामः करणीयः। ततः आगत्य अल्पाहारं कृत्वा समये विद्यालयं गच्छ। न कदापि तत्र विलम्बेन गच्छ, न च अपि अनुपस्थितः भव। विद्यालये अध्यापकैः पाठितान् सर्वान् विषयान् ध्यानेन आकर्णय। यत्र अपि पाठे, लेखे वा तव सन्देहः स्यात्, तं निवारयितुम्, अध्यापकं विनयेन पृच्छ।

विद्यालयात् प्रत्यागत्य मध्याह्ने भोजनं कुरु। यः सद्यः पक्वं पथ्यं च भोजनं यथासमयं प्रसादेन च खादति, ग्रासान् भृशं चर्वति, तस्य खादितम् अन्नं सुप्तु शीघ्रं च परिणमति। अजीर्णता, उदर-पीडा, शीर्ष-वेदना अन्यः वा कश्चिद् रोगः तस्य न भवति। भोजनानन्तरं पुनरपि दन्ताः मंजनेन जलेन च मार्जनीयाः, येन ते स्वच्छाः सुन्दराः स्वस्थाः च तिष्ठेयुः।

ग्रीष्मे क्षणं विश्रम्य, विद्यालये पठितान् पाठान् गृहे पुनः पठ। सर्वेषु विषयेषु

अध्यापकैः आदिष्टं लेखन-कार्यं कुरु। सायंकाले दुग्धं पीत्वा, गच्छ वयस्यैः सह क्रीडाक्षेत्रम्। तत्र पादकन्दुक-क्रीडां, हॉकी-क्रीडां, धावन-कूर्दनादिकं वा शारीरिकं व्यायामं कुरु। विशाले क्षेत्रे स्वच्छे वायौ वयस्यैः सह खेलनेन, व्यायामेन च शरीरं विकसति, चित्तं प्रसीदति, मस्तिष्कं च पुनः नवीभवति।

रात्रौ भोजनान्तरं माता-पितृभ्यां, स्वसृ-भ्रातृभ्यां, अन्यैः च सदस्यैः सह हास्य-विनोदान् आलप, समाचारपत्रं वा वाचय, आकाश-वाणीं वा आकर्णय। ततः पुनरपि पठन-लेखन-कार्यं करणीयम्। सर्वेषु पाठानां सारं प्रश्नोत्तररूपेण यदि लिखसि, तदा सर्वे पाठाः सरलतया कण्ठाग्राः भवन्ति, परीक्षा-दिनेषु च शीघ्रम् आवृत्ताः स्मृताः च भवन्ति। रात्रौ लेखन-कार्येण निद्रा अपि शयनसमयात् पूर्वं न बाधते। रात्रौ लेखनस्य अयम् अधिकः लाभः।

तात, इमां दिनचर्यां यदि चरिष्यसि तदा सफलताम् अधिगमिष्यसि, न अत्र सन्देहः। तव उत्तरम् उत्सुकतया प्रतिपालयिष्यामि।

सद्भावैः स्नेहेन च सहितः,

भवदीयः भ्राता

आलोकः

विवेकः कुमारः,

प्रेम-कुटीरम्, मन्दिर-वीथी,

नाभा द्वारम्,

संगरूर-नगरम् १४८००१

### शब्दार्थः

माध्यमिक = मिडल

स्तर = दर्जा, डिवाइज़न

साधु = शाबाश, खूब

दिष्ट्या वर्धसे = तुम्हें बधाई हो

पात्रम् = योग्य

उच्च-विद्यालये = हाई स्कूल में

प्रवेक्ष्यसि = (प्र √ विश्, लट्, म., ए.) भूशम् = खूब

तू दाखिल होगा

अधिगन्तुं पारयसि = (तू) प्राप्त कर सकता है

शौचानि = सफाईयाँ

सद्यः पक्वम् = ताज़ा पका हुआ

पथ्यम् = उचित, अनुकूल, हितकर

प्रसादेन = प्रसन्नता से

भूशम् = खूब

परिणमति = पच जाता है

दिनचर्या = रोज़ाना के काम  
(daily routine)  
सम्पादयसि = (तु)करता है

अजीर्णता = बदहज़्मी अपचन  
आवृत्ताः = दोहराए गए  
बाधते = सताती है।

### अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो—

- (क) शरीर को स्वस्थ रखने के कौन से उपाय इस पत्र में बताए गए हैं ?
- (ख) खुले मैदान में खेलने के क्या लाभ हैं ?
- (ग) रात को लिखाई का काम करने का क्या अधिक लाभ बताया गया है ?

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

अहं अत्यन्तं.....अनुभवामि।  
ध्रमणाय बहिर्.....गच्छ।  
दन्ताः जलेन मंजनेन.....।  
व्यायामेन.....विकसति।

३. यथानिर्दिष्ट लकार परिवर्तन करो—

- (क) त्वम् अधुना उच्च-विद्यालये प्रवेक्ष्यसि। (लट् में)
- (ख) त्वं सर्वं कर्तुं पारयसि। (लृट् में)
- (ग) त्वम् अध्यापकं विनयेन पृच्छ। (लृट् में)
- (घ) ते स्वस्थाः तिष्ठेयुः। (लोट् में)
- (ङ) सः समये विद्यालयं गच्छति। (विधिलिङ् में)

४. अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग करो—

यत्र, शीघ्रम्, सह, तत्र, एव

५. संस्कृत में उत्तर लिखो—

- (क) त्वं कस्मिन् स्तरे उत्तीर्णः ?
- (ख) दन्ताः केन मार्जनीयाः ?
- (ग) व्यायामेन शरीरं कौदृशं भवति ?



## साहसिकः वीरभद्रः

पूर्वस्यां दिशि मणिपुर-नामकः गहनैः वनैः हिंस्रैः च पशुभिः संकुलः प्रदेशः अस्ति। तत्र एकस्मिन् ग्रामे वीरभद्रः शीलभद्रः च परस्परं मित्र-भावम् उपगतौ अवसताम्। तौ प्रतिदिनं मृगयां क्रीडितुं, काष्ठानि च आहर्तुं वनात् वनम् अगच्छताम्। एकदा वनात् वनं भ्रमन्तौ तौ अतिदूरं निर्गतौ। तस्मिन् निर्जने प्रदेशे श्रमाकुलौ तौ एकस्य वृक्षस्य अधस्तात् विश्रान्तुम् उपविष्टौ।

अथ वीरभद्रः पिपासाकुलं शीलभद्रं तत्र परित्यज्य जलम् आनेतुम् इतस्ततः पर्यभ्रमत्। अत्रान्तरे एकः सिंहः कुतश्चित् उपागत्य सहसा एव शीलभद्रस्य उपरि तीक्ष्णैः नखरैः प्रहारम् अकरोत्। तस्मिन् संभ्रमे शीलभद्रः निजं बन्दूकम् अपि चालयितुं समर्थः न अभवत्। स उच्चैः चीत्कारम् अकरोत्।

तस्य चीत्कारं श्रुत्वा वीरभद्रः वेगेन तत्र आगतः। निज-मित्रं सिंहेन आक्रान्तं दृष्ट्वा स साहसम् आधाय तीक्ष्णेन परशुना सिंहस्य शिरसि कटिभागे च अनेकान् प्रहारान् अकरोत्। तस्य प्रबलैः प्रहारैः, जर्जरितः शरीरः सः सिंहः तत्रैव पञ्चत्वं गतः।

ततः वीरभद्रः भूमौ शयानं निःसंज्ञं शीलभद्रं पृष्ठेन अवहत्, तं च विंशति-किलोमीटर-दूर-स्थितं चिकित्सालयम् अनयत्। किञ्चित्कालान्तरं शीलभद्रः संज्ञां लब्धवान्। एवं वीरभद्रः निजेन अदम्येन साहसेन बलेन च स्व-मित्रस्य प्राण-रक्षाम् अकरोत्। तस्मिन् क्षणे सः निजं कष्टं श्रमं चापि न मनाक् अपि अगणयत्। मृत्यु-भयम् अपि तस्य न आसीत्।

निजाय अद्भुताय साहस-कर्मणे पञ्चदश-वर्षं देशीयः अयं वीरभद्रः राष्ट्रिय-पुरस्कारेण विभूषितः, सम्मानितः च अभवत्।

### शब्दार्थः

गहनैः वनैः = घने जंगलों से

मृगया = शिकार

आहर्तुम् = (आ/ह, तुमुन्) लाने के लिए

परशुना = कुल्हाड़े से

पञ्चत्वं गतः = मर गया

निः संज्ञम् = बेहोश (शीलभद्र को)

चिकित्सालयः = अस्पताल

संज्ञा लब्धवान् = होश को प्राप्त हुआ

न अगणयत् = नहीं गिना

आक्रान्तं = पकड़ा हुआ

तस्मिन् संध्रमे = उस घक्काहट में

आधाय = (आवधा, क्त्वा, ल्यप्)

धारण करके

### अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो-

(क) वीरभद्र तथा शीलभद्र वन में किस लिए जाते थे?

(ख) जब शीलभद्र पर सिंह ने आक्रमण किया, तब वीरभद्र कहाँ था?

(ग) सिंह को मारने के बाद वीरभद्र ने क्या किया?

(घ) वीरभद्र को उसके साहस का क्या फल मिला?

२. निम्नलिखित वाक्यों में, कोष्ठकों में दिए गए शब्दों अथवा धातुओं की उपयुक्त रचना करके, रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:-

(क) तत्र एकस्मिन् ग्रामे वीरभद्रः शीलभद्रः च.....(वस्)।

(ख) तौ एकस्य.....(वृक्ष) अधस्तात् उपविष्टौ।

(ग) तस्य चीत्कारं.....(श्रु) वीरभद्रः वेगेन तत्र आगतः।

(घ) ततः वीरभद्रः शीलभद्रं.....(पृष्ठ) अवहत्।

३. निम्नलिखित क्रियारूपों में यथानिर्दिष्ट वचन परिवर्तन करो:

अवसताम् (एक वचन में) अगच्छताम् (बहुवचन में)। अनयत् (उत्तम पुरुष में)। अभवत् (मध्यम पुरुष में)। अवहत् (द्विवचन में)। अगणयत्। (बहुवचन में)

४. समस्त पदों का विग्रह करो तथा समास का नाम बताओ-

पिपासाकुलम्, जर्जरितशरीरः, मृत्युभयम्, श्रमाकुलौ।

५. संस्कृत में उत्तर लिखो:-

(क) मणिपुर-प्रदेशः कुत्र अस्ति?

(ख) वीरभद्रः शीलभद्रः च परस्परं कथम् अवसताम्?

(ग) वीरभद्रः केन पुरस्कारेण सम्मानितः?





दशमः पाठः

## चित्र-श्लोकाः

१. तातेन कथितं, पुत्र, लेखमेकं, लिखाधुना।  
न तेन लिखितो लेखः, पितुराज्ञा न लंघिता ॥
२. कं संजघान श्रीकृष्णः ? का शीतल-वाहिनी गंगा।  
के दार-पोषण-रताः ? कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ? ॥
३. सीमन्तिनीषु का शांता ? राजाऽभूत् को गुणोत्तमः ॥  
विद्वद्भिः का सदा वंद्या ? अत्रैवोक्तं न बुध्यते।
४. कस्तूरी जायते कस्मात् ? को हन्ति करिणां कुलम् ॥  
युधि किं कुरुते भीरुः ? मृगात् सिंहः पलायते ॥

### शब्दार्थः

|                                             |                                            |
|---------------------------------------------|--------------------------------------------|
| जघान, संजघान = मारा                         | केदार-पोषणः रताः = खेत की देखभाल करने वाले |
| दार-पोषण-रताः = पत्नी का भरण पोषण करने वाले | सीमन्तिनीषु = स्त्रियों में                |
| विद्वद्भिः = विद्वानों से                   | भीरुः = डरपोक                              |
| वंद्या = वन्दनीय                            |                                            |

### अभ्यास

१. सन्धिच्छेद करो—  
लिखाधुना। लेखमेकं। राजाऽभूत्। तत्रैव। को हन्ति।
२. यथानिर्दिष्ट वचन परिवर्तन करो—  
त्वं लेखं लिख (बहुवचन में)। का शान्ता (द्विवचन में)। केदार-पोषण-रताः (एकवचन में)।
३. संस्कृत में उत्तर लिखो:-  
(क) कं संजघान कृष्णः ?



(ख) कस्तूरी जायते कस्मात् ?

(ग) युधि किं कुरुते धीरुः ?

### चित्रश्लोकों के उत्तर

१. तीसरे पाद में 'न' और 'तेन' इन दो शब्दों को एक (नतेन=झुके हुए ने) बना देने से चौथा पाद संगत हो जाता है ।
२. चारों पादों में चार प्रश्न हैं । प्रत्येक पाद के पहले दो शब्दों को इस प्रकार मिला देने से उस-उस पाद के प्रश्न का उत्तर मिल जाता है— कंसं जघान, काशी-तल-वाहिनी, केदार-पोषण-रताः, कंबलवन्तम् ।
३. पहले तीन पादों में तीन प्रश्न हैं । प्रत्येक पाद के पहले और अन्तिम अक्षर को मिला कर उत्तर बन जाता है— सीता, राम, विद्या ।
४. पहले तीन पादों के तीन प्रश्नों के उत्तर चौथे पाद के क्रमशः एक-एक शब्द में हैं ।



## एकादशः पाठः

### चित्रकर्णः उष्ट्रः

कस्मिंश्चित् वन-प्रदेशे मदोत्कटः नामकः सिंहः आसीत्। तस्य काकः, व्याघ्रः शृगालः च इति त्रयः सेवकाः आसन्। अथ भ्रमन्तः ते कमपि उष्ट्रम् अपश्यन् — तं च अपृच्छन्—“कुतः त्वम् आगतः ?” सः अकथयत्—अहं सार्थात् भ्रष्टः अत्र प्राप्तः अस्मि।” ततः ते तं सिंहस्य समीपम् अनयन्। सिंहः तस्मै अभय-वचनं दत्वा तस्य ‘चित्रकर्ण’ इति नाम अकरोत्, तं च सेवक-वर्गे अस्थापयत्।

अथ कदाचित् सिंहस्य शरीर-वैकल्यात् आहारम् अलभमानाः ते व्याघ्राः अभवन्। ततः ते अचिन्तयन्—“चित्रकर्णम् एव यथा स्वामी भोजनार्थं हन्ति तथा कर्तव्यम्। किम् अनेन कण्टक-भक्षकेण ?” व्याघ्रः अवदत्—“स्वामिना अभय-वचनं दत्वा असौ अनुगृहीतः। तत् कथम् एवं सम्भवति ?” काकः अवदत्—“अस्मिन् समये परिक्षीणः स्वामी पापम् अपि करिष्यति।” एवं विचिन्त्य ते सर्वे सिंहान्तिकम् अगच्छन्।

सिंहः अपृच्छत्—“आहारार्थं किञ्चित् प्राप्तम् ?” ते प्रत्यवदन्—“यत्नात् अपि न प्राप्तं किञ्चित् आहारः।” सिंहः आह—“कः अधुना जीवनोपायः ?” काकः अवदत्—“देव, स्वाधीनस्य आहारस्य परित्यागात् सर्वनाशः अयम् उपस्थितः।” सिंहः अपृच्छत्—“कः अत्र आहारः स्वाधीनः ?” काकः कर्णे अकथयत्—“चित्रकर्णः” इति। सिंहः भूमिं स्मृष्ट्वा कर्णौ अस्फुशत् अवदत् च—“अभय-वचनं दत्वा धृतः अयम् अस्माभिः। तत् कथम् एवं सम्भवति। यतः हि सर्वेषु दानेषु अभय-दानं महादानम् अस्ति।” काकः अवदत्—“स्वामी तं न हन्यात्। वयम् एव तथा कुर्मः यथा असौ स्व-देहम् अर्पयति।” सिंहः तत् श्रुत्वा तूष्णीम् अभवत्।

ततः काकः लब्धावकाशः कृतं कृत्वा सर्वान् आदाय सिंहस्य समीपे अगच्छत्। अथ काकः अकथयत्—“देव, यत्नात् अपि आहारः न प्राप्तः। अनाहारेण व्याकुलः क्षीणः च स्वामी इदानीं मदीयं मांसं स्वीकरोतु।” सिंहः अवदत्—“भद्र, वरं प्राण-परित्यागः, न पुनः ईदृशो कर्मणि प्रवृत्तिः।” शृगालः अपि आह—“देव,

मम मांसम् अङ्गीकरोतु भवान् ।" ततः सिंहः आह - "मा मा एवम् ।" अथ व्याघ्रः  
अब्रवीत् - "मम देहेन जीवतु स्वामी ।" सिंहः अवदत् - "न कदाचित् एवम्  
उचितम् ।" अथ चित्रकर्णः अपि जात-विश्वासः अवदत् - "मम शरीरम् अङ्गीकरोतु  
स्वामी ।" ततः तस्य वचनात् तत्क्षणम् एव व्याघ्रः तं व्यापादयत्, सर्वे च मिलित्वा  
तम् अभक्षयन् ।

### शब्दार्थः

सार्थात् भ्रष्टः = झुण्ड से बिछुड़ा हुआ      हन्यात् = (√हन, विधिलिङ् प्र. ए.) मारे  
अस्थापयत् = (√स्था, णिच्, लङ्      लब्धावकाशः = वह जिसे मौका मिल गया  
प्र. ए.) रख लिया      है, मौका पाकर  
शरीर वैकल्यात् = शरीर की दुर्बलता      कूटम् = षड्यन्त्र, कपट-पूर्ण चाल  
के कारण      सम्भवति = (सम् √भू लट्, प्र. ए.) हो  
जात-विश्वासः = वह जिसे विश्वास      सकता है ।  
हो गया है, विश्वस्त      परिक्षाणः = कमज़ोर  
होकर  
अभय वचनं दत्वा = प्राण दान देकर

### अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो :-  
(क) सिंह के तीन सेवक कौन थे ?  
(ख) सिंह ने कान छूकर क्या कहा ?  
(ग) चित्रकर्ण को मरवाने का षड्यन्त्र किसने रचा ?  
(घ) इस कथा से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?
- सामने दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरो :-  
(क) किम्..... कण्टक - भक्षकेण ? (अनया, अनेन, एतया)  
(ख) ..... दानेषु अभय-दानं महादानम् ।  
(सर्वासु, सर्वेषु, सर्वेषाम्)  
(ग) यत्नात् अपि न प्राप्तं किञ्चित्..... (आहारः, भोजनम्)
- निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग अलग करो :-  
परिक्षीणः । प्रत्यवदत् । परित्यागः ।

४. निम्नलिखित शब्दों में से धातु और प्रत्यय पृथक् करो:-

(जैसे— कृत्वा = √कृ, क्त्वा > त्वा)

श्रुत्वा। दत्त्वा। स्पृष्ट्वा।

५. संस्कृत में उत्तर लिखो:-

(क) वनप्रदेशे: कः प्रतिवसति स्म?

(ख) सर्वेषु दानेषु महादानं किम् अस्ति?

(ग) उष्ट्रस्य किं नाम आसीत्?



## रुप्यकस्य आत्मकथा

महापुरुषाः एव आत्म-कथां कथयन्ति लिखन्ति वा । अहं तु न महापुरुषः, तथापि महापुरुषाणां सुचरितम् अवश्यम् अनुसरणीयम् इति विचार्य अहम् अद्य आत्मचरितं संक्षेपेण कथयामि । युष्माकं स्नेह-पूर्णः आग्रहः अपि माम् अस्मिन् कर्मणि नियोजयति । महापुरुषाणां जीवन-कथा प्रेरणा-प्रदा भवति । मम जीवन-कथा तु तादृशी न अस्ति । तथापि इयम् अनेकैः मधुरैः कटुभिः च अनुभवैः पूर्णा अस्ति । अतः इयं मम कथा युष्मभ्यं रोचिष्यते इति मम दृढः विश्वासः अस्ति ।

मम जन्म कलकत्ता नगरे टंक-शालायाम् अभवत् । यदा मम जन्म अभवत्, तदा अपूर्वा मम कान्तिः आसीत् इति वृद्धाः कथयन्ति । मम शरीरं गोलाकारम् अस्ति इति यूयं पश्यथ, परन्तु किं जानीथ यूयं मम अस्य देहस्य पार्श्वभागयोः किं लिखितम् इति ? मम देहस्य एकस्मिन् पार्श्वे चतुः सिंह-मूर्तिः अङ्किता अस्ति । मूर्तिः इयं मौर्य-कालिकस्य स्तम्भस्य उपरि प्रतिष्ठितायाः चतुःसिंह-मूर्तेः प्रतिरूप-भूता वर्तते । मम देहस्य अस्मिन् पार्श्वे भारतम् इति अपि लिखितम् अस्ति । अन्यस्मिन् पार्श्वे मम जन्म-कालः लिखितः अस्ति ।

मम जीवन-कथा प्रभूतानां यात्राणां कथा अस्ति । अहं निज जीवने बहूनां प्रदेशाणां नगराणां ग्रामाणां च यात्राम् अकरवम् । मम प्रथमा यात्रा स्व-नगरे एक बैक-भवनं प्रति आसीत् । तत्र अहं कतिपयैः बन्धुभिः सह प्राविशम् । तस्मिन् बैक-भवने अहं न चिरम् अवसम् । कश्चित् राजसेवकः मां तस्मात् स्थानात् स्वकीयं गृहम् अनयत् । अन्यस्मिन् दिने सः मां कस्यचित् पण्य-पदार्थस्य मूल्य रूपेण कस्मैचित् आपणिकाय अयच्छत् । सः आपणिकः कृपणः आसीत् । सः मां स्व-गृहे एकान्त-प्रदेशे मञ्जूपायां न्यक्षिपत् । प्रतिदिनं प्रातः तां मञ्जूषाम् उदघाट्य स मां सस्पृहम् अपश्यत्, पुनः च सः मां तस्याम् एवं मञ्जूपायां न्यक्षिपत् । एवम् अहं तत्र कतिपयैः बन्धुभिः सहितः बहूनि दिनानि अवसम् । तत्र निवसतः मम अनेके बन्धवः न जाने कुत्र गताः, अनेके च अपरिचिताः नवाः बन्धवः समागताः । एकदा सः आपणिकः माम् आदाय कस्यचित् मिष्टान्तकारस्य आपणम् अगच्छत् । तत्र स



मधुराणि मोदकानि अखादत् । तेषां मूल्य रूपेण सः मां तस्मै मिष्टान्नकाराय अयच्छत् ।

निशारम्भे सः मिष्टान्नकारः मां चर्म-पुटे निक्षिप्य आपणात् स्व- भवनम् अनयत् । तत्र अहं कतिचित् दिनानि सुखेन अवसम् । ततः सः एकस्मिन् दिने नगरान्तरं गतः । तत्र माम् आम्र-फलानां मूल्य-रूपेण कस्मैचित् फलापणिकाय अयच्छत् । सः माम् अन्यान् च मम बन्धून् बैंक-भवनम् अनयत्, तत्र च सर्वान् अस्मान् तत्कोषाध्यक्षाय समर्पितवान् । अन्यस्मिन् दिने कश्चित् व्यापारी मां बैंकभवनात् आदाय दिल्ली नगरम् अगच्छत् । तत्र सः कुत्रचित् रत्नापणे भूषणानि अक्रीणात्, मां च मम अन्यैः बहुभिः बन्धुभिः सह रत्नापणिकाय अयच्छत् । तस्मात् रत्नापणिकात् अहं कस्यचित् सुवर्णकारस्य हस्तम् अगच्छम् । सः सुवर्णकारः मां कस्मैचित् ताम्बूलिकाय प्रदत्तवान् । तस्य गृहात् कश्चित् चौरः माम् अहरत् । तस्य हस्तात् अहं कस्यचित् कितवस्य हस्तं ततः च कस्यचित् राज-पुरुषस्य हस्तं, ततः च पुनः कस्यचित् आपणिकस्य हस्तं अगच्छम् ।

एवं विविधानां लोकानां हस्तात् हस्तं गच्छन्, नगरात्, नगरान्तरं ग्रामात् च ग्रामान्तरं भ्राम्यन् अहं कदाचित् राज-गृहे, कदाचित्, बैंक-भवने, कदाचित् रत्नापणे, कदाचित् धनिक-गेहे, कदाचित्, दरिद्र-कुटीरे, कदाचित् देवालये कदाचित् च चौर-गृहे निजम् आवासम् अकरवम् । सुदूरं चिरकालं च यावत् भ्रान्त्या अद्य अहम् अतिमात्रं श्रान्तिम् अनुभवामि, विश्रान्तिं च कर्तुम् इच्छामि ।

### शब्दार्थः

|                                                                                                                                               |                                                                                                                                                                                                                                                                     |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| नियोजयति = (नि युज्, प्रेरणार्थक<br>णिच्, लट्, प्र. ए.) नियुक्त<br>करता है, लगाता है ।                                                        | प्रभूतानाम् = अनेकों (यात्राओं)<br>आपणिकः = दुकानदार<br>मञ्जूषायाम् = सन्दूकची में<br>सस्यूहम् = (क्रि. वि.) लालच भाव से<br>ताम्बूलिकः = तंबोली, पान बेचने वाला<br>मिष्टान्नकारः = हलवाई<br>चर्म-पुटे = चमड़े की थैली में<br>(Leather-bag)<br>विश्रान्तिः = विश्राम |
| टंक-शालायाम् = टंकसाल में<br>न्यक्षिपत् = (निर्क्षिप्, लङ्, प्र. ए.)<br>रख दिया<br>कितवः = जुआरी<br>कोषाध्यक्षः = खजानची<br>श्रान्तिः = थकावट |                                                                                                                                                                                                                                                                     |

## अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो
  - (क) रुपये के दोनों ओर क्या अंकित है ?
  - (ख) दुकानदार ने रुपये को कहाँ रखा ?
  - (ग) रुपये की प्रथम यात्रा कहाँ से शुरु हुई ?
२. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—
  - (क) महापुरुषाणां.....अवश्यम् अनुसरणीयम् ।
  - (ख) मम शरीरं गोलाकारम् अस्ति इति यूयं .....
  - (ग) तत्र सः.....मोदकानि अखादत् ।
  - (घ) तस्य गृहात् कश्चित्.....माम् अहरत् ।
  - (ङ) अद्य अहं विश्रान्तिं.....इच्छामि ।
३. रेखंकित शब्दों में यथानिर्दिष्ट लकार-परिवर्तन करो-
  - (क) अहम् आत्म-चरितं कथयामि । (लोट् लकार में)
  - (ख) स मां मन्जूषायां न्यक्षिपत् । (लट् में)
४. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—
  - (क) सः तत्र बन्धूनां सह प्राविशत् ।
  - (ख) स मां कमपि आपणिकम् अयच्छत् ।
  - (ग) तत्र सः मधुरान् मोदकानि अखादत् ।
५. संस्कृत में उत्तर लिखो-
  - (क) रुपयकस्य जन्म कुत्र अभवत् ?
  - (ख) रुपयकस्य शरीरं कीदृशम् अस्ति ?
  - (ग) अद्य रुपयकम् किं इच्छति ?



त्रयोदशः पाठः

## सुभाषितानि

अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरज-राजितम् ।  
रमते न मरालस्य मानसं मानसं विना ॥

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।  
कामये दुःख तप्तानां प्राणिनाम् आर्ति-नाशनम् ॥२॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।  
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख-भाग् भवेत् ॥३॥

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते, तव भारति ।  
व्ययतो वर्द्धमायाति, क्षयमायाति संचयात् ॥ ४ ॥

दिवा पश्यति नोलूकः, काको नक्तं न पश्यति ।  
विद्या-विहीनो मूढस्तु, दिवा नक्तं न पश्यति ॥ ५ ॥

परस्परं विवादे हि वयं पञ्च, शतं च ते ।  
अन्यैः सह विवादे तु, वयं पञ्चोत्तरं शतम् ॥ ६ ॥

सुखार्थी चेत् त्यजेत् विद्यां, विद्यार्थी च त्यजेत् सुखम् ।  
सुखार्थिनः कुतो विद्या? कुतो विद्यार्थिनः सुखम्? ७ ॥

जल-बिन्दु-निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।  
सः हेतुः सर्व-विद्यानां, धर्मस्य धनस्य च ॥ ८ ॥

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत, पूर्वाहणे चापराहिणकम् ।  
न हि प्रतीक्षते मृत्युः, कृतमस्य न वा कृतम् ॥ ९ ॥

सत्काव्य-भूषणा वाणी, रजनी चन्द्र-भूषणा ।  
सुशील- भूषणा नारी, लक्ष्मीः विनय-भूषणा ॥ १० ॥

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः,  
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।  
धाराधरो वर्षति नात्म-हेतोः,  
परोपकराय सतां विभूतयः ॥ ११ ॥

श्रोत्रं श्रुतेनैव, न कुण्डलेन,  
दानेन पाणिः, न तु कंकणेन ।  
विभाति कायः खलु सज्जनानां  
परोपकारैः न तु चन्दनेन ॥ १२ ॥

### शब्दार्थः

|                                     |                                             |
|-------------------------------------|---------------------------------------------|
| लघुचेतसाम् = छोटे दिल वालों का      | परोक्षे = आँखों से परे (प्रत्यक्ष का उल्टा) |
| वसुधा = पृथ्वी                      | कुटुम्बकम् = परिवार                         |
| विषकुम्भम् = जहर के घड़े को         | नीरज-राजितम् = कमल फूलों से शोभित           |
| उलूकः = उल्लू                       | क्रमशः = क्रम से, धीरे-धीरे                 |
| मरालस्य = हंस का                    | पूर्वाहणे = दिन के पूर्व भाग में            |
| अपुनर्भवम् = मोक्ष को               | अम्भः = पानी                                |
| आर्ति = पीड़ा                       | धाराधरः = बादल                              |
| निरामयाः = (निर्+आमय) नीरोग         | श्रोत्रम् = कान                             |
| प्रत्यक्षे = सामने (आँखों के सामने) | श्रुतेन = शास्त्र-ज्ञान से                  |
| पाणिः = हाथ                         |                                             |

### अभ्यास

१. इस पाठ में से तीन श्लोक कण्ठस्थ करो
२. निम्नलिखित में सन्धिच्छेद करो-  
पञ्चोत्तरम्। यद्यपि। परोपकारः। वसुधैव।
३. निम्नलिखित वाक्यों में कोष्ठकों में लिखे शब्दों में से शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो  
(क) सर्वे भद्राणि .....। (गच्छन्तु, भवन्तु, पश्यन्तु)  
(ख) सुखार्थिनः कुतो .....। (विद्या, दुःखम्, सुखम्)  
(ग) कामये ..... आर्ति-नाशनम्।  
(घ) श्रोत्रं ..... एव न कुण्डलेन।  
(कंकणेन, श्रुतेन, चन्दनेन)
४. संस्कृत में उत्तर लिखो :—  
(क) दिवा कः न पश्यति?  
(ख) कायः केन विभाति?  
(ग) विद्यार्थी किं त्यजेत्?





## चतुर्दशः पाठः श्री गुरु नानक देवः

श्री गुरु-नानकदेवः महान् धार्मिक-नेता, समाज-सुधारकः च आसीत् । स सिक्ख धर्मस्य प्रवर्तकः आसीत् । सिक्खानां दशसु गुरुषु स आद्यः गुरुः वर्तते । स पश्चिमपंजाब-प्रदेशे तलवण्डी ग्रामे 1469-तमे ईसाब्दे मेहता-कालूरामस्य गृहे अजायत् । तस्य माता तृप्तादेवी आसीत् । श्रीनानकः बाल्यात् एव सत्यपरायणः प्रभुभक्तः परोपकार-निरतः प्रतिभावान् च आसीत् । विद्यार्जनाय गुरु-सकाशं प्रेषितः सः पट्टी नाम्नीं वाणीम् उच्चार्य वर्ण-मालायाः आध्यात्मिकीं व्याख्याम् अकरोत् । तत्कृताम् अपूर्वां व्याख्यां श्रुत्वा तस्य अध्यापकः अपि आश्चर्य-चकितः अभवत् ।

बाल्ये श्री नानकः पित्रा व्यापार-कर्मणि, ततः च पशुचारण-कर्मणि नियुक्तः, परं तस्य मनः तत्र न अरमत्, तस्य हि मनः प्रभु-भक्ति-लीनम् अवर्तत् । यदा सः नवदशवर्ष-देशीयः अभवत् तदा तस्य विवाहः श्रीमूलराजस्य सुपुत्र्या सुलक्षणादेव्या सह संजातः । तस्य श्रीचन्द्रः, लक्ष्मीचन्द्रः च इति द्वौ पुत्रौ जातौ । तत्त्वज्ञान-प्राप्तये विविधानि स्थानानि भ्रान्त्वा अन्ते स कृषक-वृत्तिम् उपजीवन् गृहस्थ-धर्मम् अपालयत् । गृहस्थः अपि श्रीनानकः जले कमलपत्रम् इव निर्लिप्तं जीवनम् अनयत् ।

श्री नानकः मानवधर्मस्य उपासकः आसीत् । विविधेषु वर्ण-जात्यादि भेदेषु तस्य विश्वासः न आसीत् । एकेन एव विश्वसृजा ईश्वरेण सृष्टाः सर्वे अपि मानवाः समानाः सन्ति इति तस्य दृढ आस्था आसीत् । मानव-प्रेम तस्य धार्मिक-विश्वासस्य मूलाधारः आसीत् । मानवेषु परस्परं भ्रातृ भावं वर्धयितुं स 'लंगर' इति नाम्ना प्रसिद्धस्य सामूहिक-भोजनस्य अपूर्वा परम्परां प्रवर्तितवान् ।

श्रीनानकदेवः न केवलं भारतवर्षस्य, प्रत्युत् देशान्तराणाम् अपि सुदीर्घां यात्राम् अकरोत् । सः सर्वत्र मानव-प्रेम्णः, सर्व-धर्म-समतायाः च प्रचारम् अकरोत् । मक्का-तीर्थे सः ईश्वरस्य सर्व-व्यापकतां प्रदर्श्य तत्रत्यान् लोकान् एकेश्वर-भक्तिम् उपादिशत् ।

श्रीलहना-नामकं स्व-प्रिय-शिष्यं श्रीअंगद-नाम्ना गुरु-पदे स्थापयित्वा श्री

गुरुनानकः 1539 तमे ईसाब्दे ज्योतिर्मयताम् अगच्छत्। श्री गुरु ग्रन्थे संकलिताः तस्य उपदेशाः मानव-प्रेम्णाः, परोपकारस्य, परिश्रम-प्रवृत्तेः, सदाचारस्य, एकेश्वर-भक्तेः, प्रभुनाम-जापस्य, गुरु-श्रद्धायाः च महत्त्वं प्रख्यापयन्ति।

### शब्दार्थः

|                                                             |                                                                       |
|-------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------|
| अजायत् = ( $\sqrt{\text{जन्}}$ लङ् प्र. एक.)<br>उत्पन्न हुआ | सृष्टा = ( $\sqrt{\text{सृज्}}$ क्त) बनाए गए<br>आस्था = विश्वास, यकीन |
| विद्यार्जनाय = विद्या प्राप्त करने के लिए                   | प्रवर्तितवान् = चलाया, प्रारम्भ किया                                  |
| निर्लिप्तम् = आसक्ति-रहित (जीवन)                            | सुदीर्घाम् = बहुत लम्बी (यात्रा) को                                   |
| न अरमत् = ( $\sqrt{\text{रम्}}$ लङ् प्र. ए.)<br>नहीं लगा।   | ज्योतिर्मयताम् = ज्योतिर्मय स्वरूप को,<br>प्रभु में लीन हो जाने       |
| उपादिशत् = उपदेश दिया                                       | की स्थिति (मृत्यु) को                                                 |
| अनयत् = ( $\sqrt{\text{नी}}$ लङ् प्र. ए.) बिताया            | प्रख्यापयन्ति = बताते हैं, उजागर करते                                 |
| विश्वसृजा = सृष्टिकर्ता (प्रभु) द्वारा                      | हैं                                                                   |

### अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो
  - श्री गुरु नानकदेव जी का जन्म कहाँ हुआ?
  - गुरु नानकदेव जी के मुख्य उपदेश क्या थे?
  - मनुष्यों में परस्पर भ्रातृभाव बढ़ाने के लिए गुरु नानकदेव जी ने कौन सी अनोखी प्रथा चलाई।
- निम्नलिखित कोष्ठकों में दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति-वचन लगाकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो—
  - श्रीनानकः ..... (बाल्य) एव सत्य-परायणः आसीत्।
  - सः मानव-प्रेम्णाः ..... (प्रचार) अकरोत्।
  - सः लोकान् ..... (एकेश्वर-भक्ति) उपादिशत्।

३. अव्ययों को संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करो-  
अपि, यदा, इव, च, तदा।
४. सन्धिच्छेद करो-  
विद्यार्जन। परोपकार। मूलाधार। ऐकेश्वर। उपादिशत्। सदाचार।
५. संस्कृत में उत्तर लिखो—  
(क) गुरु नानकस्य जन्म कदा अभवत् ?  
(ख) श्री गुरु नानकस्य मातुः नाम किम् आसीत् ?  
(ग) श्री नानकः कस्य धर्मस्य उपासकः आसीत् ?



## पंचदशः पाठः भीष्म-प्रतिज्ञा

पुरा हस्तिनापुरे शांतनुः नाम नृपतिः अभवत्। गंगा शान्तनोः भार्या आसीत्। गंगायाः देवव्रतः नाम सुतोऽभवत्। सः शूरः उदारश्चासीत्। सर्वत्र तस्य शौर्यस्य ख्यातिः प्रासरत्।

एकदा शांतनुः यमुनायाः तीरम् अगच्छत्। तत्र सः कस्यचित् धीवरस्य रूपवतीं कन्यां सत्यवतीम् अपश्यत्। तस्याः लावण्येन नृपतिः मोहितोऽभवत्। तस्याः पितरम् उपगम्य नृपतिः अकथयत्। भो धीवरः! स्वकीयं रूपवतीं दुहितरं मह्यं विवाहे यच्छ"। धीवरः प्रत्यवदत्-"भो नृपते! अहं सत्यवतीं तुभ्यं दास्यामि, यदि त्वं स्वं राज्यं तस्याः सन्ततये दास्यसि।" शांतनुः अकथयत्-"तदहं न वदिष्यामि। यतः राज्ये देवव्रतस्य अधिकारोऽस्ति।" नृपतिः नैराश्येन गृहम् अगच्छत्।

यदा देवव्रतः वृत्तान्तम् अवागच्छत्, तदा सः धीवरम् उपगम्य अकथयत्-भो धीवर! यमुनायाः अग्रे ममैषा प्रतिज्ञा अस्ति-"अहं कदापि राज्यं ग्रहणं न करिष्यामि। अपि च, अहम् आजीवनं ब्रह्मचर्येण स्थास्यामि। येन तव दुहितुः संततेः एव राज्ये अधिकारः स्यात्।" देवव्रतस्य प्रतिज्ञां श्रुत्वा धीवरः सत्यवतीं नृपतये अयच्छत्।

ततः प्रभृति देवदत्तस्य अभिधानं 'भीष्मः' इति अभवत्। तदा शांतनुः भीष्माय एतं वरमयच्छत्-"मृत्युः सदा तव वशे स्यात्।" भीष्म प्रतिज्ञाम् अपालयत् स्वेच्छया च प्राणान् अत्यजत्।

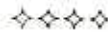
### शब्दार्थः

भार्या = पत्नी  
ख्याति = यश  
संततिः = सन्तान  
रूपवती = सुन्दर  
दुहितृः = पुत्री  
अधिकार = हक  
लावण्यम् = सुन्दरता

आजीवनम् = जीवन भर  
वृत्तान्तम् = घटना को  
अभिधानम् = नाम  
नैराश्यम् = निराशा  
शौर्यम् = बहादुरी  
प्रभृति = लेकर  
स्वेच्छया = अपनी इच्छा से

### अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो-
  - (क) देवव्रत किसका पुत्र था ?
  - (ख) धीवर ने राजा से सत्यवती के साथ विवाह के लिए क्या शर्त रखी ?
  - (ग) देवव्रत ने क्या प्रतिज्ञा की ?
२. सन्धि विच्छेद करो-  
मोहितोऽभवत्, ममैषा, प्रत्यवदत्, वरमयच्छत्।
३. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—
  - (क) गंगा-----भार्या आसीत्।
  - (ख) गंगायाः-----नाम सुतोऽभवत्।
  - (ग) धीवरः-----नृपतये अयच्छत्।
  - (घ) देवव्रतस्य अभिधानं-----इति अभवत्।
४. संस्कृत में उत्तर लिखो
  - (क) पुरा हस्तिनापुरे कः नृपतिः अभवत् ?
  - (ख) शांतनुः यमुनायाः तीरे किं अपश्यत् ?
  - (ग) शांतनुः भीष्माय किं वरं अयच्छत् ?



षोडशः पाठः

## हितोपदेशः

१. काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।  
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥
२. विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।  
पात्रत्वाद् धनम् आप्नोति धनाद् धर्मः ततः सुखम् ॥
३. स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ।  
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ॥
४. वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतानि अपि ।  
एकः चन्द्रः तमो हन्ति न च तारागणा अपि ॥
५. कीटोऽपि सुमनः संगेद् आरोहति सतां शिरः ।  
अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः ॥
६. आपत्काले तु सम्प्राप्ते, यन्मित्रं मित्रमेव तत् ।  
वृद्धिकाले तु सम्प्राप्ते दुर्जनोऽपि सुहृद् भवेत् ॥
७. मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।  
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः ॥
८. षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिम् इच्छता ।  
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधं आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥
९. अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका ।  
तृणैः गुणत्वं आपन्नैः बध्यन्ते मत्तदन्तिनः ॥
१०. दानं भोगो नाशः तिस्रः गतयो भवन्ति वित्तस्य ।  
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥



### शब्दार्थः

|                           |                                |
|---------------------------|--------------------------------|
| धूमताम् = विद्वानों का    | कलहेन = झगड़े से               |
| पात्रताम् = योग्यता       | आप्नोति = प्राप्त करता है      |
| परिवर्तिनि = परिवर्तनशील  | तमः = अन्धकार को               |
| कीटः = कीड़ा              | सुमनः = फूल                    |
| आरोहति = चढ़ता है         | सताम् = सज्जनों के             |
| अश्मा = पत्थर             | परदारेषु = परायी स्त्रियों में |
| लोष्ठवत् = मिट्टी के समान | पण्डितः = विद्वान्             |
| हातव्या = छोड़ देना चाहिए | भूतिम् = ऐश्वर्य               |
| तन्द्रा = आलस्य, थकान     | दीर्घसूत्रता = देर से काम करना |
| संहतिः = एकता             | आपन्नैः = युक्त                |
| वित्तस्य = धन की          | भुङ्क्ते = भोगता है ।          |

### अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो-
  - विद्वानों का समय कैसे बीतता है ?
  - सच्चा मित्र कौन होता है ?
  - मनुष्यों को कौन से दोष छोड़ देने चाहिए ?
  - धन की कितनी गतियाँ होती हैं ।
- सन्धि करो :
 

कालः + गच्छति, कीटः + अपि, गतयः + भवन्ति  
यः + न, तमः + हन्ति
- रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-
  - एकः चन्द्रः ..... हन्ति
  - विद्या ददाति .....
  - विनयाद् याति .....
  - ..... गतयो भवन्ति वित्तस्य ।



सप्तदशः पाठः

## सूर्य-परिवारः

प्रातः सूर्यः पूर्वे दिग्विभागे उदेति, सायं च पश्चिमे अस्तमेति, इति प्रति-  
दिनं पश्यामः। तत् किं सूर्यः पूर्वात् पश्चिमं प्रति गच्छति ? न हि, तत् तथा  
न। सूर्यः स्वस्थाने स्थितः निजे अक्ष-बिन्दौ भ्रमति, अस्माकं पृथिवी तं परितः  
परिभ्रमति। यदा वयं रेल-याने उपविष्टाः गच्छामः, तदा चलम् अपि यानं निश्चलं  
प्रतिभाति, बहिःस्थाः च निश्चलाः अपि वृक्षाः चलाः प्रतिभान्ति। परन्तु वस्तुतः  
यानम् एव धावति न वृक्षाः। तथा एव अस्माकं पृथिवी एव परिभ्रमति न तु सूर्यः।

पृथिवी इव अन्ये विशालाः पिण्डाः आकाशे सूर्यं परितः परिभ्रमन्ति। तान्  
'ग्रहाः' इति कथयन्ति। ते च क्रमेण बुद्धः, शुक्रः, पृथिवी, मंगल, बृहस्पतिः,  
शनिः, अरुणः, वरुणः, कुबेरः इति नव सन्ति। तत्र अपरे अपि अल्पाः पिण्डाः  
सन्ति, ये एतान् ग्रहान् परितः परिभ्रमन्ति। अतः तान् 'उपग्रहान्' वदन्ति। यथा  
अस्माकं पृथिव्याः, एकः एव उपग्रहः तथा मंगलस्य द्वौ उपग्रहौ, बृहस्पतेः नव,  
शनेः अपि नव, अरुणस्य चत्वारः, वरुणस्य च एकः उपग्रहः। परिवारस्य सदस्याः  
इव एते नव ग्रहाः षड्विंशतिः च उपग्रहाः सूर्यं परितः अण्डकारे वृत्ते परिभ्रमन्ति,  
अतः एतं सूर्य-परिवारं सौर-मण्डलम् अपि कथयन्ति।

सूर्यस्य एका एव गतिः। अयं चक्रस्य नाभिः इव निजे अक्षे एव भ्रमति।  
अस्माकं पृथिव्याः, अन्येषां च ग्रहाणां द्विविधा गतिः। एते ग्रहाः यथा स्वे-स्वे अक्षे-  
चक्र-नाभिवत् भ्रमन्ति, तथा चक्र-नेमिवत् निज-निज काक्षायां सूर्यं परितः अपि  
परिभ्रमन्ति। उपग्रहाणां तु त्रिविधा गतिः। ते यथा निजे अक्षे भ्रमन्ति, तथा स्वं-स्वं  
ग्रहं परितः अपि परिभ्रमन्ति। एवं च निज ग्रहेण सहिताः ते सूर्यं परितः अपि  
परिभ्रमन्ति।

सूर्यः उज्ज्वलः अग्नि-पिण्डः सर्वेभ्यः प्रकाशं, तापम्, ऊर्जां च यच्छति।  
पृथिव्याः यः भागः यदा सूर्यम् अभितः भवति, तदा तत्र सूर्यस्य प्रकाशः पतति,  
तेन हि दिनं भवति। अपरस्मिन् च पृष्ठे भागे अन्धकारेण रात्रिः भवति। पृथिव्याः  
स्वे अक्षे भ्रमणेन पृथिव्याः सर्वे भागाः पर्यायेण सूर्यम् अभितः आगच्छन्ति। इत्थं

सर्वत्र पर्यायेण दिनं रात्रिः वा, प्रातः सायं वा इति काल-विभागाः भवन्ति। अस्याः स्वे अक्षे एकस्य भ्रमणस्य कालः चतुर्विंशतिः होराः। तं दिन-रात्रि विभक्तं चतुर्विंशति-होरा-मितं-कालं दिवसम् अपि वदन्ति। सूर्यम् अभितः पृथिव्याः स्वे अक्षेः भ्रमणेन एव पूर्व-पश्चिमयोः, उत्तर-दक्षिणयोः च दिग्विभागानाम् अपि बोधः भवति। प्रातः सूर्योदय-काले सूर्याभिमुखं स्थितानाम् अस्माकं यस्मिन् दिग्विभागे मुखं सा पूर्वा दिशा, यत्र अस्माकं पृष्ठं सा पश्चिमा दिशा, अस्माकं वामेन हस्तेन उत्तर-दिशा, दक्षिणेन च हस्तेन दक्षिणा दिशा।

पूर्वम् कथितं यत् पृथिवी सूर्यं परितः अपि परिभ्रमति अण्डाकारे वृत्ते। अनेन सूर्यात् पृथिव्याः दूर-समीप - भावात् शीतग्रीष्मादीन् ऋतून् अनुभवामः। अनेन एव दिनानां रात्रीणां च पर्यायेण लघुता दीर्घता वा भवति। सूर्यं परितः पृथिव्याः परिभ्रमणे त्रीणि शतानि पंचषष्टिः च दिवसाः गच्छन्ति, तं कालं 'वर्षं' कथयन्ति।

### शब्दार्थः

|                            |                              |
|----------------------------|------------------------------|
| परितः = चारों ओर           | उज्ज्वलः = चमकदार            |
| भ्रमति = घूमता है          | अग्नि-पिण्डः = आग का गोला    |
| परिभ्रमति = चक्कर लगाता है | अभितः = की ओर                |
| प्रतिभाति = जान पड़ता है   | पर्यायेण = बारी से           |
| पिण्डः = गोला              | होरा = घंटा                  |
| वृत्त = घेरा, चक्कर        | लघुता = छोटा होना, छोटापन    |
| नाभिः = नाभ, मध्यभाग       | दीर्घता = लम्बा होना, लम्बाई |
| अक्ष = बीच की कीली (axle)  | नेमि = पहिये का घेरा         |

### अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो—

- क्या सूर्य पृथ्वी के गिर्द घूमता है या पृथ्वी सूर्य के गिर्द?
- क्या रेल गाड़ी में जाते हुए हमें बाहर के वृक्ष दौड़ते हुए प्रतीत होते हैं? क्या वस्तुतः वृक्ष दौड़ते हैं?
- भ्रमण (घूमना) और परिभ्रमण (चक्कर लगाना) में क्या अन्तर है? दृष्टान्त से स्पष्ट करो।

- (घ) हम दिशाओं का निर्धारण कैसे करते हैं ?
- (ङ) क्रमशः सूर्य, ग्रहों और उपग्रहों की कितने प्रकार की गतियाँ होती हैं।
२. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—
- (क) प्रातः ..... पूर्वे दिग्विभागे उदेति।
- (ख) वस्तुतः यानम् एव धावति न .....
- (ग) ..... तु त्रिविधा गतिः।
- (घ) अस्माकं यस्मिन् दिग्विभागे मुखं सा ..... दिशा।
३. रेखांकित शब्दों में विभक्तियों को शुद्ध करो—
- (क) विशालाः, पिण्डाः सूर्यस्य परितः परिभ्रमन्ति।
- (ख) सूर्यः सर्वान् प्रकाशं यच्छति।
- (ग) यः भागः सूर्यस्य अभितः भवति, तत्र प्रकाशः पतति।
४. इन क्रिया-पदों में से उपसर्गों को पृथक् करो—
- अनुभवामः। परिभ्रमति। आगच्छति। उदेति।
५. संस्कृत में उत्तर लिखो—
- (क) सूर्य कस्मिन् दिग्विभागे उदेति ?
- (ख) आकाशे कति ग्रहाः सन्ति ?
- (ग) सूर्य-परिवारं किं कथयन्ति ?
- (घ) पृथ्वी कं परितः परिभ्रमति ?



## अष्टादशः पाठः

### तुलां लोहेन घटितां यत्र खादन्ति मूषिकाः

कस्मिंश्चित् नगरे जीर्णधनः नाम वणिक् आसीत्। स एकदा भृशं धनम् अर्जितुं देशान्तरं गन्तुम् ऐच्छत्। तस्य गृहे लोहेन घटिता पूर्वं - पुरुषोपार्जिता एका तुला आसीत्। सः तां तुलां कस्यचित् श्रेष्ठिनः गृहे निक्षेपभूतां कृत्वा अगच्छत्। ततः सुचिरं कालं देशान्तरेषु यथाकामं भ्रान्त्वा पुनः स्व-नगरम् आगत्य स तं श्रेष्ठिनम् अवदत्- "भोः श्रेष्ठिन् दीयतां सा मे तुला।" श्रेष्ठी प्रत्यवदत्- "भद्र, न अस्ति ते तुला, सा तु मूषिकैः भक्षिता।" जीर्णधनः आह- "भोः श्रेष्ठिन् न अस्ति तव दोषः यदि सा मूषिकैः भक्षिता। ईदृशः एव अयं संसारः। न किञ्चित् अत्र शाश्वतम् अस्ति। अहं तावत् स्नानार्थं नदीं गच्छामि। तत् त्वम् आत्मीयं दारकम् एनं मया सह स्नानोपकरणेन सहितं प्रेषय।" सः अपि श्रेष्ठी स्व- पुत्रम् अवदत् "वत्स, तव पितृव्यः अयं स्नातुं नदीं याति। तत् गच्छ अनेन सार्थं स्नानोपकरणम् आदाय।"

अथ असौ श्रेष्ठि- सुतः स्नानोपकरणम् आदाय प्रसन्नमनाः तेन अभ्यागतेन सह अगच्छत्। सः वणिक् जीर्णधनः नद्यां स्नात्वा तं शिशुं नदी समीपे कस्मिंश्चित् निर्जने गृहे प्रवेश्य द्वारं च पिधाय आगच्छत्।

अथ स श्रेष्ठी तम् अपृच्छत्- "भोः अभ्यागत, कथय कुत्र स मम दारकः, यः त्वया सह नदीं गतः?" जीर्णधनः अवदत्- "नदी-तटात् स श्येनेन अपहृतः।" श्रेष्ठी अकथयत्- "भोः मिथ्यावादिन् किं क्वचित् श्येनः बालं हर्तुं शक्नोति? तत् समर्पय मम सुतम्। अन्यथा राजपुरुषाय निवेदयिष्यामि।" जीर्णधनः आह- "भोः सत्यवादिन्, यथा श्येनः बालं न अपहरति तथा मूषिकाः अपि लोह-घटितां तुलां न भक्षयन्ति। तत् अर्पय मे तुलां, यदि तव दारकेण प्रयोजनम्।"

एवं विवदमानौ तौ उभौ कोट- पालिकाम् अगच्छताम्। श्रेष्ठी आह- "श्रीमन्तः, मम शिशुः अनेन चौर्येण अपहृतः।" अथ - राजपुरुषाः तम् अवदन् "भोः अस्य दारकं प्रत्यर्पय।" स आह- "किं करोमि? पश्यतः मे नदी-तटात् श्येनेन अपहृतः शिशुः।" तत् श्रुत्वा ते राजपुरुषाः अवदन्- "भोः, न सत्यं वदसि त्वम्। किं श्येनः शिशुं हर्तुं समर्थः?" स आह- "श्रीमन्तः श्रूयतां मम वचनम्—



तुलां लोहेन घटितां यत्र खादन्ति मूषिकाः ।

श्रीमन्, तत्र हरेच्छयेनो बालकं नात्र संशयः ।”

ते राजपुरुषाः अपृच्छन्- “कथम् एतत्?” ततः स जीर्णधनः तेषां राजपुरुषाणाम् अग्रे आदितः प्रभृति सर्वं वृत्तान्तम् अकथयत् । तत् श्रुत्वा तैः विहस्य तौ उभौ परस्परं संबोध्य तुला- शिशु- प्रदानेन संतोषितौ ।

### शब्दार्थः

|                                               |                                        |
|-----------------------------------------------|----------------------------------------|
| घटिता = घड़ी हुई, बनी हुई                     | स्नानोपकरणम्=(स्नान + उपकरणम्)         |
| अर्जितम् = (√अर्ज, तुमुन्) कमाने              | स्नान के लिए साधन (तौलिया,             |
| के लिए, इकट्ठा करने के लिए                    | साबुन आदि)                             |
| देशान्तरम् = अन्य देश को                      | पितृव्यः = चाचा                        |
| पूर्वपुरुषोपार्जिता = (पूर्व पुरुष+उपार्जिता) | पिधाय = बन्द करके                      |
| पूर्वजों द्वारा अर्जित                        | कोट-पालिका = कोतवाली                   |
| निक्षेपभूता = अमानत रखी हुई                   | प्रत्यर्पय = (प्रति अर्प लोट्, म. ए.०) |
|                                               | वापिस दो                               |

### अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो—  
 (क) इस कथा से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?  
 (ख) जीर्णधन दूसरे देश में किस लिए गया ?  
 (ग) जीर्णधन ने बच्चे को कहाँ रखा ?  
 (घ) सिपाहियों के पूछने पर जीर्णधन ने क्या उत्तर दिया ?
- सन्धिच्छेद करो—  
 प्रत्यवदत् । स्नानार्थम् । नात्र । स्नानोपकरणम् ।
- उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—  
 शिशुं, स्नानार्थम्, श्येनेन, मूषिकैः  
 (क) सा तु ..... भक्षिता  
 (ख) अहं तावत् ..... नदीं गच्छामि ।



(ग) नदी तटात् स -----अपहृतः ।

(घ) किं श्येनः -----हर्तुं समर्थः ।

४. अव्ययों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करो—

एकदा, इदानीम्, भृशम्, अलम्, कथम् ।

५. संस्कृत में उत्तर लिखो—

(क) जीर्णधनः कः आसीत् ?

(ख) जीर्णधनस्य गृहे का आसीत् ?

(ग) श्रेष्ठिनः पुत्रः केन अपहृतः ?



नवदशः पाठः

## सुप्रभातम्

उदयति मिहिरो विदलित-तिमिरो  
भुवनं कथमभिरामम् ।  
प्रचरति-चतुरो मधुकर-निकरो  
गुंजति कथमविरामम् ॥ १ ॥  
विकसति कमलं, विलसति सलिलं,  
पवनो वहति सलीलम् ।  
दिशि-दिशि धावति कूजति नृत्यति  
खग-कुलमतिशय-लोलम् ॥ २ ॥  
शिरसि तरुणां रवि-किरणानां  
खेलति रूचिररुणाभा ।  
उपरि दलानां हिम-कणिकानां  
काऽपि हृदयहर-शोभा ॥ ३ ॥  
प्रसरति गगने हरि-हर-भवने  
दुन्दुभि-दमदम-नादः ।  
भज परमेशं, पठ सनिवेशं,  
भवतादनुपम-मोदः ॥ ४ ॥

### शब्दार्थः

मिहिरः = सूर्य

विदलित तिमिरः = अधकार को दूर  
करने वाला

अभिरामम् = (वि) सुंदर

मधुकर-निकरः = भौरों का समूह

विलसति = (वि) √लस्, लट, प्र. ए.)  
सुशोभित होता है

सलीलम् = (क्रि. वि.) धीरे-धीरे

अतिशय लोलम् = (वि.) अत्यन्त  
चंचल

रुचिः = कान्ति

परमेशम् = (परम+ईश) परमेश्वर को

सन्निवेशम् = ध्यान-पूर्वक

अनुपम-मोदः = अद्वितीय हर्ष

हरि-हर भवने = हरि-हर (हरि=विष्णु,  
हर=शिव) के मंदिर में

अरुणाभा = लाल रंग की (कान्ति)

हिम कणिकानाम् = ओस कणों की

हृदय हर-शोभा = मनोहर सुन्दरता

### अभ्यास

१. इस पाठ का सरलार्थ हिन्दी में लिखो।
२. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—  
 (क) मिहिरः .....। (वहति, उदयति, प्रचरति)  
 (ख) कमलम् .....। (गुंजति, कूजति, विकसति)  
 (ग) पवनः .....। (खेलति, नृत्यति, वहति)
३. उपसर्ग अलग करो—  
 अभिरामम्, सुप्रभातम्, प्रचरति, अनुपमः।
४. संस्कृत में उत्तर लिखो—  
 (क) कमलं कदा विकसति?  
 (ख) खगकुलं कुत्र नृत्यति?  
 (ग) दुन्दुभि-दमदम-नादः कुत्र प्रसरति?



विंशः पाठः

## संस्कृतस्य महत्त्वम्

भारतम् एकं विशालं राष्ट्रम् अस्ति । अस्मिन् राष्ट्रे बहवः प्रदेशाः सन्ति । एषु प्रदेशेषु विभिन्नानां भाषाणां व्यवहारः भवति । एतासु भाषासु हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, बंगला, अन्याः च अनेकाः भाषाः मुख्याः सन्ति । संस्कृत-भाषा प्रायः सर्वासाम् एतासां भाषाणां जननी अस्ति । इयं भारतवर्षस्य प्राचीनतमा भाषा अस्ति । न केवलं भारतवर्षे प्रत्युत अखिले संसारे प्रचलितासु भाषासु इयं प्राचीनतमा अस्ति ।

संस्कृत भाषा प्राचीने भारते लोक-भाषा राज-भाषा च आसीत् । अस्यां भाषायां भारतस्य प्राचीनतमं साहित्यं लिखितम् अस्ति । भारतस्य इदं प्राचीनतमं साहित्यं विश्व साहित्यस्य प्राचीनतमं रूपम् उपस्थापयति । अस्य साहित्यस्य प्राचीनतमः ग्रन्थः ऋग्वेदः अस्ति । ऋग्वेदः यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः इति चत्वारः वेदाः, अथ च एकादश उपनिषदः, रामायणं, महाभारतं, भगवद्गीता, अष्टादश पुराणानि, षड् दर्शनानि, अन्यानि अनेकानि शास्त्राणि ग्रन्थ-रत्नानि च अस्य साहित्यस्य गौरवं वर्धयन्ति । वाल्मीकिः, व्यासः, कालिदासः, अश्वघोषः, भारविः, माघः, श्रीहर्षः अन्ये च बहवः कवयः इदं साहित्यं समृद्धं कुर्वन्ति । भासः, भवभूतिः विशाखदत्तः, राजशेखरः अन्ये च बहवः नाटककाराः अस्य साहित्यस्य सौन्दर्यं वर्धयन्ति । सुबन्धु-बाण-दण्डि प्रमुखाः गद्यकाराः अपि अस्य शोभां पुष्पयन्ति ।

संस्कृत साहित्ये भारतस्य संस्कृतिः प्रतिबिम्बिता अस्ति । अस्मिन् साहित्ये भारतस्य पुरातनः इतिहासः सुरक्षितः अस्ति । इदं साहित्यम् अस्माकं धार्मिकं नैतिकं च जीवनम् अपि प्रतिबिम्बयति । एवं इदं साहित्यं अस्माकं सांस्कृतिकः निधिः अस्ति ।

इयं भाषा सरला सुबोधा च अस्ति । अस्यां भाषायां वाक्य-विन्यासस्य नियमाः विशेषेण सरलाः सन्ति । शनैः शनैः नियम-पूर्वकम् अभ्यासं कृत्वा बालकः अस्यां भाषायां प्रवीणतां प्राप्तुं शक्नोति । शब्दानां विशालः भण्डारः अस्याः भाषायाः अनन्या विशेषता अस्ति । अस्यां भाषायां शब्द-निर्माणस्य अद्भुता शक्तिः अस्ति । अद्यापि

इयं भाषा पारिभाषिकाणां शब्दानां निर्माणे सहायतां करोति । प्रादेशिकीनां भाषाणां विकासाय समृद्धये च अस्याः भाषायाः महतीम् आवश्यकतां सर्वे अपि स्वीकुर्वन्ति ।

संस्कृत-भाषा ललिता मधुरा च अस्ति । अतः एव कश्चित् कविः आह-  
 “भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाण-भारती इति” अस्याः भाषायाः माधुर्येण वैदेशिकाः अपि जनाः आकृष्टा अभवन् । ते अस्याः भाषायाः बहुविधं महत्त्वं ज्ञात्वा अस्याः सादरम् अध्ययनम् अकुर्वन्, अद्यापि च कुर्वन्ति । अद्य संसारस्य प्रायः सर्वेषु प्रमुखेषु विश्वविद्यालयेषु संस्कृत-भाषायाः अध्ययनस्य व्यवस्था अस्ति ।

संस्कृत-भाषायाः तत्साहित्यस्य च अध्ययनं भारतीयानाम् अस्माकं कृते विशेषेण हितावहम् अस्ति । राष्ट्रीययायाः एकतायाः निष्पादने तत्प्रसार-कर्मणि चापि संस्कृतस्य अध्ययनं सर्वथा सहायकं स्यात् इति न अत्र संदेहः ।

### शब्दार्थः

|                                     |                                   |
|-------------------------------------|-----------------------------------|
| उपस्थापयति = (उप √स्था, प्रेरणार्थक | अनन्या = निराली                   |
| णिच् लट्) प्रस्तुत                  | गीर्वाण-भारती = देव भाषा, संस्कृत |
| करता है, पेश करता है                | हितावहम् = हितकर, लाभप्रद         |
| वर्धयन्ति = (√वृध् प्रेरणार्थक णिच् | प्रोत्साहयति = उत्साहित करती है   |
| लृट्, प्र. ब.) बढ़ाते हैं।          | निधिः = खजाना                     |
| पुरातनः = प्राचीन                   | प्रवीणताम् = निपुणता को           |

### अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो :  
 (क) संस्कृत के किन्हीं चार कवियों अथवा नाटककारों के नाम लिखो ।  
 (ख) वेद कितने हैं ? उनके नाम लिखो ।
- कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति लगाकर वाक्य बनाओ—  
 (क) संस्कृत-भाषा सर्वासाम् एतासां (भाषा) जननी अस्ति ।  
 (ख) अस्मिन् साहित्ये (भारत) पुरातनः इतिहासः सुरक्षितः अस्ति ।

(ग) संसारस्य प्रमुखेषु (विश्वविद्यालय) संस्कृत-भाषायाः अध्ययनस्य व्यवस्था अस्ति।

३. अव्ययों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करें-

अद्य, सर्वथा, एवम्, अत्र।

४. प्रत्यय अलग करो :-

कृत्वा, प्राप्तुम्, ज्ञात्वा।

५. संस्कृत में उत्तर लिखो-

(क) भारतम् कीदृशं राष्ट्रम् अस्ति?

(ख) सर्वसाम् भाषाणां जननी का अस्ति?

(ग) संस्कृत-भाषा कीदृशी अस्ति?





## एकविंशः पाठः स्वामी रामतीर्थः

भारतवर्षस्य सुप्रसिद्धः वेदान्तज्ञः स्वामी रामतीर्थः पश्चिम-पंजाब राज्ये गुजरावाला प्रदेशे 1873 तमे ईसाब्दे अजायत । स बाल्यात् एव मेधावी, प्रतिभावान् च आसीत् । पाठशालायाम् अध्यापकाः तस्य प्रतिभया, स्मरण-शक्त्या च अत्यन्तं प्रभाविताः आसन् । अल्पेन एव कालेन स उर्दू-फारसी-भाषयोः प्रवीणतां प्राप्तवान् । ततः स संस्कृत-भाषाम् अपि अपठत् । असाधनः तस्य जनकः तस्य उच्च-शिक्षायाः प्रबन्धं कर्तुम् असमर्थः आसीत् । परं तस्य अपूर्वा मेधा, ज्ञान रुचिं च दृष्ट्वा केचित् श्रेष्ठिनः धनेन तस्य सहायताम् अकुर्वन् ।

अल्पैः एव साधनैः जीवन-निर्वाहं कुर्वन् रामतीर्थः पूर्णेन मनो-योगेन उच्च-शिक्षाम् अध्यगच्छत् । स बी. ए. परीक्षायां विश्वविद्यालये प्रथमं स्थानं प्राप्तवान् । ततः स गणित-विषये एम. ए. परीक्षाम् उत्तीर्य लवपुरे क्रिश्चियन् महाविद्यालये प्राध्यापकः अभवत् ।

रामतीर्थः शैशवात् एव एकान्त प्रियः, चिन्तन-शीलः च आसीत् । धार्मिक-कथासु तस्य महती रुचिः आसीत् । श्रीकृष्णे तस्य दृढा भक्तिः आसीत् । यदा स स्वामी विवेकानन्दस्य सम्पर्कं प्राप्तवान्, तदा तस्य प्रभावेण स वेदान्तस्य अध्ययने प्रवृत्तः अभवत् । अनन्तरं वेदान्ते पारङ्गतः स अध्यापन-वृत्तिं परित्यज्य वेदान्तस्य प्रचाराय परिव्राजकः अभवत् । स वेदान्तस्य, भारतीय संस्कृतेः च प्रचारं कर्तुम् अमरीका-जापानादीन् देशान् अपि अगच्छत् ।

स्वामी रामतीर्थः देशभक्तः आसीत् । भारतम् अचिरम् एव स्वतंत्रं, समृद्धं च भविष्यति इति तस्य दृढः विश्वासः आसीत् । रामतीर्थः कोमल-हृदयः, भावुकः च आसीत् । भावुकतायाः क्षणेषु स काव्य-रचनाम् अपि अकरोत् । तस्य कवितासु अपूर्वः भावावेगः अस्ति ।

स्वामी रामतीर्थः सर्वम् अपि जगत् ईश्वरमयम् अपश्यत् । तस्य प्रकृति-प्रेम अनन्यम् आसीत् । अनेकदा स प्रकृतेः शोभां दृष्ट्वा भाव-विह्वलः अजायत । एवं भाव-विह्वलः भूत्वा स 1906 तमे ईसाब्दे गंगायां शाश्वतं जल-समाधिम् अकरोत् ।

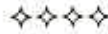
## शब्दार्थः

|                                                                       |                                                     |
|-----------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------|
| वेदान्तज्ञः = वेदान्त दर्शन का विद्वान्                               | भावुकः = भावना पूर्ण, भावावेग से युक्त              |
| बाल्यात् = बचपन से                                                    |                                                     |
| मेधावी = तीव्र बुद्धि वाला                                            | भावावेग = भावों का प्रबल वेग अथवा प्रवाह            |
| अपूर्वम् = अनोखी (मेधा) को                                            | असाधनः = साधन धन आदि से रहित                        |
| मनोयोगेन = मन की एकाग्रता के साथ                                      | ईश्वरमयम् = ईश्वर से परिच्युत, ईश्वर रूप            |
| भाव-विह्वल = भावना पूर्ण, अत्यन्त भावुक                               | अनेकदा=अनेक बार                                     |
| उत्तीर्ण = (उद् √तृ, क्त्वा .> ल्यप्)                                 | अध्यगच्छत् = (अधि √गम>गच्छ, लङ् प्र. ए.) प्राप्त की |
| उत्तीर्ण करके, पास करके                                               |                                                     |
| जल-समाधिम् = जल में समाधि अर्थात् ईश्वर लीनता की स्थिति को, मृत्यु को | शाश्वतम् = नित्य, चिरन्तन (जल समाधि) को             |
| पारंगत = कुशल, विद्वान्, पण्डित                                       | परिव्राजकः = संन्यासी                               |

## अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो।-
  - स्वामी रामतीर्थ उच्च शिक्षा प्राप्त करने में कैसे सफल हुए?
  - रामतीर्थ कौन-कौन सी भाषाओं के ज्ञाता थे?
  - रामतीर्थ ने नौकरी क्यों छोड़ी?
- उपसर्ग अलग करो-  
परित्यज्य, प्रभावेण, विश्वासः, सुप्रसिद्धः
- प्रत्यय अलग करो।-  
दृष्ट्वा, कर्तुम्, श्रुत्वा, भूत्वा

४. कोष्ठकों में दिए गए शब्दों में उपयुक्त विभक्ति, वचन लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो-
- (क) अल्पेन एव ..... (काल) सः उर्दू-फारसी भाषायाः प्रवीणतां प्राप्तवान्।  
 (ख) रामतीर्थः ..... (शैशव) एकांतप्रियः आसीत्।  
 (ग) सः ..... (वेदान्त) अध्ययने प्रवृत्तः अभवत्।  
 (घ) सः वेदान्तस्य प्रचारं कर्तुम् अमरीका-जापानादीन् ..... (देश) अगच्छत्।
५. संस्कृत में उत्तर लिखो-
- (क) स्वामी रामतीर्थः कुत्र अजायत ?  
 (ख) रामतीर्थः कस्य विषयस्य अध्यापकः आसीत् ?  
 (ग) भावुकतायाः क्षणेषु रामतीर्थः किम् अकरोत्।



द्वाविंशः पाठः

## गीतामृतम्

तमुवाच हृषीकेशः, प्रहसन्निव, भारत ।  
सेनयोरुभयोरु मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥  
देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं, यौवनं, जरा ।  
तथा देहान्तर-प्राप्तिर् धीरस् तत्र न मुह्यति ॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय  
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।  
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-  
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः ।  
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः ॥

हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।  
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय, युद्धाय कृत निश्चयः ॥

सुख-दुःखे समे कृत्वा, लाभालाभौ, जयाजयौ ।  
ततो युद्धाय युज्यस्व, नैवं पापमवाप्स्यसि ॥

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः, सुखेषु विगतस्मृहः ।  
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर् मुनिरुच्यते ॥

ध्यायतो विषयान् पुंसः, सङ्गस् तेषूपजायते ।  
सङ्गात् संजायते कामः, कामात् क्रोधोऽभिजायते ॥

क्रोधाद् भवति संमोहः, संमोहात् स्मृति-विभ्रमः ।  
स्मृति-भ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ॥

यद् यदाचरति श्रेष्ठस्, तत् तदेवेतरो जनः ।  
स यत् प्रमाणं कुरुते, लोकस् तदनुवर्तते ॥

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर् भवति, भारत ।  
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम् ॥  
धर्म-संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

### शब्दार्थः

|                                                                  |                                                                      |
|------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------|
| हृषीकेशः = (हृषीक + ईशः) इन्द्रियों<br>का स्वामी (कृष्ण)         | विहाय = (वि √हा, क्त्वा, > ल्यप्)<br>छोड़कर                          |
| प्रहसन् = (प्र० √हस्, शतृ, पुं०)<br>मुस्कराते हुए                | संयाति = (सम् √या लट्, प्र. ए.)<br>प्राप्त करता है ।                 |
| विषीदन्तम् = (वि √सद्, शतृ, पुं०, द्वि, ए.)<br>दुःखी होते हुए को | छिन्दन्ति = काटते हैं<br>क्लेदयन्ति = गीला करते हैं                  |
| देहिनः = देहधारी अर्थात् जीवात्मा के                             | शोषयति = सुखाता हैं                                                  |
| वीतरागभयक्रोधः = नष्ट हुए लगाव, डर<br>तथा क्रोध वाला             | देहान्तर-प्राप्तिः = दूसरे शरीर की प्राप्ति<br>ग्लानिः = हानि, ह्रास |
| वासांसि = कपड़ों को                                              | दुष्कृताम् = बुरे कार्य करने वालों का                                |

## अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो—
  - (क) ईश्वर कब अवतरित होता है ?
  - (ख) जीवात्मा शरीर कैसे बदलता है ?
  - (ग) शरीर और आत्मा में क्या भेद है ?
२. सन्धिच्छेद करो—  
 लाभालाभौ । क्लेदयन्त्यापः । दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः । तदात्मानम् । धीरस्तत्र ।  
 तस्मादुतिष्ठ ।
३. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो —
  - (क) नैनं छिन्दन्ति..... ।
  - (ख) जित्वा वा भोक्ष्यसे..... ।
  - (ग) नैनं .....पावकः ।
  - (घ) क्रोधाद् भवति..... ।





त्रयोविंशः पाठः

## महाराजा रणजीत सिंहः

पञ्चापस्य वीरप्रसू- भूमौ महाराज्ञो रणजीतसिंहस्य नाम 'शेर-ए-पंजाब' रूपेण जनाः सादरं स्मरन्ति । तस्य जन्म ख्रिष्टाब्दस्य 1780 तमे वर्षे 'सुकरचकिया' मिसलस्य सरदारस्य महासिंहस्य गृहे अभवत् । तस्य मातुः नाम राजकौरः आसीत् । सा तस्य नाम बुधसिंहः इति अकरोत् । महासिंहः रणक्षेत्रे तस्य जन्मनः सूचनां प्राप्तवान् । तत्र विजयं प्राप्य सः तस्य नाम 'रणजीतसिंहः' इति अकरोत् ।

1792 तमे ईसाब्दे तस्य जनकः स्वर्गं प्राप्तः । तदा अल्पायुः अपि सः मिसलकार्यं योग्यतया अपूरयत् । 1796 तमे ईसाब्दे सः कन्हैया मिसलस्य महताबकौर नामकः कन्यया सह परिणय-सूत्रे बद्धः ।

तदा पञ्चापः द्वादशमिसलेषु विभक्तः आसीत् । वैदेशिकानाम् आक्रमणैः लुण्ठनैः च पञ्चापस्य आर्थिक अवस्था जर्जरा अभवत् । रणजीत सिंहः 1799 तमे ईसाब्दे मिसलभेदान् दूरीकृत्य संयुक्तास्य पञ्चाप-राज्यस्य स्थापनाम् अकरोत् । 1801 तमे ईसाब्दे सः लाहौरवासिभिः 'महाराजा' पदेन विभूषितः । 1802 तमे ईसाब्दे सः लाहौरम् अधिकृत्य सिक्खराज्ये समायोजयत् 'शेर-ए-पंजाब' इति पदवीं च अधारयत् । 1809 तमे ईसाब्दे तावत् तस्य राज्यं लद्दाखात् सिन्धपर्यन्तम्, सतलुजनद्याः खैबर दर्रा पर्यन्तं प्रसरितम् आसीत् ।

प्रजापालकः रणजीतसिंहः रात्रिकाले वेशं परिवर्त्य असहाय-जनानां सहायतां करोति स्म । सः धर्म-जात्यादीनां भेदान् विस्मृत्य मानवमात्रस्य कल्याणार्थं कार्यम् अकरोत् । तस्य सेनानायकौ अकाली फूलासिंहः हरिसिंहः नलवा च मुगलानां आक्रमणानि निष्फलानि अकुरुताम् । सः जनहितरतान् जनान् विदुषः च धन-धान्येन पूरयति स्म । सः दुष्टानां सम्पत्तिं हत्वा निर्धनेषु वितरति स्म ।

महाराजोऽयं प्रजापालकः दीनदयालुः, न्यायप्रियः, प्रजा-वत्सलः, कुशलः

प्रशासकः, वीरः, योद्धा च आसीत्। 1839 तमे ईसाब्दे सः देवलोकं गतः। धन्यः स महाराजः रणजीतसिंहः।

### शब्दार्थः

|                                |                         |
|--------------------------------|-------------------------|
| अल्पायुः = छोटी आयु            | विभूषितः = सुशोभित किया |
| परिणयसूत्रे = विवाह-बन्धन में  | अधिकृत्य = अधिकार करके  |
| तुण्डनैः = लूटों द्वारा        | समायोजयत् = मिला लिया   |
| जर्जरा = कमजोर                 | परिवर्त्य = बदलकर       |
| प्रजावत्सलः प्रजा के लिए प्रिय | विस्मृत्य = भुलाकर      |
| दूरीकृत्य = दूर करके           | हत्वा = हर कर           |
|                                | वितरति स्म = बाँटते थे। |

### अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो :-
  - महाराजा रणजीत सिंह जी के माता-पिता का क्या नाम था ?
  - पंजाब की आर्थिक अवस्था जर्जर कैसे हुई ?
  - महाराजा रणजीत सिंह का राज्य कहाँ से कहाँ तक फैला हुआ था ?
- यथा निर्दिष्ट वचन परिवर्तन करें :-
 

अधारयत् (बहुवचन में), आसीत् (द्विवचन में), अपूरयत् (बहुवचन में)  
अभवत् (द्विवचन में)
- कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-
  - महासिंहः.....(रणक्षेत्र) तस्य जन्मनः सूचनां प्राप्तवान्।
  - सः .....(लाहौर) अधिकृत्य सिक्खराज्ये समायोजयत्।
  - सः .....(दुष्ट) सम्पत्तिं हत्वा निर्धनेषु वितरति स्म।

- (घ) 1839 तमे ईसाब्दे सः.....(देवलोक) गतः ।
४. नीचे लिखे अव्यय शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करें-  
 धिक्, अधुना, ह्यः श्वः, अनन्तरम् ।
५. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखो-
- (क) महाराजा रणजीत सिंहस्य जन्म कदा अभवत् ?
- (ख) महाराजा रणजीतसिंहः कैः महाराजा पदेन विभूषितः ?
- (ग) महाराजा रणजीत सिंहः कीदृशः प्रशासकः आसीत् ?



चतुर्विंशः पाठः

## कश्मीर यात्रा

कश्मीर-प्रदेशः भारत-वर्षे रमणीयतमः प्रदेशः अस्ति । भारतस्य पश्चिमोत्तरे दिग्विभागे, हिमालयस्य अंके स्थितः अयं प्रदेशः गिरि-शिखरैः परिवृतः अस्ति । प्रतिवर्षं ग्रीष्मर्तौ देशस्य विभिन्न प्रदेशेभ्यः, देशान्तरेभ्यः च अनेके पर्यटकाः, प्रकृति-सौन्दर्यं द्रष्टुम् अत्र आगच्छन्ति ।

गत-वर्षे वयं ग्रीष्मावकाशे कश्मीर-यात्रां कर्तुं चण्डीगढ़ात् सायं रेल-यानेन प्रस्थिताः । अन्येद्युः प्रातः वयं जम्मू नगरं प्राप्तवन्तः । ततः मोटर-यानेन श्रीनगराय प्रस्थाय, मार्गे अति दीर्घां जवाहर-सुरंगाम् अतिक्रम्य, वयं कश्मीरस्य मनोहराम् उपत्यकां प्रविष्टाः । मार्गम् उभयतः रम्याणि दृश्यानि अवलोकयन्तः वयं द्वादशभिः होराभिः श्रीनगरं प्राप्नुवाम । श्रीनगरं वितस्ता-नदीम् उभयतः स्थितम् अस्ति ।

कश्चित् कालं पर्यटक-केन्द्रे विश्रम्य वयं डल-सरोवरस्थे एकस्मिन् रमणीये नौका-गृहे निवासं कृतवन्तः । ततः प्रतिदिनं कदाचित् स्थानीय-बस-यानेन, कदाचित् च पादाभ्यां निशात-शालिमारदीनि उपवनानि, चश्माशाही - नामकं शीतलं जलोद्गमम्, शङ्काचार्यस्य च प्रसिद्धं मंदिरं पश्यन्तः सुखेन कतिपयानि दिनानि अनयाम ।

श्रीनगरात् वयम् अनन्तनागम्, अच्छलम्, अन्यानि च धार्मिक-स्थानानि, कुक्कुटनामकं च स्वास्थ्यप्रदं निर्झर-स्थलम् दृष्टुं गताः । ततः लम्बोदरी (लुडर) नदी तटे स्थितं स्वच्छतमं पहलगाम-नगरं प्राप्ताः अस्मात् स्थानात् अमरनाथं प्रति यात्रा आरभ्यते । पहलगामात् प्रत्यागत्य वयं सोनमार्गं गताः । तदनन्तरम् अखिलभवान्याः मन्दिरस्य दर्शनय अगच्छाम । मार्गे वृत्तर नामकः विश्व-प्रसिद्ध सरोवरः अपि अस्माभिः दृष्टः । गुलमर्गे शाद्वल-विभूषितानि गोल्फ-क्रीडा-क्षेत्राणि दृष्ट्वा वयम् अमन्दम् आनन्दं प्राप्नुवाम । इतः निकटवर्तिनि खिलनमर्गे हिम-क्रीडाभिः मनोरंजनम् अपि कृतम् ।

देवदार - चिनार-वृक्षैः सरभितं पवनम् आस्वादयन्तः, निर्झराणां च शीतलं जलं पिबन्तः वयम् एकं मासं सुखेन कश्मीरे विश्रम्य, विमानेन स्वनगरं प्रत्यागताः ।

सत्यम् कश्मीरः पृथिव्यां स्वर्ग-खण्डः इव स्थितः ।

### शब्दार्थः

|                                                 |                                      |
|-------------------------------------------------|--------------------------------------|
| अङ्गे = गोद में                                 | अतिक्रम्य = पार करके                 |
| परिवृत्तः = घिरा हुआ                            | उपत्यका = पर्वतों से घिरी भूमि, वादी |
| ग्रीष्मर्तौ = (ग्रीष्म + ऋतौ) गर्मी के मौसम में | वितस्ता = जेहलम नदी                  |
| देशान्तरेभ्यः = दूसरे देशों से                  | शाद्वल = हरी घास के मैदान            |
| पर्यटकाः = सैलानी                               | सुरभितम् = सुगन्धित                  |
| अन्येद्युः = दूसरे दिन                          | निर्झराणाम् = झरनों का               |
| प्रस्थाय = रवाना होकर                           |                                      |

### अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो-
  - कश्मीर में किस ऋतु में लोग अधिक जाते हैं ?
  - कश्मीर के कोई चार दर्शनीय स्थान बताओ।
  - गुलमर्ग की क्या विशेषता है ?
  - कश्मीर के किसी धार्मिक स्थान का नाम बताओ।
- अव्ययों को संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करो-  
अन्येद्युः, प्रातः, उभयतः, इव, प्रति।
- रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—
  - नौकागृहे .....कृतवन्तः।
  - अस्मात् स्थानात् अमरनाथं प्रति .....आरभ्यते।
  - तदनन्तरम् अखिलभवान्याः मन्दिरस्य .....अगच्छाम।
  - सत्यम्, कश्मीरः पृथिव्यां.....इव स्थितः।
- संस्कृत में उत्तर लिखो-
  - कश्मीरः प्रदेशः कुत्र स्थितः अस्ति ?
  - कस्मात् स्थानात् अमरनाथं प्रति यात्रा प्रारभ्यते ?
  - कः प्रदेशः पृथिव्यां स्वर्गखण्डः इव स्थितः ?



पञ्चविंशः पाठः

## मनु-वचनानि

एतद्-देश-प्रसूतस्य सकाशाद् अग्र-जन्मनः ।  
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व-मानवाः ॥  
वेदः स्मृतिः, सदाचारः, स्वस्य च प्रियमात्मनः ।  
एतत् चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम् ॥  
सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयाद्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।  
प्रियं च नानृतं ब्रूयाद्, एष धर्मः सनातनः ॥  
दृष्टि-पूतं न्यसेत् पादं, वस्त्रं पूतं जलं पिबेत् ।  
सत्य-पूतां वदेद् वाचं, मनः पूतं समाचरेत् ॥  
यद् यत् पर-वशं कर्म, तत् तद् यत्नेन वर्जयेत् ।  
यद् यद् आत्म-वशं तु स्यात्, तत् तत् सेवेत यत्नतः ॥  
सर्वं पर वशं दुःखं सर्वम् आत्म-वशं सुखम् ।  
एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुख-दुःखयोः ॥  
अभिवादन-शीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः ।  
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुः, विद्या यशो, बलम् ॥  
तृणानि भूमिरुदकं, वाक् चतुर्थी च सुनृता ।  
एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥  
यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति ।  
तथा तथा विजानाति, विज्ञानं चास्य रोचते ।



यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः ।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥

### शब्दार्थः

|                                         |                                           |
|-----------------------------------------|-------------------------------------------|
| एतद्-देश-प्रसूतस्य = इस देश में उत्पन्न | समासेन = संक्षेप से                       |
| (विद्वान् ब्राह्मण)का                   | तृणानि = तिनकों से बना आसन,               |
| अग्रजन्मनः = ब्राह्मण का                | अर्थात् आसन                               |
| शिक्षेरन् = (शिक्ष, विधिलिङ्. प्र. ब.)  | सुनुता = मधुर (वाणी)                      |
| (वे) सीखें                              | न उच्छिद्यन्ते = (उद् √छिद्, कर्म वाच्य   |
| सनातनः = पुरातन, परंपरागत               | तद्, प्र.ब.) उच्छिन्न                     |
| न्यसेत् = (नी √अस्, विधिलिङ्. प्र. ए.)  | अथवा नष्ट नहीं होते                       |
| (वह) रखे                                | पूज्यन्ते = (स्त्रियाँ) सम्मानित होती हैं |
| वर्जयेत् = छोड़ दे                      | देवताः = देव अर्थात् देव गुणों से संपन्न  |
|                                         | मनुष्य                                    |
| विद्यात् = (विद्, जानना, विधिलिङ्,      | अफलाः = निष्फल (क्रियाएँ)                 |
| प्र.ए.) (वह) जाने                       |                                           |

### अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो-
  - मनु के अनुसार धर्म का चतुर्विध लक्षण क्या है ?
  - मनु के अनुसार अभिवादन शील व्यक्ति को प्राप्त होने वाले लाभों का वर्णन करो।
  - इस पाठ के पद्यों में से किन्हीं तीन को कण्ठस्थ करो।
- निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—
  - न ब्रूयात् सत्यम् .....
  - वस्त्रं पूतं .....पिबेत्।
  - यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते ..... तत्र देवताः।
- सन्धिच्छेद करो—  
वृद्धोपसेविन् । एतान्यपि । नोच्छिद्यन्ते । नार्यस्तु । सर्वास्तत्र । यत्रैताः ।
- उपसर्ग अलग करो—  
अभिवादनम्, विजानाति, उपसेविनः, समाचरेत् ।

षड्विंशः पाठः

## विज्ञानस्य चमत्काराः

विज्ञानं पदार्थानां विशिष्टं ज्ञानम् अस्ति । अस्मिन् मनुष्याणां, पशूनां, वनस्पतीनां, भौतिक-पदार्थानां च विषये ज्ञानं निहितं भवति । विज्ञानेन मनुष्यस्य जीवनम् सुखमयं कष्ट-रहितं च भवति । अद्यतनं युगम् वैज्ञानिकं अस्ति । यत्र यत्र अस्माकं दृष्टिः गच्छति, तत्र तत्र वयं विज्ञानस्य चमत्कारान् पश्यामः ।

प्राचीन काले संसारे यातायातस्य साधनानि स्वल्पानि आसन् । ग्रामान्तरं नगरान्तरं वा गन्तुं जनाः अश्वस्य उष्ट्रस्य, रथस्य वा वाहन-रूपेण उपयोगं कुर्वन्ति स्म । अधुना द्विचक्रिकाः, मोटर-यानानि, रेलयानानि, पोताः, विमानानि, अन्यानि च विविधानि यातायात-साधनानि सुलभानि सन्ति । विमानेन जनाः अल्पेन एव कालेन आकाश-मार्गेण सुदूरं प्राप्नुवन्ति । राकेट-यानेन अन्तरिक्ष-यात्रिणः चन्द्रलोकम् अपि प्राप्ताः । कालेन च ते मंगल-ग्रहं, शुक्र-ग्रहं, च अपि गन्तुं समर्थाः स्युः ।

विज्ञानेन अधुना संचारस्य नवानि साधनानि सुलभानि जातानि । दूरभाषेण दूरे स्थिताः अपि पुरुषाः परस्परं वार्तालापं कुर्वन्ति । रेडियो-यन्त्रेण स्वदेशे, विदेशेषु च अपि समाचाराः, गीतानि, भाषणानि च प्रसार्यन्ते । दूर-दर्शने तु वक्तुः चित्रम् अपि दृष्टिगोचरं भवति । अनेन वयं नृत्यं, नाटकम्, अन्यानि च विविधानि दृश्य-श्रव्य-वस्तूनि प्रत्यक्षीकुर्मः ।

विद्युतः शक्तिः विज्ञानस्य महत्वपूर्णः आविष्कारः अस्ति । अनेन आविष्कारेण अस्माकं जीवन-चर्यायां महत् परिवर्तनं संजातम् । रात्रेः अन्धकारः अनेन पूर्णतः वशीकृतः । अद्य नगरेषु, ग्रामेषु च विद्युद्-दीपाः प्रायः सर्वत्र द्योतन्ते । यदा वयं शीतम् अनुभवामः, तदा विद्युत्तापकेन शीतं निवारयामः । वयं ग्रीष्मकाले विद्युद्-व्यजनैः, प्रशीतकैः च गृहाणि शीतलानि कुर्मः । विद्युतः शक्त्या विविधानि यन्त्राणि संचलन्ति ।

चिकित्सायाः क्षेत्रे अपि विज्ञानं वरदानम् अस्ति । अद्य शल्य-क्रियया एक्सरे-यन्त्रेण, नव नवैः च औषधैः असाध्यानाम् अपि रोगाणाम् उपचारः सम्भवः अस्ति । पेन्सिलीन सद्दृशैः, औषधैः, सूचि-वेधद्वारा, कोटिशः व्याधिप्रस्ताः निरोगाः भवन्ति ।

किं बहुना ? यत्र अपि अस्माकं दृष्टिः गच्छति, तत्र एव वयं विज्ञानस्य चमत्कारान् पश्यामः ।

## शब्दार्थः

विशिष्टम् = विशेष

यातायातम् = आवगमन, आना-जाना

विद्युत तापकेन = बिजली के हीटर से

वार्तालापम् = बातचीत को

प्रसार्यन्ते = (रेडियो पर) प्रसारित किए जाते हैं

दूर-दर्शनम् = टेलीविजन

जीवन-चर्यायाम् = दैनिक जीवन में

दूरभाषेण = टेलिफोन से

सुलभानि = आसानी से प्राप्त

विद्युत्-दीपाः = बिजली के लैंप

संचारः = संदेश-प्रेषण

प्रशीतकम् = कूलर

चिकित्सायाः = इलाज के

शल्य-क्रिया = ऑपरेशन द्वारा

उपचारः = इलाज

## अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो:-

(क) विज्ञान किसे कहते हैं? इससे हमें क्या लाभ हुआ है?

(ख) विज्ञान ने हमें यातायात के कौन से नये साधन दिए हैं?

(ग) विज्ञान के चमत्कार इस विषय पर एक नोट लिखो।

२. कोष्ठकों में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो-

(क) यत्र ..... दृष्टिः गच्छति, तत्र विज्ञानस्य चमत्कारान् पश्यामः।

(अस्मासु, अस्माकं, वर्यं)

(ख) विद्युतः शक्त्या विविधानि यन्त्राणि .....

(गच्छन्ति, संभवन्ति, संचलन्ति)

(ग) औषधैः असाध्यानाम् अपि ..... उपचारः भवति।

(साधनानां, चमत्काराणां, रोगाणां)

(घ) दूर-भाषेण दूरे स्थिताः जनाः ..... कुर्वन्ति।

(परिवर्तनं, वार्तालापं, आविष्कारं)

३. अव्ययों का संस्कृत में वाक्यों में प्रयोग करो:-

अधुना, यत्र, तत्र, वा, च।

४. संस्कृत में उत्तर लिखो।

(क) विज्ञानेन मानवस्य जीवनं कीदृशं भवति?

(ख) दूरे स्थिताः जनाः केन यन्त्रेण वार्तालापं कुर्वन्ति?

(ग) जनाः केन साधनेन आकाशमार्गेण सुदूरं गच्छन्ति?



सप्तविंशः पाठः

## भारत-कोकिला सरोजिनी

कोकिल-कण्ठा, कवयित्री, सुवक्त्री, राष्ट्रनेत्री, श्रीमती सरोजिनी नायडूः परम-गुणवती महिला आसीत्। सा हैदराबाद-नगरे जन्म अलभत्। तस्याः पिता अघोरनाथः परम मेधावी आसीत्। स वैज्ञानिकः, अनेक भाषाविज्ञः, कविः च आसीत्। तस्याः माता अपि अनेक-भाषासु पारंगता आसीत्।

सरोजिनी विलक्षणया प्रतिभया सम्पन्ना आसीत्। द्वादश-वर्ष-देशीया एव सा मैट्रिक-परीक्षाम् उदतरत्। त्रयोदश-वर्ष-देशीया तु सा आङ्गल-भाषायाः मनोरमाम् एकां कविताम् अरचयत्। षोडशे वर्षे प्राप्ते सा उच्च-शिक्षाम् अधिगन्तुम् आङ्गल-देशम् अगच्छत्। आत्मनः कवित्व-प्रतिभया, मधुरया गिरा, सदाचार-गुणैः च सा तत्र आङ्गल-प्राध्यापकानां बहुमता अभवत्।

स्वदेशं प्रत्यागत्य महात्मा-गान्धिनः प्रभावेण सा भारतस्य स्वतंत्रता-संग्रामे भागम् अगृह्णात्। लवण-सत्याग्रह-समये सा तेन सह अत्यन्तं सहयोगम् अकरोत्।

भारतीय-स्त्रीणाम् उद्बोधनाय अपि सा सततम् अयतत। सा भारतीय-महिला सम्मेलनस्य प्रधान-पदम् अपि अलंकृतवती।

सर्वाः जातयः, सर्वे सम्प्रदायाः सर्वे च वर्गाः तस्याः कृते समानाः आसन्। तेषां भेदे सा विश्वासं न अकरोत्। स्वयं सा विजातीयेन युवकेन सह विवाहं कृतवती। हरिजनानाम् उन्नतये अपि सा निरन्तरं यत्नम् अकरोत्।

तस्याः कवि प्रतिभा अनेकासु सुन्दर-कवितासु प्रकटी-भूता। भाषण-कलायाम् अपि सा अति-दक्ष आसीत्। कोकिला इव सा निजेन-मधुरेण कण्ठ-स्वरेण श्रोतृन् मुग्धान् अकरोत्। अतः जनैः सा 'भारत कोकिला' इति अभिधानेन विभूषिता।

1947 तमे ईसाब्दे भारते स्वतन्त्रे जाते, श्रीमति सरोजिनी नायडूः उत्तर-

प्रदेशस्य राज्यपाल-पदम् अवहत्। 1949-तमे ईसाब्दे भारत-कोकिलायाः मधुरः  
कण्ठ स्वरः सर्व-कालाय विरामम् अगच्छत्।

### शब्दार्थः

|                            |                                 |
|----------------------------|---------------------------------|
| कोकिल-कण्ठा = कोयल के समान | मुग्ध = मस्त                    |
| (मधुर) गले वाली            | अभिधानेन = नाम से               |
| मेधावी = बुद्धिमान्        | पारंगतः = निपुण                 |
| विलक्षण = अद्भुत           | अवहत् = (√वह लङ् प्र., ए.,) वहन |
| गिरा = वाणी से             | किया, धारण किया                 |
| बहुमता = बहुत आदृत         | सर्वकालाय = सदा के लिए          |
| उद्बोधनाय = जागृति के लिए  | श्रोतृन् = सुनने वालों को       |
| विरामम् अगच्छत् = रुक गया, |                                 |
| बन्द हो गया                |                                 |

विभागाः

### अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो -
  - (क) सरोजिनी नायडू को और किस नाम से जाना जाता है ?
  - (ख) सरोजिनी ने समाज सुधार के क्या-क्या काम किए ?
  - (ग) सरोजिनी की विलक्षण प्रतिभा के दो उदाहरण दो।
  - (घ) भारत की स्वतंत्रता के बाद सरोजिनी ने किस पद को संभाला ?
- रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—
  - (क) सा मधुरेण ..... श्रोतृन् मुग्धान् अकरोत्।
  - (ख) सा भारतीय-महिला-सम्मेलनस्य ..... अलंकृतवती।
  - (ग) सर्वे वर्गाः तस्याः कृते ..... आसन्
- यथानिर्दिष्ट लंकार-परिवर्तन करो
  - (क) सा प्राध्यापकानां बहुमता अभवत्। (लुट् में)



(ख) तस्याः पिता कविः आसीत्। (लट् में)

(ग) सा आंग्ल-देशम् अगच्छत्। (लृट् में)

४. संस्कृत में उत्तर लिखो-

(क) सरोजिनी नायडूः कुत्र जन्म अलभत ?

(ख) सरोजिन्याः पितुः नाम किम् आसीत् ?

(ग) सरोजिनी नायडूः कस्मिन् सत्याग्रहे गान्धिना सह सहयोगम् अकरोत् ?

(घ) सरोजिनी नायडूः कस्य प्रदेशस्य राज्यपालपदम् अवहत् ?





## यक्ष-युधिष्ठिरयोः संवादः

- यक्षः केनस्विच्छ्रोत्रियो भवति ? केनस्विद् विदन्ते महत् ?  
केनस्विद् द्वितीयवान् भवति ? राजन् केन च बुद्धिमान् ?
- युधि० श्रुतेन श्रोत्रियो भवति, तपसा विन्दते महत् ।  
धृत्या द्वितीयवान् भवति, बुद्धिमान् वृद्ध-सेवया ॥
- यक्षः किं स्विद् गुरुतरं भूमेः ? किंस्विद् उच्चतरं च खात् ?  
किंस्विच्छीघ्रतरं वायोः ? किंस्विद् लघुतरं तृणात् ? ॥
- युधि० माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा ।  
मनः शीघ्रतरं वाताद्, अर्थो लघुतरस् तृणात् ।
- यक्षः किंस्वित् प्रवसतो मित्रं ? किंस्विन् मित्रं गृहे सतः ?  
आतुरस्य च किं मित्रं ? किंस्विन् मित्रं मरिष्यतः ?
- युधि० सार्थः प्रवसतो मित्रं, भार्या मित्रं गृहे सतः ।  
आतुरस्य भिषक् मित्रं, दानं मित्रं मरिष्यतः ॥
- यक्षः किंस्विद् एको विचरते ? जातः को जायते पुनः ?  
किंस्विद् हिमस्य भैषज्यं ? किंस्विद् आवपनं महत् ?
- युधि० सूर्य एको विचरते, चन्द्रमा जायते पुनः ।  
अग्निर्हिमस्य भैषज्यं, भूमिरावपनं महत् ॥
- यक्षः किं नु हित्वा प्रियो भवति ? किं नु हित्वा न शोचति ? ।  
किं नु हित्वाऽर्थवान् भवति ? किं नु हित्वा सुखी भवेत् ? ॥
- युधि० मानं हित्वा प्रियो भवति, क्रोधं हित्वा न शोचति ? ।  
कामं हित्वाऽर्थवान् भवति, लोभं हित्वा सुखी भवेत् ॥
- यक्षः कः शत्रुर् दुर्जयः पुसां ? कश्च व्याधिरनन्तकः ?  
कौदृशश्च स्मृतः साधुः ? असाधुः कीदृशः स्मृतः ? ॥
- युधि० क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुर्, लोभो व्याधिरनन्तकः ।  
सर्व-भूत-हितरतः साधुर् असाधुर्निर्दयः स्मृतः ॥

### शब्दार्थः

|                                  |                                         |
|----------------------------------|-----------------------------------------|
| श्रोत्रियः = विद्वान्            | हित्वा = (√हा, क्त्वा) छोड़कर, त्याग कर |
| महत् = महत् पद, उच्च पद          | द्वितीयवान् = दूसरे (साथी) से युक्त     |
| अर्थवान् = धनवान्, धनी           | खात् = ख अर्थात् आकाश से                |
| कामम् = इच्छा को                 | लघुतरम् = अधिक हल्का                    |
| अनन्तकः = अन्त रहित, असाध्य      | अर्थी = भिखारी, याचक                    |
| सर्व-भूत-हितः = सभी प्राणियों का | प्रवसतः = प्रवासी अथवा विदेश गए         |
| हित करने वाला                    | (व्यक्ति) का                            |
| आतुरस्य = रोगी का                | भिषक् = वैद्य                           |
| आवपनम् = क्षेत्र, स्थान          |                                         |

### अभ्यास

- हिन्दी में उत्तर लिखो ?
  - युधिष्ठिर के अनुसार किन पदार्थों का त्याग करके मनुष्य क्रमशः लोकप्रिय, शोकरहित, धनवान् एवं सुखी बनता है ?
  - युधिष्ठिर के अनुसार साधु और असाधु का क्या लक्षण है ? मोह और आलस्य किसे कहते हैं ?
  - संसार में धरती से अधिक भारी, आकाश से अधिक ऊँचा, वायु से अधिक वेगवान् और तिनके से अधिक हल्की वस्तु क्या है ?
  - इस पाठ में से किन्हीं दो पद्यों को कण्ठस्थ करो।
- कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो-
  - श्रुतेन.....भवति (श्रोत्रियः, बुद्धिमान्)।
  - .....शीघ्रतरं वायोः (जलम्, ज्योतिः, मनः)।
  - ..... एको विचरते (चन्द्रः, वायुः, सूर्यः)।
  - कामं हित्वा .....भवति (सुखी, प्रियः, अर्थवान्)।
- निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद करो-  
पितोच्चतरः। हित्त्वार्थवान्। कीदृशश्च। मानस्तु। आत्माभिमानिता।
- अव्ययों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करो-  
पुनः, किम्, शीघ्रम्, सर्वत्र।



## नवविंशः पाठः

### भारतम्

एशिया-महाद्वीपस्य दक्षिण-भागे स्थितः विस्तृतः भू-भागः भारतम् अस्माकं देशः । अस्मिन् देशे बहवः रम्याः प्रदेशाः, हिमालयादयः तुङ्गाः पर्वताः, गङ्गाद्याः च सुजलाः नद्यः सन्ति । अत्र खलु रामः, कृष्णः, महावीरः, बुद्धः, शङ्कराचार्यः, चैतन्यः, कबीरः, नानकः, दयानन्दः, विवेकानन्दः, अन्ये च बहवः महापुरुषाः अभवन् । ते स्वकीयैः चरितैः अस्य देशस्य संस्कृतेः निर्माणम् अकुर्वन् । केचित् महापुरुषाः सागराणाम् अपि पारं गत्वा इमां संस्कृतिं प्रासारयन् ।

परस्परं द्वेष-कारणात्, संघ-शक्तेः च अभावात् अयं देशः परतंत्रतां गतः । बहूनां संघर्षाणाम् अन्ते 1947 तमे ईसाब्दे अगस्त मासस्य पंचदशे दिवसे अयं देशः स्वतंत्रः अभवत्, पुनरपि च स्वकीयं गौरवम् अलभत् । एतत् तु महात्मा-गान्धिनः, जवाहरलाल-नेहरुः, सरदार पटेलस्य, लालबहादुर-शास्त्रिणः, अन्येषां च नेतृणां सततस्य परिश्रमस्य फलम् । स्वतंत्रता-संग्रामे लाजपतरायः, भगत सिंहः अन्ये च बहवः देश-वीराः स्वप्राणान् अपि अत्यजन् । इमे राष्ट्र-वीराः अस्माकं श्रद्धां सम्मानं च अर्हन्ति ।

साम्प्रतं वयं भारतस्य नव-निर्माणे संलग्नाः स्मः । प्रतिवर्षं विद्यालयानां, महाविद्यालयानां, चिकित्सालयानां, शिल्पोद्योगानां च संख्या वर्धते । विद्युद्-दीपाः, राजमार्गान्, जनस्थानानि, गृहाणि च प्रकाशयन्ति । कुल्यानां नलकूपानां च जलं क्षेत्राणि सिंचति, शस्य-श्यामलानि च करोति ।

स्वतंत्रम् अस्माकं राष्ट्रं प्रजातंत्रात्मकम् अस्ति । अत्र हि शासनं सर्व-जनहिताय अस्ति । सम्प्रति वयं देश-निर्माणं कार्यं सोत्साहं व्यापृताः स्याम इति सर्वेषाम् अपि अस्माकं परमं पवित्रं च कर्तव्यम् अस्ति ।

### शब्दार्थः

रम्याः = सुन्दर, आकर्षक

तुङ्गाः = उँचे

सुजलाः = सुन्दर जल वाली (नदियाँ)

प्रासारयन् = फैलाया, प्रसारित किया

जनस्थानानि = सार्वजनिक स्थानों को

कुल्यानाम् = नहरों का

शस्य श्यामलानि = फसलों से हरे-

भरे (खेतों की)

नलकूपाः = द्यूबवैल

प्रजातन्त्रात्मकम् = प्रजातंत्र पर  
आधारित

शिल्पोद्योगानाम् = शिल्पों और उद्योगों का

सोत्साहम् = उत्साह-पूर्वक

व्यापृताः स्याम = (हम) लग जाएं

### अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो-
  - (क) हमारा देश किस महाद्वीप में स्थित है ?
  - (ख) भारत के किन्हीं पांच महापुरुषों के नाम लिखो।
  - (ग) देश की स्वतंत्रता के लिए जिन महापुरुषों ने अपने प्राण भी दे दिए, उनमें से किन्हीं दो के नाम लिखो।
२. कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो-
  - (क) अस्मिन् देशे तुङ्गा..... सन्ति। (नद्याः, पर्वताः, पुरुषाः)
  - (ख) केचित्..... सागराणाम् अपि चारं गत्वा इमां संस्कृतिं प्रासारयन्। (बालाः, महापुरुषाः)
  - (ग) अद्य.....स्वतंत्राः स्मः। (अहम्, आवाम्, वयम्)
३. सन्धि विच्छेद करो-
  - क. हिमालयादयः, शिल्पोद्योगाः, विद्यालयः।
  - (ख) धातु और प्रत्यय अलग अलग करके लिखो-  
गत्वा, पठित्वा, दृष्ट्वा, पीत्वा।
४. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो-
  - (क) एतत् तु नेतृणां परिश्रमस्य फलानि।
  - (ख) अत्र सुजला नदी सन्ति।
  - (ग) प्रतिवर्षं विद्यालयानां संख्या वर्धन्ते।
५. संस्कृत में उत्तर लिखो
  - (क) अस्माकं देशः कुत्र स्थितः अस्ति ?
  - (ख) अस्माकं देशे के महापुरुषाः अभवन् ?
  - (ग) स्वतन्त्रम् अस्माकं राष्ट्रं कीदृशम् अस्ति ?



त्रिंशः पाठः

## अन्त्याक्षरी

अद्यः रम्यः दिवसः । गगने मेघा विचरन्ति । मेघैः आच्छन्नः सूर्यः न तपति ।  
सुरम्यः, पवनः मन्दं मन्दं वहति । छात्राः विद्यालयस्य प्रांगणे सम्मिलन्ति । अद्य तेषां  
बाल-सभा भवति । मंचे मुख्याध्यापकः, अध्यापकाः च उपविशन्ति । अन्त्याक्षरी-  
प्रतियोगितायै अष्ट छात्राः तेषां दक्षिण-भागे, अष्ट च तेषां वाम-भागे तिष्ठन्ति ।  
पर्यायेण उभयोः वर्गयोः एकैकः छात्रः एकैकः श्लोकं सस्वरं गावति । पूर्व श्लोकस्य  
अन्तिमः अक्षरः अपरश्लोकस्य आदौ प्रयुक्तः भवति । सर्वे छात्राः कुतूहलेन  
आकर्णयन्ति ।

राजवीरः      अविचार्य न वक्तव्यं, वक्तव्यं सुविचारितम् ।  
ननु तत्रैव वक्तव्यं, यत्रोक्तं सफलं भवेत् ॥      (त)

सर्वे छात्राः      अहहा ! अहहा ! पुनरपि, पुनरपि पठ ।  
(राजवीरः तम् एव श्लोकं पुनः पठति)

राजेशः (त)      त्वमेव माता च पिता त्वमेव,  
                                 त्वमेव बन्धुश्च, सखा त्वमेव ।  
                                 त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव,  
                                 त्वमेव सर्वं मम, देव, देव ॥      (व)

राकेशः (व)      विद्या विवादाय, धनं मदाय,  
                                 शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।  
                                 खलस्य, साधोः विपरीतमेतद्  
                                 ज्ञानाय, दानाय च रक्षणाय ॥      (य)

दिनेशः (य)      यथा देशस्तथा वेषः, यथा राजा तथा प्रजा ।  
                                 यथा क्षेत्रं तथा सस्यं, यथा बीजं तथा फलम् ॥      (ल)

आलोकः (ल)      लोभो मूलं विनाशस्य, लोभात् कामो विवर्धते ।  
                                 कामात् क्रोधम्, ततो मोहः, मोहाद् लोको विनश्यति ॥ (त)



- विवेकः (त) "तैलाद् रक्षेद्, जलाद् रक्षेद्, रक्षेत् शिथिल-बन्धनात् ।  
मूर्ख-हस्ते न दातव्यम्", एवं वदति पुस्तकम् ॥ (क)
- शशांकः (क) कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम् ।  
को विदेशः सविद्यानां, कः परः प्रिय-वादिनाम् ॥ (न)
- सुवीरः (न) नास्ति विद्या-समो बन्धु, न च सत्य-समः सखा ।  
नास्ति रोग-समं दुखं, न च त्याग-समं सुखम् ॥ (ख)
- लोकेशः (ख) खलः सर्प-मात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति । (त)  
आत्मनो बिल्व मात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ।
- प्रकाशः (त) तास्तु वाचः सभाः योग्याः, याश्चित्ताकर्षण क्षमाः ।  
मित्रामित्र-तटस्थानां, ज्ञानाज्ञानवतामपि । (प)
- प्रदीपः (प) पुस्तकस्था तु या विद्या, पर हस्त-गतं धनम् ।  
कार्यकाले समुत्पन्ने, न सा विद्या, न तद् धनम् ॥ (न)
- सन्दीपः (न) न कश्चिदपि जानाति, किं कस्य श्वो भविष्यति ।  
अतः श्वः करणीयानि कुर्यादद्यैव सन्मति ॥ (त)
- नीरजः (त) तस्य संकुचिता बुद्धिः घृत बिन्दुर्यथा जले ।  
यो न संचरते देशान्, पण्डितान् सेवते न यः । (य)
- प्रवीरः (य) यस्तु संचरते देशान्, सेवते यश्च पण्डितान् ।  
तस्य बुद्धिर्विकसिता, तैल-बिन्दुर्यथा जले ॥ (ल)
- प्रबोधः (ल) लभ्यन्ते पुरुषाः राजन्, सततं प्रियवादिनः ।  
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥ (भ)
- राजसिंहः (भ) भ्रमराः रसमिच्छन्ति, व्रणमिच्छन्ति मक्षिकाः ।  
सज्जनाः गुणमिच्छन्ति दोषमिच्छन्ति दुर्जनाः ।

### शब्दार्थः

अन्त्याक्षरी = यह दो व्यक्तियों या दो वर्गों में बारी बारी से एक-एक श्लोक को उच्चारण करने की ऐसी प्रतियोगिता है, जिसमें पहले श्लोक का अंतिम अक्षर



दूसरे श्लोक के आदि में प्रयुक्त होता है, दूसरे श्लोक का अन्तिम अक्षर तीसरे श्लोक के आदि में, तीसरे का अन्तिम अक्षर चौथे के आदि में, इसी प्रकार यह क्रम अंत तक जारी रहता है। इस प्रतियोगिता में श्लोक के अंतिम व्यंजन को ही प्रायः लिया जाता है, स्वर, अनुस्वार (हलन्त् ) और विसर्ग को नहीं। अंतिम अक्षर पर आधारित होने से इस प्रतियोगिता को अन्त्याक्षरी कहते हैं।

### शब्दार्थः

|                                       |                                                  |
|---------------------------------------|--------------------------------------------------|
| रम्यः = सुहावनी                       | बिल्व-मात्राणि = बिल्व के फल जितने बड़े          |
| आच्छन्नः = ढका हुआ                    | सम्मिलन्ति = इकट्ठे होते हैं                     |
| पश्यन्तपि = (पश्यन् अपि) देखते हुए भी | मञ्जे = स्टेज पर                                 |
| दक्षिण = दाएं                         | वाचः = वचन                                       |
| वाम = बाएं                            | चिन्ताकर्षण-क्षमाः = मन को आकर्षित करने वाले     |
| पर्यायेण = बारी से                    | मित्रामित्र = मित्र और शत्रु                     |
| कुतूहलेन = उत्सुकता से                | तटस्थ = न मित्र न शत्रु, बेलाग                   |
| विवाद = बहस                           | श्वः = आने वाला कल                               |
| मद = घमण्ड                            | श्वः करणीयानि = कल को किए जाने वाले काम          |
| खल = दुष्ट                            | कुर्यादद्यैव = (कुर्यात् अद्य एव) आज ही कर लेवें |
| सत्यम् = फसल                          | व्यवसायी = परिश्रमी                              |
| मूलम् = जड़                           | प्रियवादी = मीठा बोलने वाला                      |
| मोहः = अज्ञान                         | सर्प-मात्राणि = सरसों, जितने, बहुत छोटे          |
| संकुचिता = सीमित, सिकुड़ी हुई         | वक्ता = बोलने वाला                               |
| संचरते = भ्रमण करता है                | व्रण = फोड़ा                                     |
| अप्रिय = कड़वा                        |                                                  |
| पथ्य = हितकर                          |                                                  |
| परच्छिद्राणि = दूसरे के दोषों को      |                                                  |

### अभ्यास

१. हिन्दी में उत्तर लिखो:-

(क) सज्जन अपनी विद्या, धन और शक्ति किस काम में लगाता है ?

(ख) पुस्तक अपने साथ कैसा व्यवहार चाहती है ?

(ग) बुद्धि के विकास के लिए क्या करना चाहिए ?

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:-

यथा देशः तथा ..... ।

यथा राजा तथा ..... ।

यथा ..... तथा फलम् ।

नास्ति रोग-समं ..... ।

३. कोई दो श्लोक कण्ठस्थ करो ।

४. अव्ययों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करो-

अतः, श्वः, ननु, यथा, तथा ।

५. सन्धिच्छेद करो-

अद्यैव । यस्तु । नास्ति । कश्चिदपि । तत्रैव ।



## व्याकरण-भाग:

वर्ण - उच्चारण की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं। संस्कृत में कुल उनचास वर्ण हैं। उनमें से तेरह स्वर हैं और छत्तीस व्यंजन हैं। स्वरों के उच्चारण में जिह्वा को मुख में किसी स्थान पर लगाना नहीं पड़ता। परन्तु व्यंजन के उच्चारण में जिह्वा का कोई भाग मुख के अन्दर किसी स्थान पर स्पर्श करता है, अथवा होंठ परस्पर स्पर्श करते हैं। इन वर्णों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जाता है :

### स्वर

ह्रस्व स्वर    अ    इ    उ    ऋ    लृ

दीर्घ स्वर    आ    ई    ऊ    ऋ    ए    ऐ    ओ    औ

### व्यंजन

#### स्पर्श व्यंजन

कवर्ग    क    ख    ग    घ    ङ

चवर्ग    च    छ    ज    झ    ञ

टवर्ग    ट    ठ    ड    ढ    ण

तवर्ग    त    थ    द    ध    न

पवर्ग    प    फ    ब    भ    म

अन्तःस्थ व्यंजन    य    र    ल    व

उष्म व्यंजन    श    ष    स    ह

अयोगवाह व्यंजन : ः (अनुस्वार), \* (अनुनासिक)

: (विसर्ग)

## सन्धि

दो वर्णों के अत्यन्त समीप बोले जाने पर, उनका एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। उनके इस परस्पर मेल से उनमें कुछ परिवर्तन हो जाता है। इसे सन्धि कहते हैं। यह तीन प्रकार की है-

१. स्वर-सन्धि : जब स्वर का मेल स्वर के साथ हो।
२. व्यंजन संधि : जब व्यंजन का मेल स्वर या व्यंजन के साथ हो।
३. विसर्ग-सन्धि : जब विसर्ग का मेल स्वर या व्यंजन के साथ हो।

### स्वर सन्धि

#### १. दीर्घ सन्धि

- (क) अ या आ + अ या आ = दोनों मिल कर दीर्घ आ
- (ख) इ या ई + इ या ई = दोनों मिलकर दीर्घ ई
- (ग) उ या ऊ + उ या ऊ = दोनों मिलकर दीर्घ ऊ
- (घ) ऋ या ॠ + ऋ या ॠ = दोनों मिलकर दीर्घ ॠ

#### उदाहरण

- |                           |                              |
|---------------------------|------------------------------|
| (क) च + अपि = चापि        | तथा + अपि = तथापि            |
| हिम = आलयः = हिमालयः      | दया + आनन्द = दयानन्द        |
| (ख) अपि + इदम् = अपीदम्   | कवि + ईश्वरः = कवीश्वरः      |
| मही + इन्द्रः = महीन्द्रः | मही + ईश = महीशः             |
| (ग) स + उक्तिः = सूक्तिः  | सिन्धु + ऊर्मि = सिन्धूर्मिः |
| वधू + उत्सवः = वधूत्सवः   | भू + ऊर्ध्वम् = भूध्वम्      |
| (घ) पितृ + ऋणम् = पितृणम् | मातृ + ऋणम् = मातृणम्        |
| पितृ + ऋद्धि = पितृद्धि   | मातृ + ऋद्धि = मातृद्धि      |

#### २. गुण सन्धि

- (क) अ या आ + इ या ई = दोनों मिलकर एक ए
- (ख) अ या आ + उ या ऊ = दोनों मिलकर एक ओ
- (ग) अ या आ + ऋ या ॠ = दोनों मिलकर एक अर्

### उदाहरण-

- (क) देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः      महा + इन्द्रः = महेन्द्रः  
 नर + ईशः = नरेशः      महा + ईशः = महेशः  
 (ख) हित + उपदेशः = हितोपदेशः      महा + उत्सवः = महोत्सवः  
 एक + ऊनः = एकोनः      गंगा + ऊर्मिः = गंगोर्मिः  
 (ग) राज + ऋषिः = राजर्षिः      वसन्त + ऋतुः = वसन्तर्तुः  
 महा + ऋषिः = महर्षिः      वर्षा + ऋतुः = वर्षर्तुः

### ३. वृद्धि-सन्धि

- (क) अ या आ + ए या ऐ = दोनों मिलकर ऐ  
 (ख) अ या आ + ओ या औ = दोनों मिलकर एक औ

### उदाहरण

- (क) एक + एकः = एकैकः      सदा + एव = सदैव  
 (ख) भारत + ऐक्यम् = भारतैक्यम्      महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्  
 (ग) गंगा + ओघः = गंगौघः      महा + ओषधम् = महौषधम्

### ४. यण् सन्धि

- (क) इ या ई + कोई भिन्न स्वर = केवल पूर्व स्वर को य्  
 (ख) उ या ऊ + कोई भिन्न स्वर = केवल पूर्व स्वर को व्  
 (ग) ऋ या ॠ + कोई भिन्न स्वर = केवल पूर्व स्वर को र्

### उदाहरण

- (क) यदि + अपि = यद्यपि      नदी + एषा = नद्येषा  
 प्रति + उपकारः = प्रत्युपकारः      देवी + आह = देव्याह  
 (ख) मधु + एतत् = मध्वेतत्      साधु + अपि = साध्वपि  
 भू + आदिः = भ्वादिः      वधू + इच्छा = वध्विच्छा  
 (ग) पितृ + आदेशः = पित्रादेशः      मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा  
 भ्रातृ + इच्छा = भ्रात्रिच्छा      कर्तृ + आदिः = कर्त्रादिः

## ५. अयादि-सन्धि

- (क) ए + कोई स्वर = पूर्व स्वर को अय्  
 (ख) ऐ + कोई स्वर = पूर्व स्वर को आय्  
 (ग) ओ + कोई स्वर = पूर्व स्वर को अव्  
 (घ) औ + कोई स्वर = पूर्व स्वर को आव्

### उदाहरण

- |                      |                    |
|----------------------|--------------------|
| (क) ने + अति = नयति  | ने + अनम् = नयनम्  |
| कवे + ए = कवये       | मुने + ए = मुनये   |
| (ख) गै + अति = गायति | गै + अनम् = गायनम् |
| गै = अकः = गायकः     | रै + ए = राये      |
| (ग) भो + अति = भवति  | भो + अनम् = भवनम्  |
| साधो + ए = साधवे     | गो + ए = गवे       |
| (घ) पौ + अकः = पावकः | नौ + इकः = नाविकः  |
| द्वौ + अपि = द्वापि  | नौ + औ = नावौ      |

## व्यंजन संधि

### १. खर् विधि

$$\left. \begin{array}{l} \text{वर्गों के तीसरे वर्ण} \\ \text{ग, ज, झ, ढ, ब} \end{array} \right\} + \left. \begin{array}{l} \text{वर्गों के पहले} \\ \text{या दूसरे वर्ण} \\ \text{(क, ख, च, छ,} \\ \text{ट, ठ, त, थ, प,} \\ \text{फ या श, ष, स)} \end{array} \right\} = \left\{ \begin{array}{l} \text{पूर्व वर्ण को अपने वर्ग} \\ \text{का पहला वर्ण} \\ \text{(क, च, ट, त, प,)} \end{array} \right.$$

### उदाहरण

- |                             |                             |
|-----------------------------|-----------------------------|
| अद् + ति = अत्ति            | शरद् + कथा = शरत्कथा ।      |
| विपद् + पतति = विपत् पतति । | हद् + कम्पते = हत् कम्पते । |

### २. जश् विधि

$$\left. \begin{array}{l} \text{वर्गों के पहले वर्ण} \\ \text{(क, च, ट, त, प)} \end{array} \right\} + \left. \begin{array}{l} \text{स्वर, वर्गों के तीसरे,} \\ \text{चौथे वर्ण,} \\ \text{(य, र, ल, व, ह)} \end{array} \right\} = \left\{ \begin{array}{l} \text{पूर्व वर्ण को अपने वर्ग} \\ \text{का तीसरा वर्ण} \\ \text{(ग, ज, झ, ढ, ब)} \end{array} \right.$$



### उदाहरण

वाक् + ईशः = वागीशः

ईदृक् + एव = ईदृगेव

जगत् + ईशः = जगदीशः

तत् + एव = तदेव

सत् + गतिः = सद्गतिः

सत् + धर्म = सद्धर्म

सम्राट् + राजते = सम्राड् राजते

अच् + अन्तः = अजन्तः

### ३. डम् विधि

वर्गों के पहले या तीसरे वर्ण } किसी वर्ग का } पूर्व वर्ण को अपने  
(क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, ह, ळ, ण, न, म) } + पाँचवाँ वर्ण } वर्ग का पाँचवाँ वर्ण  
(ङ, ञ, ण, न, म) } (ङ, ञ, ण, न, म)

### उदाहरण

वाक् + मयम् = वाङ्मयम्

षट् + मुखः = षण्मुखः

उत् + नतिः = उन्नतिः

जगत् + नाथ = जगन्नाथः

तद् + मयः = तन्मयः

सम्पद् + नः = सम्पन्नः

### ४. श्चुत्व विधि

स, तवर्ग, + श्, चवर्ग = पूर्व वर्ण को क्रमशः श् चवर्ग

### उदाहरण-

रामस् + शान्तः = रामश्शान्तः

पुनस् + च = पुनश्च

बालस् + चलति = बालश्चलति

तत् + च = तच्च

तद् + जयः = तज्जयः

शत्रुन् + जयति = शत्रूञ्जयति

### ५. घृत्व विधि

स्, तवर्ग + घ्, टवर्ग = पूर्व वर्ण को क्रमशः घ् टवर्ग।

### उदाहरण

बालस् + षष्ठः = बालष्षष्ठः

तस्यास् + टीका = तस्याष्टीका

तत् + टीका = तट्टीका

उद् + डीयते = उड्डीयते।

### ६. लत्व विधि

त, द् + ल् = पूर्व वर्ण को ल्

**उदाहरण**

उत् + लेखः = उल्लेखः

उत् + लंघनम् = उल्लंघनम्

तद् + लीनः = तल्लीनः

सुहृद् + लाभः = सुहृल्लाभः

**७. णत्व विधि**

(क) ऋ, ॠ, ष् + अपदान्त न = न को ण

(ख) ऋ, ॠ, ष् + स्वर, कवर्ग, पवर्ग, य, व, ह,

अनुस्वार + अपदान्त न = न को ण

**उदाहरण-**

(क) ऋ + नम् = ऋणम्      कर् + नः = कर्णः      कृष् + न = कृष्णः

(ख) नृपे + न = नृपेण      रामे + न = रामेण      हर्षे + न = हर्षेण

**विसर्ग सन्धि****१. लोप-विधि**

(क) अ + : + कोई भिन्न स्वर = विसर्ग का लोप

**उदाहरण-**

कः + आगच्छति = क आगच्छति      बालः + इच्छति = बाल इच्छति।

अतः + एव = अत एव      अर्जुनः + उवाच = अर्जुन उवाच

(क) आ + : + कोई स्वर, वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ग,

य, ॠ, ल, व, ह = विसर्ग का लोप

**उदाहरण-**

छात्राः + आगच्छन्ति = छात्रा आगच्छन्ति      बालाः + इच्छन्ति = बाला इच्छन्ति

अश्वाः + धावन्ति = अश्वा धावन्ति      नराः + यान्ति = नरा यान्ति

बालाः + हसन्ति = बाला हसन्ति      जनाः + गताः = जना गताः

**२. सत्व विधि**

: + त्, थ्, स् = विसर्ग को स्

**उदाहरण-**

नमः + ते = नमस्ते

सूर्यः + तपति = सूर्यस्तपति

सरलः + थकारः = सरलस्थकारः

कृष्ण + सर्पः = कृष्णस्सर्पः

बालः + तथा = बालस्तथा

नरः + तरति = नरस्तरति

बालः + थूत्करोति = बालस्थूत्करोति

कः + सेवते = कस्सेवते

**३. शत्व -विधि**

: + च, छ, श् = विसर्ग को श्

**उदाहरण-**

पुनः + च = पुनश्च

मुनिः + छात्रः = मुनिश्छात्रः

एकः + शिशुः = एकश्शिशुः

बालः + चलति = बालश्चलति

तरोः + छाया = तरोश्छाया

बालः + शेते = बालश्शेते

**४. उत्त्व विधि**

(क) अ + : + अ = विसर्ग को उ,

पूर्व अ और उ मिलकर ओ तथा ओ में पर अ मिलकर ओऽ

**उदाहरण-**

कः + अपि = कोऽपि

बालः + अयम् = बालोऽयम्

(ख) अ + : + वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण,

य, र, ल, व् ह = विसर्ग को उ (अ + उ = ओ)

**उदाहरण-**

नरः + गच्छति = नरोगच्छति

शिष्यः + नमति = शिष्यो नमति

बालः + रोदति = बालो रोदति

अश्वः + धावति = अश्वो धावति

देवः + याति = देवो याति

रामः + हसति = रामो हसति

**नाम पद** - प्राणियों और वस्तुओं के नाम- शब्दों को नाम पद कहते हैं।

**विभक्ति** - किसी नाम पद का सम्बन्ध दूसरे नाम-पद या क्रिया-पद के साथ बताने के लिए, नाम-पद को कई रूप दिए जाते हैं। इन रूपों को आठ वर्गों में विभक्त किया जाता है। अतः इन्हें विभक्ति कहते हैं। इनके विशेष नियम अनुवाद-भाग में उदाहरणों द्वारा समझे जाएंगे। यहाँ पर इन विभक्तियों के नाम और साधारण अर्थ दिए जा रहे हैं।

### विभक्ति का नाम

### साधारण अर्थ

|             |                          |
|-------------|--------------------------|
| १. प्रथमा   | ने                       |
| २. द्वितीया | को                       |
| ३. तृतीया   | से, के द्वारा, के साथ    |
| ४. चतुर्थी  | के लिए                   |
| ५. पंचमी    | से (पृथक्ता के अर्थ में) |
| ६. षष्ठी    | का, के, की               |
| ७. सप्तमी   | में, पर                  |
| ८. सम्बोधन  | हे, रे, ओ                |

**वचन** - एक पदार्थ बताने के लिए नाम-पद को एकवचन, दो के लिए द्विवचन और तीन या तीन से अधिक पदार्थ बताने के लिए बहुवचन का रूप दिया जाता है ।

### रूपावली

भिन्न-भिन्न लिंगों के नाम-पदों के रूप सब विभक्तियों और वचनों में नीचे दिए जाते हैं-

### पुंलिंग अकारान्त

खग = पक्षी

|          | एक वचन  | द्विवचन   | बहुवचन    |
|----------|---------|-----------|-----------|
| प्रथमा   | खगः     | खगौ       | खगाः      |
| द्वितीया | खगम्    | खगौ       | खगान्     |
| तृतीया   | खगेन    | खगाभ्याम् | खगैः      |
| चतुर्थी  | खगाय    | खगाभ्याम् | खगेभ्यः   |
| पंचमी    | खगात्   | खगाभ्याम् | खगेभ्यः   |
| षष्ठी    | खगस्य   | खगयोः     | खगानाम्   |
| सप्तमी   | खगे     | खगयोः     | खगेषु     |
| सम्बोधन  | हे खग ! | हे खगौ !  | हे खगाः ! |

## छात्र-विद्यार्थी

|       | एक वचन     | द्विवचन      | बहुवचन       |
|-------|------------|--------------|--------------|
| प्र०  | छात्रः     | छात्रौ       | छात्राः      |
| द्वि० | छात्रम्    | छात्रौ       | छात्रान्     |
| तृ०   | छात्रेण    | छात्राभ्याम् | छात्रैः      |
| च०    | छात्राय    | छात्राभ्याम् | छात्रेभ्यः   |
| पं०   | छात्रात्   | छात्राभ्याम् | छात्रेभ्यः   |
| ष०    | छात्रस्य   | छात्रयोः     | छात्राणाम्   |
| स०    | छात्रे     | छात्रयोः     | छात्रेषु     |
| सं०   | हे छात्र ! | हे छात्रौ !  | हे छात्राः ! |

इस शब्द के रूप खग की भाँति हैं। केवल दो रूपों, छात्रेण (३एक०,) छात्राणाम्, (६-बहु०) में णत्व-विधि से न को ण हो जाता है।

## पुंलिङ्ग इकरान्त

कवि = कविता रचने वाला

|       | कविः     | कवी       | कवयः      |
|-------|----------|-----------|-----------|
| प्र०  | कविम्    | कवी       | कवीन्     |
| द्वि० | कविना    | कविभ्याम् | कविभिः    |
| तृ०   | कवये     | कविभ्याम् | कविभ्यः   |
| च०    | कवेः     | कविभ्याम् | कविभ्यः   |
| पं०   | कवेः     | कव्योः    | कवीनाम्   |
| ष०    | कवौ      | कव्योः    | कविषु     |
| स०    | हे कवे ! | हे कवी !  | हे कवयः ! |

रवि=सूर्य

|       | रविः  | रवी       | रवयः    |
|-------|-------|-----------|---------|
| प्र०  | रविम् | रवी       | रवीन्   |
| द्वि० | रविणा | रविभ्याम् | रविभिः  |
| तृ०   | रवये  | रविभ्याम् | रविभ्यः |
| च०    |       |           |         |

|     |          |           |           |
|-----|----------|-----------|-----------|
| प०  | रवेः     | रविभ्याम् | रविभ्यः   |
| ष०  | रवेः     | रव्योः    | रवीणाम्   |
| स०  | रवौ      | रव्योः    | रविषु     |
| सं० | हे रवे ! | हे रवी !  | हे रवयः ! |

पुंलिंग, उकरान्त

### भानु = सूर्य

|       |           |            |            |
|-------|-----------|------------|------------|
| प्र०  | भानुः     | भानू       | भानवः      |
| द्वि० | भानुम्    | भानू       | भानून्     |
| तृ०   | भानुना    | भानुभ्याम् | भानुभिः    |
| च०    | भानवे     | भानुभ्याम् | भानुभ्यः   |
| प०    | भानोः     | भानुभ्याम् | भानुभ्यः   |
| ष०    | भानोः     | भान्वोः    | भानूनाम्   |
| स०    | भानौ      | भान्वोः    | भानुषु     |
| सं०   | हे भानो ! | हे भानू !  | हे भानवः ! |

### गुरु = अध्यापक

|       |           |            |            |
|-------|-----------|------------|------------|
| प्र०  | गुरुः     | गुरू       | गुरवः      |
| द्वि० | गुरुम्    | गुरू       | गुरून्     |
| तृ०   | गुरुणा    | गुरुभ्याम् | गुरुभिः    |
| च०    | गुरवे     | गुरुभ्याम् | गुरुभ्यः   |
| प०    | गुरोः     | गुरुभ्याम् | गुरुभ्यः   |
| ष०    | गुरोः     | गुर्वोः    | गुरूणाम्   |
| स०    | गुरौ      | गुर्वोः    | गुरुषु     |
| सं०   | हे गुरो ! | हे गुरू !  | हे गुरवः ! |

पुंलिंग, ऋकारान्त

### दातृ = देने वाला

|       |         |        |        |
|-------|---------|--------|--------|
| प्र०  | दाता    | दातारौ | दातारः |
| द्वि० | दातारम् | दातारौ | दातृन् |



|     |           |             |             |
|-----|-----------|-------------|-------------|
| तृ० | दात्रा    | दातृभ्याम्  | दातृभिः     |
| च०  | दात्रे    | दातृभ्याम्  | दातृभ्यः    |
| पं० | दातुः     | दातृभ्याम्  | दातृभ्यः    |
| ष०  | दातुः     | दात्रोः     | दातृणाम्    |
| स०  | दातरि     | दात्रोः     | दातृषु      |
| सं० | हे दातः ! | हे दातारौ ! | हे दातारः ! |

### भ्रातृ = भाई

|       |             |              |              |
|-------|-------------|--------------|--------------|
| प्र०  | भ्राता      | भ्रातरौ      | भ्रातरः      |
| द्वि० | भ्रातरम्    | भ्रातरौ      | भ्रातृन्     |
| तृ०   | भ्रात्रा    | भ्रातृभ्याम् | भ्रातृभिः    |
| च०    | भ्रात्रे    | भ्रातृभ्याम् | भ्रातृभ्यः   |
| पं०   | भ्रातुः     | भ्रातृभ्याम् | भ्रातृभ्यः   |
| ष०    | भ्रातुः     | भ्रात्रोः    | भ्रातृणाम्   |
| स०    | भ्रातरि     | भ्रात्रोः    | भ्रातृषु     |
| सं०   | हे भ्रातः ! | हे भ्रातरौ ! | हे भ्रातरः ! |

### स्त्रीलिंग, आकारांत

### शाला = घर

|       |           |            |            |
|-------|-----------|------------|------------|
| प्र०  | शाला      | शाले       | शालाः      |
| द्वि० | शालाम्    | शाले       | शालाः      |
| तृ०   | शालया     | शालाभ्याम् | शालाभिः    |
| च०    | शालायै    | शालाभ्याम् | शालाभ्यः   |
| पं०   | शालायाः   | शालाभ्याम् | शालाभ्यः   |
| ष०    | शालायाः   | शालयोः     | शालानाम्   |
| स०    | शालायाम्  | शालयोः     | शालासु     |
| सं०   | हे शाले ! | हे शाले !  | हे शालाः ! |

## गंगा = गंगा नदी

|       |           |            |           |
|-------|-----------|------------|-----------|
| प्र०  | गंगा      | गंगे       | गंगा:     |
| द्वि० | गंगाम्    | गंगे       | गंगा:     |
| तृ०   | गंगया     | गंगाभ्याम् | गंगाभिः   |
| च०    | गंगायै    | गंगाभ्याम् | गंगाभ्यः  |
| पं०   | गंगायाः   | गंगाभ्याम् | गंगाभ्यः  |
| ष०    | गंगायाः   | गंगयोः     | गंगानाम्  |
| स०    | गंगायाम्  | गंगयोः     | गंगासु    |
| सं०   | हे गंगे ! | हे गंगे !  | हे गंगा ! |

## प्रभा = चमक

|       |            |             |             |
|-------|------------|-------------|-------------|
| प्र०  | प्रभा      | प्रभे       | प्रभा:      |
| द्वि० | प्रभाम्    | प्रभे       | प्रभा:      |
| तृ०   | प्रभया     | प्रभाभ्याम् | प्रभाभिः    |
| च०    | प्रभयै     | प्रभाभ्याम् | प्रभाभ्यः   |
| पं०   | प्रभायाः   | प्रभाभ्याम् | प्रभाभ्यः   |
| ष०    | प्रभायाः   | प्रभयोः     | प्रभाणाम्   |
| स०    | प्रभायाम्  | प्रभयोः     | प्रभासु     |
| सं०   | हे प्रभे ! | हे प्रभे !  | हे प्रभा: ! |

## स्त्रीलिंग, इकारांत

## मति = बुद्धि

|       |          |           |           |
|-------|----------|-----------|-----------|
| प्र०  | मतिः     | मती       | मतयः      |
| द्वि० | मतिम्    | मती       | मती:      |
| तृ०   | मत्या    | मतिभ्याम् | मतिभिः    |
| च०    | मतये     | मतिभ्याम् | मतिभ्यः   |
| पं०   | मतेः     | मतिभ्याम् | मतिभ्यः   |
| ष०    | मतेः     | मत्योः    | मतीनाम्   |
| स०    | मतौ      | मत्योः    | मतिषु     |
| सं०   | हे मते ! | हे मती !  | हे मतयः ! |

## रीति = ढंग

|       |           |            |            |
|-------|-----------|------------|------------|
| प्र०  | रीतिः     | रीती       | रीतयः      |
| द्वि० | रीतिम्    | रीती       | रीतीः      |
| तृ०   | रीत्या    | रीतिभ्याम् | रीतिभिः    |
| च०    | रीतये     | रीतिभ्याम् | रीतिभ्यः   |
| पं०   | रीतेः     | रीतिभ्याम् | रीतिभ्यः   |
| ष०    | रीतेः     | रीत्योः    | रीतीनाम्   |
| स०    | रीतौ      | रीत्योः    | रीतिषु     |
| सं०   | हे रीते ! | हे रीती !  | हे रीतयः ! |

स्त्रीलिङ्ग ईकरान्त

## नदी = दरिया

|       |          |            |            |
|-------|----------|------------|------------|
| प्र०  | नदी      | नद्यौ      | नद्यः      |
| द्वि० | नदीम्    | नद्यौ      | नदीः       |
| तृ०   | नद्या    | नदीभ्याम्  | नदीभिः     |
| च०    | नद्यै    | नदीभ्याम्  | नदीभ्यः    |
| पं०   | नद्याः   | नदीभ्याम्  | नदीभ्यः    |
| ष०    | नद्याः   | नद्योः     | नदीनाम्    |
| स०    | नद्याम्  | नद्योः     | नदीषु      |
| सं०   | हे नदि ! | हे नद्यौ ! | हे नद्यः ! |

## नारी = स्त्री

|       |           |             |             |
|-------|-----------|-------------|-------------|
| प्र०  | नारी      | नार्यौ      | नार्यः      |
| द्वि० | नारीम्    | नार्यौ      | नारीः       |
| तृ०   | नार्या    | नारीभ्याम्  | नारीभिः     |
| च०    | नार्यै    | नारीभ्याम्  | नारीभ्यः    |
| पं०   | नार्याः   | नारीभ्याम्  | नारीभ्यः    |
| ष०    | नार्याः   | नार्योः     | नारीणाम्    |
| स०    | नार्याम्  | नार्योः     | नारीषु      |
| सं०   | हे नारि ! | हे नार्यौ ! | हे नार्यः ! |

## स्त्रीलिंग, उकारांत

धेनु = गौ

|       |           |            |            |
|-------|-----------|------------|------------|
| प्र०  | धेनुः     | धेनू       | धेनवः      |
| द्वि० | धेनुम्    | धेनू       | धेनूः      |
| तृ०   | धेन्वा    | धेनुभ्याम् | धेनुभिः    |
| च०    | धेनवे     | धेनुभ्याम् | धेनुभ्यः   |
| पं०   | धेनोः     | धेनुभ्याम् | धेनुभ्यः   |
| ष०    | धेनोः     | धेन्वोः    | धेनूनाम्   |
| स०    | धेनौ      | धेन्वोः    | धेनुषु     |
| सं०   | हे धेनो ! | हे धेनू !  | हे धेनवः ! |

## स्त्रीलिंग, ऋकारान्त

मातृ = माँ

|       |           |            |            |
|-------|-----------|------------|------------|
| प्र०  | माता      | मातरौ      | मातरः      |
| द्वि० | मातरम्    | मातरौ      | मातृः      |
| तृ०   | मात्रा    | मातृभ्याम् | मातृभिः    |
| च०    | मात्रे    | मातृभ्याम् | मातृभ्यः   |
| पं०   | मातुः     | मातृभ्याम् | मातृभ्यः   |
| ष०    | मातुः     | मात्रोः    | मातृणाम्   |
| स०    | मातरि     | मात्रोः    | मातृषु     |
| सं०   | हे मातः ! | हे मातरौ ! | हे मातरः ! |

स्वसृ = बहिन

|       |            |              |              |
|-------|------------|--------------|--------------|
| प्र०  | स्वसा      | स्वसारौ      | स्वसारः      |
| द्वि० | स्वसारम्   | स्वसारौ      | स्वसृः       |
| तृ०   | स्वस्रा    | स्वसृभ्याम्  | स्वसृभिः     |
| च०    | स्वस्रे    | स्वसृभ्याम्  | स्वसृभ्यः    |
| पं०   | स्वसुः     | स्वसृभ्याम्  | स्वसृभ्यः    |
| ष०    | स्वसुः     | स्वस्रोः     | स्वसृणाम्    |
| स०    | स्वसरि     | स्वस्रोः     | स्वसृषु      |
| सं०   | हे स्वसः ! | हे स्वसारौ ! | हे स्वसारः ! |

## नपुंसकलिङ्ग, अकारान्त

ज्ञान = जानना, जान-पहचान

|       |            |              |               |
|-------|------------|--------------|---------------|
| प्र०  | ज्ञानम्    | ज्ञाने       | ज्ञानानि      |
| द्वि० | ज्ञानम्    | ज्ञाने       | ज्ञानानि      |
| तृ०   | ज्ञानेन    | ज्ञानाभ्याम् | ज्ञानैः       |
| च०    | ज्ञानाय    | ज्ञानाभ्याम् | ज्ञानेभ्यः    |
| पं०   | ज्ञानात्   | ज्ञानाभ्याम् | ज्ञानेभ्यः    |
| ष०    | ज्ञानस्य   | ज्ञानयोः     | ज्ञानानाम्    |
| सं०   | ज्ञाने     | ज्ञानयोः     | ज्ञानेषु      |
| सं०   | हे ज्ञान ! | हे ज्ञाने !  | हे ज्ञानानि ! |

गृह = घर

|       |          |            |             |
|-------|----------|------------|-------------|
| प्र०  | गृहम्    | गृहे       | गृहाणि      |
| द्वि० | गृहम्    | गृहे       | गृहाणि      |
| तृ०   | गृहेण    | गृहाभ्याम् | गृहैः       |
| च०    | गृहाय    | गृहाभ्याम् | गृहेभ्यः    |
| पं०   | गृहात्   | गृहाभ्याम् | गृहेभ्यः    |
| ष०    | गृहस्य   | गृहयोः     | गृहाणाम्    |
| स०    | गृहे     | गृहयोः     | गृहेषु      |
| सं०   | हे गृह ! | हे गृहे !  | हे गृहाणि ! |

मित्र = दोस्त

|       |            |              |               |
|-------|------------|--------------|---------------|
| प्र०  | मित्रम्    | मित्रे       | मित्राणि      |
| द्वि० | मित्रम्    | मित्रे       | मित्राणि      |
| तृ०   | मित्रेण    | मित्राभ्याम् | मित्रैः       |
| च०    | मित्राय    | मित्राभ्याम् | मित्रेभ्यः    |
| पं०   | मित्रात्   | मित्राभ्याम् | मित्रेभ्यः    |
| ष०    | मित्रस्य   | मित्रयोः     | मित्राणाम्    |
| स०    | मित्रे     | मित्रयोः     | मित्रेषु      |
| सं०   | हे मित्र ! | हे मित्रे !  | हे मित्राणि ! |

## नपुंसकलिङ्ग, इकारान्त

वारि = पानी

|       |           |            |           |
|-------|-----------|------------|-----------|
| प्र०  | वारि      | वारिणी     | वारीणि    |
| द्वि० | वारि      | वारिणी     | वारीणि    |
| तृ०   | वारिणा    | वारिभ्याम् | वारिभिः   |
| च०    | वारिणे    | वारिभ्याम् | वारिभ्यः  |
| पं०   | वारिणः    | वारिभ्याम् | वारिभ्यः  |
| ष०    | वारिणः    | वारिणोः    | वारीणाम्  |
| स०    | वारिणि    | वारिणोः    | वारिषु    |
| सं०   | हे वारि ! | हे वारिणी  | हे वारीणि |

## नपुंसकलिङ्ग, उकारान्त

मधु = शहद

|       |          |            |            |
|-------|----------|------------|------------|
| प्र०  | मधु      | मधुनी      | मधूनि      |
| द्वि० | मधु      | मधुनी      | मधूनि      |
| तृ०   | मधुना    | मधुभ्याम्  | मधुभिः     |
| च०    | मधुने    | मधुभ्याम्  | मधुभ्यः    |
| पं०   | मधुनः    | मधुभ्याम्  | मधुभ्यः    |
| ष०    | मधुनः    | मधुनोः     | मधूनाम्    |
| स०    | मधुनि    | मधुनोः     | मधुषु      |
| सं०   | हे मधो ! | हे मधुनी ! | हे मधूनि ! |

## व्यञ्जनान्त ( हलन्त ) नाम-पद

पुंलिङ्ग, तकारान्त

महत् = बड़ा

|       |          |            |          |
|-------|----------|------------|----------|
| प्र०  | महान्    | महान्तौ    | महान्तः  |
| द्वि० | महान्तम् | महान्तौ    | महतः     |
| तृ०   | महता     | महद्भ्याम् | महद्भिः  |
| च०    | महते     | महद्भ्याम् | महद्भ्यः |



|     |            |              |              |
|-----|------------|--------------|--------------|
| पं० | महतः       | महद्भ्याम्   | महद्भ्यः     |
| ष०  | महतः       | महतोः        | महताम्       |
| स०  | महति       | महतोः        | महत्सु       |
| सं० | हे महान् ! | हे महान्तौ ! | हे महान्तः ! |

### भगवत् = सौभाग्यशाली

|       |            |              |              |
|-------|------------|--------------|--------------|
| प्र०  | भगवान्     | भगवन्तौ      | भगवन्तः      |
| द्वि० | भगवन्तम्   | भगवन्तौ      | भगवतः        |
| तृ०   | भगवता      | भगवद्भ्याम्  | भगवद्भिः     |
| च०    | भगवते      | भगवद्भ्याम्  | भगवद्भ्यः    |
| पं०   | भगवतः      | भगवद्भ्याम्  | भगवद्भ्यः    |
| ष०    | भगवतः      | भगवतोः       | भगवताम्      |
| स०    | भगवति      | भगवतोः       | भगवत्सु      |
| सं०   | हे भगवन् ! | हे भगवन्तौ ! | हे भगवन्तः ! |

### श्रीमत् = ऐश्वर्यशाली, शोभा वाला

|       |               |                |                |
|-------|---------------|----------------|----------------|
| प्र०  | श्रीमान्      | श्रीमन्तौ      | श्रीमन्तः      |
| द्वि० | श्रीमन्तम्    | श्रीमन्तौ      | श्रीमतः        |
| तृ०   | श्रीमता       | श्रीमद्भ्याम्  | श्रीमद्भिः     |
| च०    | श्रीमते       | श्रीमद्भ्याम्  | श्रीमद्भ्यः    |
| पं०   | श्रीमतः       | श्रीमद्भ्याम्  | श्रीमद्भ्यः    |
| ष०    | श्रीमतः       | श्रीमतोः       | श्रीमताम्      |
| स०    | श्रीमति       | श्रीमतोः       | श्रीमत्सु      |
| सं०   | हे श्रीमान् ! | हे श्रीमन्तौ ! | हे श्रीमन्तः ! |

### पुंलिंग, नकारान्त

### शशिन् = चाँद

|       |        |           |        |
|-------|--------|-----------|--------|
| प्र०  | शशी    | शशिनौ     | शशिनः  |
| द्वि० | शशिनम् | शशिनौ     | शशिनः  |
| तृ०   | शशिना  | शशिभ्याम् | शशिभिः |

|     |            |            |            |
|-----|------------|------------|------------|
| च०  | शशिने      | शशिभ्याम्  | शशिभ्यः    |
| पं० | शशिनः      | शशिभ्याम्  | शशिभ्यः    |
| ष०  | शशिनः      | शशिनोः     | शशीनाम्    |
| स०  | शशिनि      | शशिनोः     | शशिषु      |
| सं० | हे शशिन् ! | हे शशिनौ ! | हे शशिनः ! |

### स्त्रीलिंग, तकारान्त

#### सरित् = नदी

|       |            |             |            |
|-------|------------|-------------|------------|
| प्र०  | सरित्      | सरितौ       | सरितः      |
| द्वि० | सरितम्     | सरितौ       | सरितः      |
| तृ०   | सरिता      | सरिद्भ्याम् | सरिद्भिः   |
| च०    | सरिते      | सरिद्भ्याम् | सरिद्भ्यः  |
| पं०   | सरितः      | सरिद्भ्याम् | सरिद्भ्यः  |
| ष०    | सरितः      | सरितोः      | सरिताम्    |
| स०    | सरिति      | सरितोः      | सरित्सु    |
| सं०   | हे सरित् ! | हे सरितो !  | हे सरितः ! |

### स्त्रीलिंग, चकारान्त

#### वाच् = वाणी

|       |           |            |           |
|-------|-----------|------------|-----------|
| प्र०  | वाक्      | वाचौ       | वाचः      |
| द्वि० | वाचम्     | वाचौ       | वाचः      |
| तृ०   | वाचा      | वाग्भ्याम् | वाग्भिः   |
| च०    | वाचे      | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः  |
| पं०   | वाचः      | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः  |
| ष०    | वाचः      | वाचौ       | वाचाम्    |
| स०    | वाचि      | वाचौ       | वाक्षु    |
| सं०   | हे वाक् ! | हे वाचौ !  | हे वाचः ! |

**सर्वनाम पद** - नाम-पदों की पुनरुक्ति से बचने के लिए नाम-पद के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। इनकी रूपावली नीचे दी जा रही है। सम्बोधन में इनके रूप नहीं होते।

## तद् ( पुंलिंग ) = वह

|       |         |          |        |
|-------|---------|----------|--------|
| प्र०  | सः      | तौ       | ते     |
| द्वि० | तम्     | तौ       | तान्   |
| तृ०   | तेन     | ताभ्याम् | तैः    |
| च०    | तस्मै   | ताभ्याम् | तेभ्यः |
| पं०   | तस्मात् | ताभ्याम् | तेभ्यः |
| ष०    | तस्य    | तयोः     | तेषाम् |
| स०    | तस्मिन् | तयोः     | तेषु   |

## यद् ( पुंलिंग ) = जो

|       |         |          |        |
|-------|---------|----------|--------|
| प्र०  | यः      | यौ       | ये     |
| द्वि० | यम्     | यौ       | यान्   |
| तृ०   | येन     | याभ्याम् | यैः    |
| च०    | यस्मै   | याभ्याम् | येभ्यः |
| पं०   | यस्मात् | याभ्याम् | येभ्यः |
| ष०    | यस्य    | ययोः     | येषाम् |
| स०    | यस्मिन् | ययोः     | येषु   |

## इदम् ( पुंलिंग ) = यह

|       |         |         |       |
|-------|---------|---------|-------|
| प्र०  | अयम्    | इमौ     | इमे   |
| द्वि० | इमम्    | इमौ     | इमान् |
| तृ०   | अनेन    | आभ्याम् | एभिः  |
| च०    | अस्मै   | आभ्याम् | एभ्यः |
| पं०   | अस्मात् | आभ्याम् | एभ्यः |
| ष०    | अस्य    | अनयोः   | एषाम् |
| स०    | अस्मिन् | अनयोः   | एषु   |

## किम् ( पुंलिंग ) = कौन

|       |     |    |      |
|-------|-----|----|------|
| प्र०  | कः  | कौ | के   |
| द्वि० | कम् | कौ | कान् |

|     |         |          |        |
|-----|---------|----------|--------|
| तृ० | केन     | काभ्याम् | कैः    |
| च०  | कस्मै   | काभ्याम् | केभ्यः |
| पं० | कस्मात् | काभ्याम् | केभ्यः |
| ष०  | कस्य    | कयोः     | केषाम् |
| स०  | कस्मिन् | कयोः     | केषु   |

### युष्मद् ( तीनों लिंगों में समान ) = तुम

|      |         |            |            |
|------|---------|------------|------------|
| प्र० | त्वम्   | युवाम्     | यूयम्      |
| द्वि | त्वाम्  | युवाम्     | युष्मान्   |
| तृ०  | त्वया   | युवाभ्याम् | युष्माभिः  |
| च०   | तुभ्यम् | युवाभ्याम् | युष्मभ्यम् |
| पं०  | त्वत्   | युवाभ्याम् | युष्मत्    |
| ष०   | तव      | युवयोः     | युष्माकम्  |
| स०   | त्वयि   | युवयोः     | युष्मासु   |

### अस्मद् ( तीनों लिंगों में समान ) = हम

|      |        |           |           |
|------|--------|-----------|-----------|
| प्र० | अहम्   | आवाम्     | वयम्      |
| द्वि | माम्   | आवाम्     | अस्मान्   |
| तृ०  | मया    | आवाभ्याम् | अस्माभिः  |
| च०   | मह्यम् | आवाभ्याम् | अस्मभ्यम् |
| पं०  | मत्    | आवाभ्याम् | अस्मत्    |
| ष०   | मम     | आवयोः     | अस्माकम्  |
| स०   | मयि    | आवयोः     | अस्मासु   |

## क्रिया-पद

जिन शब्दों में करना या होना पाया जाये, उन्हें क्रिया-पद कहते हैं, जैसे पठति = (वह) पढ़ता है, लिखति = (वह) लिखता है। इन क्रिया-पदों के मूल शब्दों को धातु कहते हैं, जैसे √पठ्, √लिख्।

**लकार :-** क्रिया के (क) तीन काल और (ख) कुछ भाव होते हैं, जैसे (क) वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत् काल, (ख) आज्ञा भाव, विधि भाव। इन

कालों और भावों के अर्थों को दर्शाने के लिए भिन्न-भिन्न लकारों में धातुओं को रूप देकर क्रिया पद बनाए जाते हैं। वे पाँच लकार ये हैं-

| लकार     | अर्थ        | उदाहरण                  |
|----------|-------------|-------------------------|
| लट्      | वर्तमान काल | पठति (वह पढ़ता है)      |
| लङ्      | भूतकाल      | अपठत् (उसने पढ़ा)       |
| लृट्     | भविष्यत्काल | पठिष्यति (वह पढ़ेगा)    |
| लोट्     | आज्ञाभाव    | पठतु (वह पढ़े)          |
| विधिलिङ् | विधिभाव     | पठेत् (उसे पढ़ना चाहिए) |

**पुरुष :-** बातचीत करने में तीन व्यक्ति संबंधित हैं- पहला बात करने वाला, दूसरा, जिससे बात की जाती है, तीसरा, जिसके बारे में बात होती है, इन्हें पुरुष कहते हैं। उनके नाम हैं -

| पुरुष       | अर्थ                          | उदाहरण     |
|-------------|-------------------------------|------------|
| प्रथम पुरुष | जिसके बारे में बात की जाती है | सः (वह)    |
| मध्यम पुरुष | जिससे बात की जाती है          | त्वम् (तू) |
| उत्तम पुरुष | जो बात करता है                | अहम् (मैं) |

**वचन-** एक के लिए एक वचन, दो के लिए द्विवचन, एवं तीन या तीन से अधिक के लिए बहुवचन का रूप दिया जाता है।

### रूपावली

कुछ धातुओं के रूप पाँच लकारों के तीनों पुरुषों और तीनों वचनों में नीचे दिए जाते हैं-

### भ्वादिगण

#### लट् लकार ( वर्तमान काल )

#### √ भू ( भव् )- होना

|          | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|----------|-------|---------|--------|
| प्र० पु० | भवति  | भवतः    | भवन्ति |
| म० पु०   | भवसि  | भवथः    | भवथ    |
| उ० पु०   | भवामि | भवावः   | भवामः  |

√ पठ् = पढ़ना

|          |       |       |        |
|----------|-------|-------|--------|
| प्र० पु० | पठति  | पठतः  | पठन्ति |
| म० पु०   | पठसि  | पठथः  | पठथ    |
| उ० पु०   | पठामि | पठावः | पठामः  |

√ गम् ( गच्छ् ) = जाना

|          |         |         |          |
|----------|---------|---------|----------|
| प्र० पु० | गच्छति  | गच्छतः  | गच्छन्ति |
| म० पु०   | गच्छसि  | गच्छथः  | गच्छथ    |
| उ० पु०   | गच्छामि | गच्छावः | गच्छामः  |

√ स्था ( तिष्ठ् ) = ठहरना

|          |          |          |           |
|----------|----------|----------|-----------|
| प्र० पु० | तिष्ठति  | तिष्ठतः  | तिष्ठन्ति |
| म० पु०   | तिष्ठसि  | तिष्ठथः  | तिष्ठथ    |
| उ० पु०   | तिष्ठामि | तिष्ठावः | तिष्ठामः  |

√ नी ( नय् ) = ले जाना

|          |       |       |        |
|----------|-------|-------|--------|
| प्र० पु० | नयति  | नयतः  | नयन्ति |
| म० पु०   | नयसि  | नयथः  | नयथ    |
| उ० पु०   | नयामि | नयावः | नयामः  |

√ पा ( पिब् ) = पीना

|          |        |        |         |
|----------|--------|--------|---------|
| प्र० पु० | पिबति  | पिबतः  | पिबन्ति |
| म० पु०   | पिबसि  | पिबथः  | पिबथ    |
| उ० पु०   | पिबामि | पिबावः | पिबामः  |

√ अर्च् = पूजा करना

|          |         |         |          |
|----------|---------|---------|----------|
| प्र० पु० | अर्चति  | अर्चतः  | अर्चन्ति |
| म० पु०   | अर्चसि  | अर्चथः  | अर्चथ    |
| उ० पु०   | अर्चामि | अर्चावः | अर्चामः  |



√ कृज् = चहचहाना

|          |        |        |         |
|----------|--------|--------|---------|
| प्र० पु० | कृजति  | कृजतः  | कृजन्ति |
| म० पु०   | कृजसि  | कृजथः  | कृजथ    |
| उ० पु०   | कृजामि | कृजावः | कृजामः  |

√ दृश् ( पश्य् ) = देखना

|          |         |         |          |
|----------|---------|---------|----------|
| प्र० पु० | पश्यति  | पश्यतः  | पश्यन्ति |
| म० पु०   | पश्यसि  | पश्यथः  | पश्यथ    |
| उ० पु०   | पश्यामि | पश्यावः | पश्यामः  |

√ सृ ( सर् ) = सरकना

|          |       |       |        |
|----------|-------|-------|--------|
| प्र० पु० | सरति  | सरतः  | सरन्ति |
| म० पु०   | सरसि  | सरथः  | सरथ    |
| उ० पु०   | सरामि | सरावः | सरामः  |

√ स्मृ ( स्मर् ) = याद करना

|          |         |         |          |
|----------|---------|---------|----------|
| प्र० पु० | स्मरति  | स्मरतः  | स्मरन्ति |
| म० पु०   | स्मरसि  | स्मरथः  | स्मरथ    |
| उ० पु०   | स्मरामि | स्मरावः | स्मरामः  |

√ दा ( यच्छ् ) = देना

|          |         |         |          |
|----------|---------|---------|----------|
| प्र० पु० | यच्छति  | यच्छतः  | यच्छन्ति |
| म० पु०   | यच्छसि  | यच्छथः  | यच्छथ    |
| उ० पु०   | यच्छामि | यच्छावः | यच्छामः  |

√ रुह् ( रोह् ) = उगना

|          |        |        |         |
|----------|--------|--------|---------|
| प्र० पु० | रोहति  | रोहतः  | रोहन्ति |
| म० पु०   | रोहसि  | रोहथः  | रोहथ    |
| उ० पु०   | रोहामि | रोहावः | रोहामः  |

## लङ् लकार ( भूतकाल )

√ भू ( भव् ) = होना

|          |       |         |       |
|----------|-------|---------|-------|
| प्र० पु० | अभवत् | अभवताम् | अभवन् |
| म० पु०   | अभवः  | अभवतम्  | अभवत  |
| उ० पु०   | अभवम् | अभवाव   | अभवाम |

√ पठ् = पढ़ना

|          |       |         |       |
|----------|-------|---------|-------|
| प्र० पु० | अपठत् | अपठताम् | अपठन् |
| म० पु०   | अपठः  | अपठतम्  | अपठत  |
| उ० पु०   | अपठम् | अपठाव   | अपठाम |

√ गम् ( गच्छ् ) = जाना

|          |         |           |         |
|----------|---------|-----------|---------|
| प्र० पु० | अगच्छत् | अगच्छताम् | अगच्छन् |
| म० पु०   | अगच्छः  | अगच्छतम्  | अगच्छत  |
| उ० पु०   | अगच्छम् | अगच्छाव   | अगच्छाम |

√ स्था ( तिष्ठ् ) = ठहरना

|          |          |            |          |
|----------|----------|------------|----------|
| प्र० पु० | अतिष्ठत् | अतिष्ठताम् | अतिष्ठन् |
| म० पु०   | अतिष्ठः  | अतिष्ठतम्  | अतिष्ठत  |
| उ० पु०   | अतिष्ठम् | अतिष्ठाव   | अतिष्ठाम |

√ नी ( नय् ) = ले जाना

|          |       |         |       |
|----------|-------|---------|-------|
| प्र० पु० | अनयत् | अनयताम् | अनयन् |
| म० पु०   | अनयः  | अनयतम्  | अनयत  |
| उ० पु०   | अनयम् | अनयाव   | अनयाम |

√ पा ( पिब् ) = पीना

|          |        |          |        |
|----------|--------|----------|--------|
| प्र० पु० | अपिबत् | अपिबताम् | अपिबन् |
| म० पु०   | अपिबः  | अपिबतम्  | अपिबत  |
| उ० पु०   | अपिबम् | अपिबाव   | अपिबाम |

√ अर्च = पूजा करना

|          |        |          |        |
|----------|--------|----------|--------|
| प्र० पु० | आर्चत् | आर्चताम् | आर्चन् |
| म० पु०   | आर्चः  | आर्चतम्  | आर्चत  |
| उ० पु०   | आर्चम् | आर्चाव   | आर्चाम |

√ कूज् = चहचहाना

|          |        |          |        |
|----------|--------|----------|--------|
| प्र० पु० | अकूजत् | अकूजताम् | अकूजन् |
| म० पु०   | अकूजः  | अकूजतम्  | अकूजत  |
| उ० पु०   | अकूजम् | अकूजाव   | अकूजाम |

√ दृश् ( पश्य् ) = देखना

|          |         |           |         |
|----------|---------|-----------|---------|
| प्र० पु० | अपश्यत् | अपश्यताम् | अपश्यन् |
| म० पु०   | अपश्यः  | अपश्यतम्  | अपश्यत  |
| उ० पु०   | अपश्यम् | अपश्याव   | अपश्याम |

√ सृ ( सर् ) = सरकना

|          |       |         |       |
|----------|-------|---------|-------|
| प्र० पु० | असरत् | असरताम् | असरन् |
| म० पु०   | असरः  | असरतम्  | असरत  |
| उ० पु०   | असरम् | असराव   | असराम |

√ स्मृ ( स्मर् ) = याद करना

|          |         |           |         |
|----------|---------|-----------|---------|
| प्र० पु० | अस्मरत् | अस्मरताम् | अस्मरन् |
| म० पु०   | अस्मरः  | अस्मरतम्  | अस्मरत  |
| उ० पु०   | अस्मरम् | अस्मराव   | अस्मराम |

√ दा ( यच्छ् ) = देना

|          |         |           |         |
|----------|---------|-----------|---------|
| प्र० पु० | अयच्छत् | अयच्छताम् | अयच्छन् |
| म० पु०   | अयच्छः  | अयच्छतम्  | अयच्छत  |
| उ० पु०   | अयच्छम् | अयच्छाव   | अयच्छाम |

√ रुह ( रोह ) = उगना

|          |        |          |        |
|----------|--------|----------|--------|
| प्र० पु० | अरोहत् | अरोहताम् | अरोहन् |
| म० पु०   | अरोहः  | अरोहतम्  | अरोहत  |
| उ० पु०   | अरोहम् | अरोहाव   | अरोहाम |

लृट् लकार ( भविष्यत् काल )

√ पा = पीना

|          |          |          |           |
|----------|----------|----------|-----------|
| प्र० पु० | पास्यति  | पास्यतः  | पास्यन्ति |
| म० पु०   | पास्यसि  | पास्यथः  | पास्यथ    |
| उ० पु०   | पास्यामि | पास्यावः | पास्यामः  |

√ दा = देना

|          |          |          |           |
|----------|----------|----------|-----------|
| प्र० पु० | दास्यति  | दास्यतः  | दास्यन्ति |
| म० पु०   | दास्यसि  | दास्यथः  | दास्यथ    |
| उ० पु०   | दास्यामि | दास्यावः | दास्यामः  |

√ स्था = ठहरना

|          |            |            |             |
|----------|------------|------------|-------------|
| प्र० पु० | स्थास्यति  | स्थास्यतः  | स्थास्यन्ति |
| म० पु०   | स्थास्यसि  | स्थास्यथः  | स्थास्यथ    |
| उ० पु०   | स्थास्यामि | स्थास्यावः | स्थास्यामः  |

√ नी = ले जाना

|          |          |          |           |
|----------|----------|----------|-----------|
| प्र० पु० | नेष्यति  | नेष्यतः  | नेष्यन्ति |
| म० पु०   | नेष्यसि  | नेष्यथः  | नेष्यथ    |
| उ० पु०   | नेष्यामि | नेष्यावः | नेष्यामः  |

√ पठ् = पढ़ना

|          |           |           |            |
|----------|-----------|-----------|------------|
| प्र० पु० | पठिष्यति  | पठिष्यतः  | पठिष्यन्ति |
| म० पु०   | पठिष्यसि  | पठिष्यथः  | पठिष्यथ    |
| उ० पु०   | पठिष्यामि | पठिष्यावः | पठिष्यामः  |

## √ गम् = जाना

|          |           |           |            |
|----------|-----------|-----------|------------|
| प्र० पु० | गमिष्यति  | गमिष्यतः  | गमिष्यन्ति |
| म० पु०   | गमिष्यसि  | गमिष्यथः  | गमिष्यथ    |
| उ० पु०   | गमिष्यामि | गमिष्यावः | गमिष्यामः  |

## √ कूज् = चहचहाना

|          |            |            |             |
|----------|------------|------------|-------------|
| प्र० पु० | कूजिष्यति  | कूजिष्यतः  | कूजिष्यन्ति |
| म० पु०   | कूजिष्यसि  | कूजिष्यथः  | कूजिष्यथ    |
| उ० पु०   | कूजिष्यामि | कूजिष्यावः | कूजिष्यामः  |

## √ अर्च = पूजा करना

|          |             |             |              |
|----------|-------------|-------------|--------------|
| प्र० पु० | अर्चिष्यति  | अर्चिष्यतः  | अर्चिष्यन्ति |
| म० पु०   | अर्चिष्यसि  | अर्चिष्यथः  | अर्चिष्यथ    |
| उ० पु०   | अर्चिष्यामि | अर्चिष्यावः | अर्चिष्यामः  |

## √ भू ( भव् ) = होना

|          |           |           |            |
|----------|-----------|-----------|------------|
| प्र० पु० | भविष्यति  | भविष्यतः  | भविष्यन्ति |
| म० पु०   | भविष्यसि  | भविष्यथः  | भविष्यथ    |
| उ० पु०   | भविष्यामि | भविष्यावः | भविष्यामः  |

## √ स् ( सर् ) = सरकना

|          |           |           |            |
|----------|-----------|-----------|------------|
| प्र० पु० | सरिष्यति  | सरिष्यतः  | सरिष्यन्ति |
| म० पु०   | सरिष्यसि  | सरिष्यथः  | सरिष्यथ    |
| उ० पु०   | सरिष्यामि | सरिष्यावः | सरिष्यामः  |

## √ स्मृ ( स्मर् ) = याद करना

|          |             |             |              |
|----------|-------------|-------------|--------------|
| प्र० पु० | स्मरिष्यति  | स्मरिष्यतः  | स्मरिष्यन्ति |
| म० पु०   | स्मरिष्यसि  | स्मरिष्यथः  | स्मरिष्यथ    |
| उ० पु०   | स्मरिष्यामि | स्मरिष्यावः | स्मरिष्यामः  |

√ दृश् = देखना

|          |             |             |              |
|----------|-------------|-------------|--------------|
| प्र० पु० | द्रक्ष्यति  | द्रक्ष्यतः  | द्रक्ष्यन्ति |
| म० पु०   | द्रक्ष्यसि  | द्रक्ष्यथः  | द्रक्ष्यथ    |
| उ० पु०   | द्रक्ष्यामि | द्रक्ष्यावः | द्रक्ष्यामः  |

√ रुह् = उगना

|          |            |            |             |
|----------|------------|------------|-------------|
| प्र० पु० | रोक्ष्यति  | रोक्ष्यतः  | रोक्ष्यन्ति |
| म० पु०   | रोक्ष्यसि  | रोक्ष्यथः  | रोक्ष्यथ    |
| उ० पु०   | रोक्ष्यामि | रोक्ष्यावः | रोक्ष्यामः  |

लोद् लकार ( आज्ञा-भाव )

पा ( पिब् ) = पीना

|          |        |         |         |
|----------|--------|---------|---------|
| प्र० पु० | पिबतु  | पिबताम् | पिबन्तु |
| म० पु०   | पिब    | पिबतम्  | पिबत    |
| उ० पु०   | पिबानि | पिबाव   | पिबाम   |

√ दा ( यच्छ् ) = देना

|          |         |          |          |
|----------|---------|----------|----------|
| प्र० पु० | यच्छतु  | यच्छताम् | यच्छन्तु |
| म० पु०   | यच्छ    | यच्छतम्  | यच्छत    |
| उ० पु०   | यच्छानि | यच्छाव   | यच्छाम   |

√ स्था ( तिष्ठ् ) = ठहरना

|          |          |           |           |
|----------|----------|-----------|-----------|
| प्र० पु० | तिष्ठतु  | तिष्ठताम् | तिष्ठन्तु |
| म० पु०   | तिष्ठ    | तिष्ठतम्  | तिष्ठत    |
| उ० पु०   | तिष्ठानि | तिष्ठाव   | तिष्ठाम   |

√ नी ( नय् ) = ले जाना

|          |       |        |        |
|----------|-------|--------|--------|
| प्र० पु० | नयतु  | नयताम् | नयन्तु |
| म० पु०   | नय    | नयतम्  | नयत    |
| उ० पु०   | नयानि | नयाव   | नयाम   |



## √ पठ् = पढ़ना

|          |       |        |        |
|----------|-------|--------|--------|
| प्र० पु० | पठतु  | पठताम् | पठन्तु |
| म० पु०   | पठ    | पठतम्  | पठत    |
| उ० पु०   | पठानि | पठाव   | पठाम   |

## √ गम् ( गच्छ् ) = जाना

|          |         |          |          |
|----------|---------|----------|----------|
| प्र० पु० | गच्छतु  | गच्छताम् | गच्छन्तु |
| म० पु०   | गच्छ    | गच्छतम्  | गच्छत    |
| उ० पु०   | गच्छानि | गच्छाव   | गच्छाम   |

## √ कूज् = चहचहाना

|          |        |         |         |
|----------|--------|---------|---------|
| प्र० पु० | कूजतु  | कूजताम् | कूजन्तु |
| म० पु०   | कूज    | कूजतम्  | कूजत    |
| उ० पु०   | कूजानि | कूजाव   | कूजाम   |

## √ अर्च् = पूजा करना

|          |         |          |          |
|----------|---------|----------|----------|
| प्र० पु० | अर्चतु  | अर्चताम् | अर्चन्तु |
| म० पु०   | अर्च    | अर्चतम्  | अर्चत    |
| उ० पु०   | अर्चानि | अर्चाव   | अर्चाम   |

## √ भू ( भव् ) = होना

|          |       |        |        |
|----------|-------|--------|--------|
| प्र० पु० | भवतु  | भवताम् | भवन्तु |
| म० पु०   | भव    | भवतम्  | भवत    |
| उ० पु०   | भवानि | भवाव   | भवाम   |

## √ सृ ( सर् ) = सरकना

|          |       |        |        |
|----------|-------|--------|--------|
| प्र० पु० | सरतु  | सरताम् | सरन्तु |
| म० पु०   | सर    | सरतम्  | सरत    |
| उ० पु०   | सराणि | सराव   | सराम   |

√ स्मृ ( स्मर् ) = याद करना

|          |         |          |          |
|----------|---------|----------|----------|
| प्र० पु० | स्मरतु  | स्मरताम् | स्मरन्तु |
| म० पु०   | स्मर    | स्मरतम्  | स्मरत    |
| उ० पु०   | स्मराणि | स्मराव   | स्मराम   |

√ दृश् ( पश्य् ) = देखना

|          |         |          |          |
|----------|---------|----------|----------|
| प्र० पु० | पश्यतु  | पश्यताम् | पश्यन्तु |
| म० पु०   | पश्य    | पश्यतम्  | पश्यत    |
| उ० पु०   | पश्यानि | पश्याव   | पश्याम   |

√ रुह् ( रोह् ) = उगना

|          |        |         |         |
|----------|--------|---------|---------|
| प्र० पु० | रोहतु  | रोहताम् | रोहन्तु |
| म० पु०   | रोह    | रोहतम्  | रोहत    |
| उ० पु०   | रोहाणि | रोहाव   | रोहाम   |

विधिलिङ् ( विधि भाव )

√ पा ( पिब् ) = पीना

|          |         |          |         |
|----------|---------|----------|---------|
| प्र० पु० | पिबेत्  | पिबेताम् | पिबेयुः |
| म० पु०   | पिबेः   | पिबेतम्  | पिबेत   |
| उ० पु०   | पिबेयम् | पिबेव    | पिबेम   |

√ दा ( यच्छ् ) = देना

|          |          |           |          |
|----------|----------|-----------|----------|
| प्र० पु० | यच्छेत्  | यच्छेताम् | यच्छेयुः |
| म० पु०   | यच्छेः   | यच्छेतम्  | यच्छेत   |
| उ० पु०   | यच्छेयम् | यच्छेव    | यच्छेम   |

√ स्था ( तिष्ठ् ) = ठहरना

|          |           |            |           |
|----------|-----------|------------|-----------|
| प्र० पु० | तिष्ठेत्  | तिष्ठेताम् | तिष्ठेयुः |
| म० पु०   | तिष्ठेः   | तिष्ठेतम्  | तिष्ठेत   |
| उ० पु०   | तिष्ठेयम् | तिष्ठेव    | तिष्ठेम   |

√ नी ( नय् ) = ले जाना

|          |        |         |        |
|----------|--------|---------|--------|
| प्र० पु० | नयेत्  | नयेताम् | नयेयुः |
| म० पु०   | नयेः   | नयेतम्  | नयेत   |
| उ० पु०   | नयेयम् | नयेव    | नयेम   |

√ पठ् = पढ़ना

|          |        |         |        |
|----------|--------|---------|--------|
| प्र० पु० | पठेत्  | पठेताम् | पठेयुः |
| म० पु०   | पठेः   | पठेतम्  | पठेत   |
| उ० पु०   | पठेयम् | पठेव    | पठेम   |

√ गम् ( गच्छ् ) = जाना

|          |          |           |          |
|----------|----------|-----------|----------|
| प्र० पु० | गच्छेत्  | गच्छेताम् | गच्छेयुः |
| म० पु०   | गच्छेः   | गच्छेतम्  | गच्छेत   |
| उ० पु०   | गच्छेयम् | गच्छेव    | गच्छेम   |

√ कूज् = चहचहाना

|          |         |          |         |
|----------|---------|----------|---------|
| प्र० पु० | कूजेत्  | कूजेताम् | कूजेयुः |
| म० पु०   | कूजेः   | कूजेतम्  | कूजेत   |
| उ० पु०   | कूजेयम् | कूजेव    | कूजेम   |

√ अर्च = पूजा करना

|          |          |           |          |
|----------|----------|-----------|----------|
| प्र० पु० | अर्चेत्  | अर्चेताम् | अर्चेयुः |
| म० पु०   | अर्चेः   | अर्चेतम्  | अर्चेत   |
| उ० पु०   | अर्चेयम् | अर्चेव    | अर्चेम   |

√ भू ( भव् ) = होना

|          |        |         |        |
|----------|--------|---------|--------|
| प्र० पु० | भवेत्  | भवेताम् | भवेयुः |
| म० पु०   | भवेः   | भवेतम्  | भवेत   |
| उ० पु०   | भवेयम् | भवेव    | भवेम   |

√ सू ( सर् ) = सरकना

|          |        |         |        |
|----------|--------|---------|--------|
| प्र० पु० | सरेत्  | सरेताम् | सरेयुः |
| म० पु०   | सरेः   | सरेतम्  | सरेत   |
| उ० पु०   | सरेयम् | सरेव    | सरेम   |

√ स्मृ ( स्मर् ) = याद करना

|          |          |           |          |
|----------|----------|-----------|----------|
| प्र० पु० | स्मरेत्  | स्मरेताम् | स्मरेयुः |
| म० पु०   | स्मरेः   | स्मरेतम्  | स्मरेत   |
| उ० पु०   | स्मरेयम् | स्मरेव    | स्मरेम   |

√ दृश् ( पश्य् ) = देखना

|          |          |           |          |
|----------|----------|-----------|----------|
| प्र० पु० | पश्येत्  | पश्येताम् | पश्येयुः |
| म० पु०   | पश्येः   | पश्येतम्  | पश्येत   |
| उ० पु०   | पश्येयम् | पश्येव    | पश्येम   |

√ रुह ( रोह् ) = उगना

|          |         |          |         |
|----------|---------|----------|---------|
| प्र० पु० | रोहेत्  | रोहेताम् | रोहेयुः |
| म० पु०   | रोहेः   | रोहेतम्  | रोहेत   |
| उ० पु०   | रोहेयम् | रोहेव    | रोहेम   |

तुदादिगण

लट् लकार ( वर्तमान काल )

√ तुद् = सताना

|          |        |        |         |
|----------|--------|--------|---------|
| प्र० पु० | तुदति  | तुदतः  | तुदन्ति |
| म० पु०   | तुदसि  | तुदथः  | तुदथ    |
| उ० पु०   | तुदामि | तुदावः | तुदामः  |

√ इष् ( इच्छ् ) = चाहना

|          |         |         |          |
|----------|---------|---------|----------|
| प्र० पु० | इच्छति  | इच्छतः  | इच्छन्ति |
| म० पु०   | इच्छसि  | इच्छथः  | इच्छथ    |
| उ० पु०   | इच्छामि | इच्छावः | इच्छामः  |

√ प्रच्छ ( पृच्छ ) = पूछना

|          |          |          |           |
|----------|----------|----------|-----------|
| प्र० पु० | पृच्छति  | पृच्छतः  | पृच्छन्ति |
| म० पु०   | पृच्छसि  | पृच्छथः  | पृच्छथ    |
| उ० पु०   | पृच्छामि | पृच्छावः | पृच्छामः  |

स्पृश् = छूना

|          |          |          |           |
|----------|----------|----------|-----------|
| प्र० पु० | स्पृशति  | स्पृशतः  | स्पृशन्ति |
| म० पु०   | स्पृशसि  | स्पृशथः  | स्पृशथ    |
| उ० पु०   | स्पृशामि | स्पृशावः | स्पृशामः  |

लङ् लकार ( भूत काल )

√ तुद् = सताना

|          |        |          |        |
|----------|--------|----------|--------|
| प्र० पु० | अतुदत् | अतुदताम् | अतुदन् |
| म० पु०   | अतुदः  | अतुदतम्  | अतुदत  |
| उ० पु०   | अतुदम् | अतुदाव   | अतुदाम |

√ इष् ( इच्छ ) = चाहना

|          |        |          |        |
|----------|--------|----------|--------|
| प्र० पु० | ऐच्छत् | ऐच्छताम् | ऐच्छन् |
| म० पु०   | ऐच्छः  | ऐच्छतम्  | ऐच्छत  |
| उ० पु०   | ऐच्छम् | ऐच्छाव   | ऐच्छाम |

√ प्रच्छ ( पृच्छ ) = पूछना

|          |          |            |          |
|----------|----------|------------|----------|
| प्र० पु० | अपृच्छत् | अपृच्छताम् | अपृच्छन् |
| म० पु०   | अपृच्छः  | अपृच्छतम्  | अपृच्छत  |
| उ० पु०   | अपृच्छम् | अपृच्छाव   | अपृच्छाम |

√ स्पृश् = छूना

|          |          |            |          |
|----------|----------|------------|----------|
| प्र० पु० | अस्पृशत् | अस्पृशताम् | अस्पृशन् |
| म० पु०   | अस्पृशः  | अस्पृशतम्  | अस्पृशत  |
| उ० पु०   | अस्पृशम् | अस्पृशाव   | अस्पृशाम |

## लृट् लकार ( भविष्यत् काल )

√ तुद् = सताना

|          |            |            |             |
|----------|------------|------------|-------------|
| प्र० पु० | तोत्स्यति  | तोत्स्यतः  | तोत्स्यन्ति |
| म० पु०   | तोत्स्यसि  | तोत्स्यथः  | तोत्स्यथ    |
| उ० पु०   | तोत्स्यामि | तोत्स्यावः | तोत्स्यामः  |

√ इष् = चाहना

|          |           |           |            |
|----------|-----------|-----------|------------|
| प्र० पु० | एषिष्यति  | एषिष्यतः  | एषिष्यन्ति |
| म० पु०   | एषिष्यसि  | एषिष्यथः  | एषिष्यथ    |
| उ० पु०   | एषिष्यामि | एषिष्यावः | एषिष्यामः  |

√ प्रच्छ = पूछना

|          |             |             |              |
|----------|-------------|-------------|--------------|
| प्र० पु० | प्रक्ष्यति  | प्रक्ष्यतः  | प्रक्ष्यन्ति |
| म० पु०   | प्रक्ष्यसि  | प्रक्ष्यथः  | प्रक्ष्यथ    |
| उ० पु०   | प्रक्ष्यामि | प्रक्ष्यावः | प्रक्ष्यामः  |

√ स्पृश् = छूना

|          |               |               |                |
|----------|---------------|---------------|----------------|
| प्र० पु० | स्प्रक्ष्यति  | स्प्रक्ष्यतः  | स्प्रक्ष्यन्ति |
| म० पु०   | स्प्रक्ष्यसि  | स्प्रक्ष्यथः  | स्प्रक्ष्यथ    |
| उ० पु०   | स्प्रक्ष्यामि | स्प्रक्ष्यावः | स्प्रक्ष्यामः  |

## लोट् लकार ( आज्ञा-भाव )

√ तुद् = सताना

|          |        |         |         |
|----------|--------|---------|---------|
| प्र० पु० | तुदतु  | तुदताम् | तुदन्तु |
| म० पु०   | तुद    | तुदतम्  | तुदत    |
| उ० पु०   | तुदानि | तुदाव   | तुदाम   |

√ इष् ( इच्छ ) = चाहना

|          |         |          |          |
|----------|---------|----------|----------|
| प्र० पु० | इच्छतु  | इच्छताम् | इच्छन्तु |
| म० पु०   | इच्छ    | इच्छतम्  | इच्छत    |
| उ० पु०   | इच्छानि | इच्छाव   | इच्छाम   |



√ प्रच्छ ( पृच्छ ) = पूछना

|          |          |           |           |
|----------|----------|-----------|-----------|
| प्र० पु० | पृच्छतु  | पृच्छताम् | पृच्छन्तु |
| म० पु०   | पृच्छ    | पृच्छतम्  | पृच्छत    |
| उ० पु०   | पृच्छानि | पृच्छाव   | पृच्छाम   |

√ स्पृश् = छूना

|          |          |           |           |
|----------|----------|-----------|-----------|
| प्र० पु० | स्पृशतु  | स्पृशताम् | स्पृशन्तु |
| म० पु०   | स्पृश    | स्पृशतम्  | स्पृशत    |
| उ० पु०   | स्पृशानि | स्पृशाव   | स्पृशाम   |

विधिलिङ् ( विधि-भाव )

√ तुद् = सताना

|          |         |          |         |
|----------|---------|----------|---------|
| प्र० पु० | तुदेत्  | तुदेताम् | तुदेयुः |
| म० पु०   | तुदेः   | तुदेतम्  | तुदेत   |
| उ० पु०   | तुदेयम् | तुदेव    | तुदेम   |

√ इप् ( इच्छ ) = चाहना

|          |          |           |          |
|----------|----------|-----------|----------|
| प्र० पु० | इच्छेत्  | इच्छेताम् | इच्छेयुः |
| म० पु०   | इच्छेः   | इच्छेतम्  | इच्छेत   |
| उ० पु०   | इच्छेयम् | इच्छेव    | इच्छेम   |

√ प्रच्छ ( पृच्छ ) = पूछना

|          |           |            |           |
|----------|-----------|------------|-----------|
| प्र० पु० | पृच्छेत्  | पृच्छेताम् | पृच्छेयुः |
| म० पु०   | पृच्छेः   | पृच्छेतम्  | पृच्छेत   |
| उ० पु०   | पृच्छेयम् | पृच्छेव    | पृच्छेम   |

√ स्पृश् = छूना

|          |           |           |           |
|----------|-----------|-----------|-----------|
| प्र० पु० | स्पृशेत्  | स्पृशताम् | स्पृशेयुः |
| म० पु०   | स्पृशेः   | स्पृशेतम् | स्पृशेत   |
| उ० पु०   | स्पृशेयम् | स्पृशेव   | स्पृशेम   |

## दिवादिगण

लट् लकार ( वर्तमान काल )

√ दिव् ( दीव् ) = चमकना

|          |          |          |           |
|----------|----------|----------|-----------|
| प्र० पु० | दीव्यति  | दीव्यतः  | दीव्यन्ति |
| म० पु०   | दीव्यसि  | दीव्यथः  | दीव्यथ    |
| उ० पु०   | दीव्यामि | दीव्यावः | दीव्यामः  |

√ नश् = नष्ट होना

|          |         |         |          |
|----------|---------|---------|----------|
| प्र० पु० | नश्यति  | नश्यतः  | नश्यन्ति |
| म० पु०   | नश्यसि  | नश्यथः  | नश्यथ    |
| उ० पु०   | नश्यामि | नश्यावः | नश्यामः  |

√ तुष् = सन्तुष्ट होना

|          |          |          |           |
|----------|----------|----------|-----------|
| प्र० पु० | तुष्यति  | तुष्यतः  | तुष्यन्ति |
| म० पु०   | तुष्यसि  | तुष्यथः  | तुष्यथ    |
| उ० पु०   | तुष्यामि | तुष्यावः | तुष्यामः  |

√ भ्रम् ( भ्राम् ) = घूमना

|          |            |            |             |
|----------|------------|------------|-------------|
| प्र० पु० | भ्राम्यति  | भ्राम्यतः  | भ्राम्यन्ति |
| म० पु०   | भ्राम्यसि  | भ्राम्यथः  | भ्राम्यथ    |
| उ० पु०   | भ्राम्यामि | भ्राम्यावः | भ्राम्यामः  |

√ नृत् = नाचना

|          |          |          |           |
|----------|----------|----------|-----------|
| प्र० पु० | नृत्यति  | नृत्यतः  | नृत्यन्ति |
| म० पु०   | नृत्यसि  | नृत्यथः  | नृत्यथ    |
| उ० पु०   | नृत्यामि | नृत्यावः | नृत्यामः  |

लङ् लकार ( भूतकाल )

√ दिव् ( दीव् ) = चमकना

|          |          |            |          |
|----------|----------|------------|----------|
| प्र० पु० | अदीव्यत् | अदीव्यताम् | अदीव्यन् |
| म० पु०   | अदीव्यः  | अदीव्यतम्  | अदीव्यत  |
| उ० पु०   | अदीव्यम् | अदीव्याव   | अदीव्याम |

√ नश् = नष्ट होना

|          |         |           |         |
|----------|---------|-----------|---------|
| प्र० पु० | अनश्यत् | अनश्यताम् | अनश्यन् |
| म० पु०   | अनश्यः  | अनश्यतम्  | अनश्यत  |
| उ० पु०   | अनश्यम् | अनश्याव   | अनश्याम |

√ तुष् = संतुष्ट होना

|          |          |            |          |
|----------|----------|------------|----------|
| प्र० पु० | अतुष्यत् | अतुष्यताम् | अतुष्यन् |
| म० पु०   | अतुष्यः  | अतुष्यतम्  | अतुष्यत  |
| उ० पु०   | अतुष्यम् | अतुष्याव   | अतुष्याम |

√ भ्रम् ( भ्राम् ) = घूमना

|          |            |              |            |
|----------|------------|--------------|------------|
| प्र० पु० | अभ्राम्यत् | अभ्राम्यताम् | अभ्राम्यन् |
| म० पु०   | अभ्राम्यः  | अभ्राम्यतम्  | अभ्राम्यत  |
| उ० पु०   | अभ्राम्यम् | अभ्राम्याव   | अभ्राम्याम |

√ नृत् = नाचना

|          |          |            |          |
|----------|----------|------------|----------|
| प्र० पु० | अनृत्यत् | अनृत्यताम् | अनृत्यन् |
| म० पु०   | अनृत्यः  | अनृत्यतम्  | अनृत्यत  |
| उ० पु०   | अनृत्यम् | अनृत्याव   | अनृत्याम |

लृट् लकार ( भविष्यत् काल )

√ दिव् = चमकना

|          |            |            |             |
|----------|------------|------------|-------------|
| प्र० पु० | देविष्यति  | देविष्यतः  | देविष्यन्ति |
| म० पु०   | देविष्यसि  | देविष्यथः  | देविष्यथ    |
| उ० पु०   | देविष्यामि | देविष्यावः | देविष्यामः  |

नश् = नष्ट होना

|          |           |           |            |
|----------|-----------|-----------|------------|
| प्र० पु० | नशिष्यति  | नशिष्यतः  | नशिष्यन्ति |
| म० पु०   | नशिष्यसि  | नशिष्यथः  | नशिष्यथ    |
| उ० पु०   | नशिष्यामि | नशिष्यावः | नशिष्यामः  |

## √ तुष् = संतुष्ट होना

|          |            |            |             |
|----------|------------|------------|-------------|
| प्र० पु० | तोक्ष्यति  | तोक्ष्यतः  | तोक्ष्यन्ति |
| म० पु०   | तोक्ष्यसि  | तोक्ष्यथः  | तोक्ष्यथ    |
| उ० पु०   | तोक्ष्यामि | तोक्ष्यावः | तोक्ष्यामः  |

## √ भ्रम् = घूमना

|          |             |             |              |
|----------|-------------|-------------|--------------|
| प्र० पु० | भ्रमिष्यति  | भ्रमिष्यतः  | भ्रमिष्यन्ति |
| म० पु०   | भ्रमिष्यसि  | भ्रमिष्यथः  | भ्रमिष्यथ    |
| उ० पु०   | भ्रमिष्यामि | भ्रमिष्यावः | भ्रमिष्यामः  |

## √ नृत् = नाचना

|          |             |             |              |
|----------|-------------|-------------|--------------|
| प्र० पु० | नर्तिष्यति  | नर्तिष्यतः  | नर्तिष्यन्ति |
| म० पु०   | नर्तिष्यसि  | नर्तिष्यथः  | नर्तिष्यथ    |
| उ० पु०   | नर्तिष्यामि | नर्तिष्यावः | नर्तिष्यामः  |

## लोट् लकार ( आज्ञा भाव )

## √ दिव् ( दीव् ) = चमकना

|          |          |           |           |
|----------|----------|-----------|-----------|
| प्र० पु० | दीव्यतु  | दीव्यताम् | दीव्यन्तु |
| म० पु०   | दीव्य    | दीव्यतम्  | दीव्यत    |
| उ० पु०   | दीव्यानि | दीव्याव   | दीव्याम   |

## √ नश् = नष्ट होना

|          |         |          |          |
|----------|---------|----------|----------|
| प्र० पु० | नश्यतु  | नश्यताम् | नश्यन्तु |
| म० पु०   | नश्य    | नश्यतम्  | नश्यत    |
| उ० पु०   | नश्यानि | नश्याव   | नश्याम   |

## √ तुष् = संतुष्ट होना

|          |          |           |           |
|----------|----------|-----------|-----------|
| प्र० पु० | तुष्यतु  | तुष्यताम् | तुष्यन्तु |
| म० पु०   | तुष्य    | तुष्यतम्  | तुष्यत    |
| उ० पु०   | तुष्याणि | तुष्याव   | तुष्याम   |

√ भ्रम् ( भ्राम् ) = घूमना

|          |            |             |             |
|----------|------------|-------------|-------------|
| प्र० पु० | भ्राम्यतु  | भ्राम्यताम् | भ्राम्यन्तु |
| म० पु०   | भ्राम्य    | भ्राम्यतम्  | भ्राम्यत    |
| उ० पु०   | भ्राम्याणि | भ्राम्याव   | भ्राम्याम   |

√ नृत् = नाचना

|          |          |           |           |
|----------|----------|-----------|-----------|
| प्र० पु० | नृत्यतु  | नृत्यताम् | नृत्यन्तु |
| म० पु०   | नृत्य    | नृत्यतम्  | नृत्यत    |
| उ० पु०   | नृत्यानि | नृत्याव   | नृत्याम   |

विधिलिङ् लकार ( विधि-भाव )

√ दिव् ( दीव् ) = चमकना

|          |           |            |           |
|----------|-----------|------------|-----------|
| प्र० पु० | दीव्येत्  | दीव्येताम् | दीव्येयुः |
| म० पु०   | दीव्येः   | दीव्येतम्  | दीव्येत   |
| उ० पु०   | दीव्येयम् | दीव्येव    | दीव्येम   |

√ नश् = नष्ट होना

|          |          |           |          |
|----------|----------|-----------|----------|
| प्र० पु० | नश्येत्  | नश्येताम् | नश्येयुः |
| म० पु०   | नश्येः   | नश्येतम्  | नश्येत   |
| उ० पु०   | नश्येयम् | नश्येव    | नश्येम   |

√ तुष् = संतुष्ट होना

|          |           |            |           |
|----------|-----------|------------|-----------|
| प्र० पु० | तुष्येत्  | तुष्येताम् | तुष्येयुः |
| म० पु०   | तुष्येः   | तुष्येतम्  | तुष्येत   |
| उ० पु०   | तुष्येयम् | तुष्येव    | तुष्येम   |

√ भ्रम् ( भ्राम् ) = घूमना

|          |             |              |             |
|----------|-------------|--------------|-------------|
| प्र० पु० | भ्राम्येत्  | भ्राम्येताम् | भ्राम्येयुः |
| म० पु०   | भ्राम्येः   | भ्राम्येतम्  | भ्राम्येत   |
| उ० पु०   | भ्राम्येयम् | भ्राम्येव    | भ्राम्येम   |

## √ नृत् = नाचना

|          |           |            |           |
|----------|-----------|------------|-----------|
| प्र० पु० | नृत्येत्  | नृत्येताम् | नृत्येयुः |
| म० पु०   | नृत्ये:   | नृत्येतम्  | नृत्येत   |
| उ० पु०   | नृत्येयम् | नृत्येव    | नृत्येम   |

## चुरादिगण

## लट् लकार ( वर्तमानकाल )

## √ चूर् ( चोर ) = चुराना

|          |         |         |          |
|----------|---------|---------|----------|
| प्र० पु० | चोरयति  | चोरयतः  | चोरयन्ति |
| म० पु०   | चोरयसि  | चोरयथः  | चोरयथ    |
| उ० पु०   | चोरयामि | चोरयावः | चोरयामः  |

## √ कथ् = कहना

|          |        |        |         |
|----------|--------|--------|---------|
| प्र० पु० | कथयति  | कथयतः  | कथयन्ति |
| म० पु०   | कथयसि  | कथयथः  | कथयथ    |
| उ० पु०   | कथयामि | कथयावः | कथयामः  |

## √ भक्ष् = खाना

|          |          |          |           |
|----------|----------|----------|-----------|
| प्र० पु० | भक्षयति  | भक्षयतः  | भक्षयन्ति |
| म० पु०   | भक्षयसि  | भक्षयथः  | भक्षयथ    |
| उ० पु०   | भक्षयामि | भक्षयावः | भक्षयामः  |

## √ क्षल् ( क्षाल् ) = धोना

|          |           |           |            |
|----------|-----------|-----------|------------|
| प्र० पु० | क्षालयति  | क्षालयतः  | क्षालयन्ति |
| म० पु०   | क्षालयसि  | क्षालयथः  | क्षालयथ    |
| उ० पु०   | क्षालयामि | क्षालयावः | क्षालयामः  |

## लङ् लकार ( भूतकाल )

## √ चूर् ( चोर ) = चुराना

|          |         |           |         |
|----------|---------|-----------|---------|
| प्र० पु० | अचोरयत् | अचोरयताम् | अचोरयन् |
| म० पु०   | अचोरयः  | अचोरयतम्  | अचोरयत  |
| उ० पु०   | अचोरयम् | अचोरयाव   | अचोरयाम |



## कथ् = कहना

|          |        |          |        |
|----------|--------|----------|--------|
| प्र० पु० | अकथयत् | अकथयताम् | अकथयन् |
| म० पु०   | अकथयः  | अकथयतम्  | अकथयत  |
| उ० पु०   | अकथयम् | अकथयाव   | अकथयाम |

## √ भक्ष् = खाना

|          |          |            |          |
|----------|----------|------------|----------|
| प्र० पु० | अभक्षयत् | अभक्षयताम् | अभक्षयन् |
| म० पु०   | अभक्षयः  | अभक्षयतम्  | अभक्षयत  |
| उ० पु०   | अभक्षयम् | अभक्षयाव   | अभक्षयाम |

## √ क्षल् ( क्षाल् ) = धोना

|          |           |             |           |
|----------|-----------|-------------|-----------|
| प्र० पु० | अक्षालयत् | अक्षालयताम् | अक्षालयन् |
| म० पु०   | अक्षालयः  | अक्षालयतम्  | अक्षालयत  |
| उ० पु०   | अक्षालयम् | अक्षालयाव   | अक्षालयाम |

## लृट् लकार ( भविष्यत् काल )

## √ चुर ( चोर् ) = चुराना

|          |             |             |              |
|----------|-------------|-------------|--------------|
| प्र० पु० | चोरयिष्यति  | चोरयिष्यतः  | चोरयिष्यन्ति |
| म० पु०   | चोरयिष्यसि  | चोरयिष्यथः  | चोरयिष्यथ    |
| उ० पु०   | चोरयिष्यामि | चोरयिष्यावः | चोरयिष्यामः  |

## √ कथ् = कहना

|          |            |            |             |
|----------|------------|------------|-------------|
| प्र० पु० | कथयिष्यति  | कथयिष्यतः  | कथयिष्यन्ति |
| म० पु०   | कथयिष्यसि  | कथयिष्यथः  | कथयिष्यथ    |
| उ० पु०   | कथयिष्यामि | कथयिष्यावः | कथयिष्यामः  |

## √ भक्ष् = खाना

|          |              |              |               |
|----------|--------------|--------------|---------------|
| प्र० पु० | भक्षयिष्यति  | भक्षयिष्यतः  | भक्षयिष्यन्ति |
| म० पु०   | भक्षयिष्यसि  | भक्षयिष्यथः  | भक्षयिष्यथ    |
| उ० पु०   | भक्षयिष्यामि | भक्षयिष्यावः | भक्षयिष्यामः  |

√ क्षल् ( क्षाल् ) = धोना

|          |               |               |                |
|----------|---------------|---------------|----------------|
| प्र० पु० | क्षालयिष्यति  | क्षालयिष्यतः  | क्षालयिष्यन्ति |
| म० पु०   | क्षालयिष्यमि  | क्षालयिष्यथः  | क्षालयिष्यथ    |
| उ० पु०   | क्षालयिष्यामि | क्षालयिष्यावः | क्षालयिष्यामः  |

लोट् लकार ( आज्ञा भाव )

√ चूर् ( चोर् ) = चुराना

|          |         |          |          |
|----------|---------|----------|----------|
| प्र० पु० | चोरयतु  | चोरयताम् | चोरयन्तु |
| म० पु०   | चोरय    | चोरयतम्  | चोरयत    |
| उ० पु०   | चोरयाणि | चोरयाव   | चोरयाम   |

√ कथ् = कहना

|          |        |         |         |
|----------|--------|---------|---------|
| प्र० पु० | कथयतु  | कथयताम् | कथयन्तु |
| म० पु०   | कथय    | कथयतम्  | कथयत    |
| उ० पु०   | कथयाणि | कथयाव   | कथयाम   |

√ भक्ष् = खाना

|          |          |           |           |
|----------|----------|-----------|-----------|
| प्र० पु० | भक्षयतु  | भक्षयताम् | भक्षयन्तु |
| म० पु०   | भक्षय    | भक्षयतम्  | भक्षयत    |
| उ० पु०   | भक्षयाणि | भक्षयाव   | भक्षयाम   |

√ क्षल् ( क्षाल् ) = धोना

|          |           |            |            |
|----------|-----------|------------|------------|
| प्र० पु० | क्षालयतु  | क्षालयताम् | क्षालयन्तु |
| म० पु०   | क्षालय    | क्षालयतम्  | क्षालयत    |
| उ० पु०   | क्षालयाणि | क्षालयाव   | क्षालयाम   |

विधिलिङ् लकार ( विधि-भाव )

√ चूर् ( चोर् ) = चुराना

|          |          |           |          |
|----------|----------|-----------|----------|
| प्र० पु० | चोरयेत्  | चोरयेताम् | चोरयेयुः |
| म० पु०   | चोरयेः   | चोरयेतम्  | चोरयेत   |
| उ० पु०   | चोरयेयम् | चोरयेव    | चोरयेम   |

## √ कथ् = कहना

|          |         |          |         |
|----------|---------|----------|---------|
| प्र० पु० | कथयेत्  | कथयेताम् | कथयेयुः |
| म० पु०   | कथयेः   | कथयेतम्  | कथयेत   |
| उ० पु०   | कथयेयम् | कथयेव    | कथयेम   |

## √ भक्ष् = खाना

|          |           |            |           |
|----------|-----------|------------|-----------|
| प्र० पु० | भक्षयेत्  | भक्षयेताम् | भक्षयेयुः |
| म० पु०   | भक्षयेः   | भक्षयेतम्  | भक्षयेत   |
| उ० पु०   | भक्षयेयम् | भक्षयेव    | भक्षयेम   |

## √ क्षल् ( क्षाल् ) = धोना

|          |            |             |            |
|----------|------------|-------------|------------|
| प्र० पु० | क्षालयेत्  | क्षालयेताम् | क्षालयेयुः |
| म० पु०   | क्षालयेः   | क्षालयेतम्  | क्षालयेत   |
| उ० पु०   | क्षालयेयम् | क्षालयेव    | क्षालयेम   |

## शब्द रचना

धातुओं से क्त, क्त्वा, तुमुन्, तव्य, अनीय- कृदन्त प्रत्यय लगाकर विभिन्न अर्थों में नए शब्द बनाए जाते हैं। कुछ धातुओं के ऐसे कृदन्त रूप नीचे दिए गए हैं। पहली दो धातुओं से बने शब्दों के अर्थ भी दिए गए हैं। शेष शब्दों के अर्थ उसी आधार पर समझे जा सकते हैं।

| धातु | क्त    | क्त्वा | तुमुन्        | तव्य         | अनीय         |
|------|--------|--------|---------------|--------------|--------------|
|      | (किया) | (करके) | (करने के लिए) | (करने योग्य) | (करने योग्य) |
| भू   | भूत    | भूत्वा | भवितुम्       | भवितव्य      | भवनीय        |
|      | (हुआ)  | (होकर) | (होने के लिए) | (होने योग्य) | (होने योग्य) |
| गम्  | गत     | गत्वा  | गन्तुम्       | गन्तव्य      | गमनीय        |
|      | (गया)  | (जाकर) | (जाने के लिए) | (जाने योग्य) | (जाने योग्य) |
| पा   | पीत    | पीत्वा | पातुम्        | पातव्य       | पानीय        |
| नी   | नीत    | नीत्वा | नेतुम्        | नेतव्य       | नयनीय        |
| सृ   | सृत    | सृत्वा | सर्तुम्       | सर्तव्य      | सरणीय        |

|         |         |             |             |             |           |
|---------|---------|-------------|-------------|-------------|-----------|
| स्मृ    | स्मृत   | स्मृत्वा    | स्मर्तुम्   | स्मर्तव्य   | स्मरणीय   |
| दृश्    | दृष्ट   | दृष्ट्वा    | दृष्टुम्    | द्रष्टव्य   | दर्शनीय   |
| स्था    | स्थित   | स्थित्वा    | स्थातुम्    | स्थातव्य    | स्थानीय   |
| दा      | दत्त    | दत्त्वा     | दातुम्      | दातव्य      | दानीय     |
| पठ्     | पठित    | पठित्वा     | पठितुम्     | पठितव्य     | पठनीय     |
| अर्च्   | अर्चित  | अर्चित्वा   | अर्चितुम्   | अर्चितव्य   | अर्चनीय   |
| कूज्    | कूजित   | कूजित्वा    | कूजितुम्    | कूजितव्य    | कूजनीय    |
| प्रच्छ् | पृष्ट   | पृष्ट्वा    | प्रष्टुम्   | प्रष्टव्य   | प्रच्छनीय |
| नृत्    | नर्तित  | नर्तित्वा   | नर्तितुम्   | नर्तितव्य   | नर्तनीय   |
| चुर्    | चोरित   | चोरयित्वा   | चोरयितुम्   | चोरयितव्य   | चोरणीय    |
| कथ्     | कथित    | कथयित्वा    | कथयितुम्    | कथयितव्य    | कथनीय     |
| भक्ष्   | भक्षित  | भक्षयित्वा  | भक्षयितुम्  | भक्षयितव्य  | भक्षणीय   |
| क्षल्   | क्षालित | क्षालयित्वा | क्षालयितुम् | क्षालयितव्य | क्षालनीय  |

**उपपद विभक्ति-** जब किसी विशेष पद (संज्ञा अथवा क्रिया) के कारण किसी विशेष विभक्ति का प्रयोग होता है, तो उस विभक्ति को उपपद विभक्ति कहा जाता है। यथा- पुत्रः जनकेन सह गच्छति। यहाँ 'सह' के कारण 'जनक' शब्द में तृतीया विभक्ति लगी है, यद्यपि हिन्दी वाक्य में 'पिता के साथ' सह सम्बन्धी कारक षष्ठी विभक्ति प्रतीत होती है।

१. विना, धिक्, सर्वतः, परितः, अभितः, उभयतः इन शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है जैसे -

|                  |   |                                |
|------------------|---|--------------------------------|
| विना (बिना)      | = | तं विना तत्र कः गच्छेत्?       |
|                  | = | उसके बिना वहाँ कौन जा सकता है। |
| धिक् (धिक्कार)   | = | धिक् पिशुनम्।                  |
|                  | = | चुगलखोर को धिक्कार है।         |
| सर्वतः (सब तरफ)  | = | ग्रामं सर्वतः जलं वर्तते।      |
|                  | = | गाँव के सब ओर जल है।           |
| परितः (चारों ओर) | = | ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति।    |
|                  | = | गाँव के चारों ओर वृक्ष हैं।    |

- अभितः (दोनों ओर) = ग्रामम् अभितः नदी बहति ।  
 = गाँव के दोनों ओर नदी बहती है ।  
 उभयतः (दोनों ओर) = विद्यालयम् उभयतः जलं वर्तते ।  
 = विद्यालय के दोनों ओर जल है ।

२. सह, साकम्, सार्धम्, अलम् इन शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है ।

- सह (साथ) = अहं विद्वद्भिः सह गच्छामि ।  
 = मैं विद्वानों के साथ जाता हूँ ।  
 साकम् (साथ) = त्वया साकम् अन्य कः आगमिष्यति ?  
 = तुम्हारे साथ दूसरा कौन आएगा ?  
 सार्धम् (साथ) = मया सार्धं कविता पठ ।  
 = मेरे साथ कविता पढ़ ।  
 अलम् (बस) = अलं विषादेन ।  
 = संताप बस करो ।

३. नमः, दा (यच्छ) के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है ।

- नमः (नमस्कार) = देवाय नमः ।  
 = देव को नमस्कार है ।  
 दा (देना) = मुख्याध्यापकः छात्राय पुरस्कारं यच्छति ।  
 = मुख्याध्यापक छात्र को इनाम देता है ।

४. भयम्, पृथक्, अन्य, आरभ्य, अनन्तरम्, बहिः, तुलनार्थक तर- प्रत्यय के योग में पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है ।

- भयम् (डर) = अत्र चौरात् भयं नास्ति ।  
 = यहाँ चोर का भय नहीं है ।  
 पृथक् (अलग होना) = कृष्णः रामात् पृथक् न अस्ति ।  
 अन्य (बिना) = मित्रात् अन्य कः मां रक्षितुं समर्थः ।  
 = मित्र के बिना कौन मेरी रक्षा करने में समर्थ है ।  
 आरभ्य (लेकर) = ततः आरभ्य मया दुग्धं न पीतम् ।  
 = तब से मैंने दूध नहीं पिया ।  
 अनन्तरम् (बाद) = सोमवारात् अनन्तरम् आगमिष्यामि ।  
 = (मैं) सोमवार के बाद आऊँगा ।



- बहिः (बाहर) = नगरात् बहिः एकम् उद्यानम् अस्ति ।  
 = नगर से बाहर एक बगीचा है ।
- तुलनार्थक तम-प्रत्यय = जहाँ एक वस्तु की दूसरी वस्तु से तुलना की जाए ।  
 = राजेशः दिनेशात् मूर्खतरः ।  
 = राजेश दिनेश से अधिक मूर्ख है ।
५. सदृश, तुल्य, समीप के योग में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है ।
- सदृश (जैसा है) = स कृष्णस्य सदृशः ।  
 = वह कृष्ण जैसा है ।
- तुल्य (समान) = एषः बालः पितुः तुल्यः अस्ति ।  
 = यह बालक पिता के समान है ।
- समीप (पास) = ग्रामस्य समीपे विद्यालयः अस्ति ।  
 = गाँव के समीप विद्यालय है ।
६. स्निह, कुशल, अतिशयार्थक तम-प्रत्यय के योग में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है ।
- स्निह (स्नेह करना) = पिता पुत्रे स्निह्यति ।  
 = पिता पुत्र पर स्नेह करता है ।
- कुशल (चतुर) = स व्याकरणे कुशलः ।  
 = वह व्याकरण में कुशल है ।
- अतिशयार्थक तम-प्रत्यय = जहाँ एक वस्तु को दूसरी वस्तु से श्रेष्ठ बताया जाए ।  
 = कविषु कालिदासः श्रेष्ठतमः ।  
 = कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है ।

### उपसर्ग प्रकरणम्

उपसर्गों का धातुओं के साथ प्रयोग होता है । उपसर्ग लगने से धातु का अर्थ बदल जाता है । यहाँ पर कुछ प्रष्टव्य धातुओं के साथ कुछ उपसर्गों का प्रयोग दिया जाता है -

- प्र + भू (समर्थ होना) = प्रभवति  
 प्र + विश् (प्रवेश करना) = प्रविशति  
 प्र + क्षल् (धोना) = प्रक्षालयति  
 प्र + ह् (प्रहार करना) = प्रहरति





३. सदा (हमेशा) सदा सत्यं वद ।  
(हमेशा सच बोलो)
४. अतीव (अत्यधिक) अद्य अतीव शैत्यम् अस्ति ।  
(आज अत्यधिक ठंड है)
५. सार्धम् (साथ) शिष्यः गुरुणा सार्धम् गच्छति ।  
(शिष्य गुरु के साथ जाता है)
६. श्वः (आने वाला कल) श्वः अहम् शिमला नगरं गमिष्यामि  
(कल मैं शिमला जाऊँगा)
७. ह्यः (बीता हुआ कल) ह्यः अत्र वृष्टिः अभवत् ।  
(कल यहाँ वर्षा हुई थी)
८. कुतः (कहाँ से) इदम् रेलयानम् कुतः आगच्छत् ?  
(यह रेलगाड़ी कहाँ से आई)
९. अद्यत्वे (आजकल) अद्यत्वे अस्माकं परीक्षा भवति ।  
(आजकल हमारी परीक्षा हो रही है)
१०. इह (यहाँ) इह आगच्छ ।  
(तू यहाँ आ जा)
११. अपि (भी) अध्यापकेन सह छात्राः अपि गच्छन्ति ।  
(अध्यापक के साथ विद्यार्थी भी जाते हैं)
१२. सततम् (लगातार) सः सततम् स्वपिति ।  
(वह लगातार सोता है)
१३. अतः (इसलिए) अतः सः प्रत्यागच्छत् ।  
(इसलिए वह वापस चला गया)
१४. शीघ्रम् (जल्दी) शुभस्य शीघ्रम् करणीयम् ।  
(शुभ कार्य को जल्दी करना चाहिए)
१५. सहसा (अचानक) सहसा वने सिंहः आगच्छत् ।  
(अचानक जंगल में शेर आ गया)
१६. पुनः (दोबारा) गतः कालः पुनः न आगच्छति  
(बीता समय दोबारा नहीं आता)

१७. अद्य (आज) अद्य अस्माकं बाल सभा भविष्यति  
(आज हमारी बाल सभा होगी)
१८. प्रातः (सुबह) प्रातः भ्रमणाय गन्तव्यम्।  
(सुबह घूमने के लिए जाना चाहिए)
१९. तूष्णीम् (चुपचाप) कक्षायां छात्राः तूष्णीम् उपविशन्ति।  
(कक्षा में विद्यार्थी चुपचाप बैठे हैं)
२०. कुत्र (कहाँ) त्वम् कुत्र वससि ?  
(तुम कहाँ रहते हो)
२१. कथम् (कैसे) त्वम् अमृतसर-नगरात् कथम् आगच्छः ?  
(तू अमृतसर से कैसे आया ?)
२२. अद्यः (नीचे) सः वृक्षस्य अद्यः तिष्ठति।  
(वह वृक्ष के नीचे खड़ा है)
२३. उच्चैः (जोर से) छात्राः उच्चैः न पठन्तु।  
(विद्यार्थी ऊँची आवाज में न पढ़ें)
२४. साम्प्रतम् (अब) साम्प्रतम् वयम् स्वतंत्राः स्मः।  
(अब हम आजाद हैं)
२५. सह (साथ) रामेण सह सीता अपि अगच्छत्।  
(राम के साथ सीता भी चली गई)
२६. सर्वत्र (सब जगह) ईश्वरः सर्वत्र अस्ति।  
(ईश्वर सब जगह है)
२७. शनैः-शनैः (धीरे-धीरे) गजः शनैः-शनैः गच्छति।  
(हाथी धीरे-धीरे जा रहा है)
२८. एकदा (एक बार) एकदा अहम् नगरं अगच्छम्।  
(एक बार मैं शहर गया)
२९. यदि (यदि) यदि पठिष्यसि तर्हि सफलः भविष्यसि।  
(यदि पढ़ोगे तो सफल होंगे)
३०. अलम् (बस करो) अलम् कोलाहलेन।  
(शोर मत करो)

३१. बिना (बिना) परिश्रमं बिना विद्या न भवति।  
(मेहनत के बिना विद्या नहीं आती है)
३२. एव (ही) युवयोः एक एव अत्र आगच्छ।  
(तुम दोनों में से एक ही यहां आए)
३३. नूनम् (निश्चय ही) नूनम् एषः सिंहः अस्ति  
(निश्चय ही यह शेर है)
३४. नमः (नमस्कार हो) ॐ नमः शिवाय।  
(भगवान शिव को मेरा नमस्कार है)
३५. मनाक् (थोड़ा सा) सः श्रमं मनाक् अपि न अगणयत्।  
(उसने थकान की जरा-सी परवाह भी नहीं की)
३६. मुहूर्तकं (थोड़ी देर) मुहूर्तकं अत्र उपविश।  
(थोड़ी देर यहाँ बैठो)
३७. कदाचित् (कभी-कभी) कदाचित् अहम् एकं मूषिकं प्राप्नोमि।  
(मुझे कभी-कभी एक चूहा मिलता है)
३८. ततः (उसके बाद) ततः सः गृहं प्रत्यावर्तत्।  
(तब वह घर की ओर लौट पड़ा)
३९. तथा (उस प्रकार) त्वया तथा न कर्तव्यम्।  
(तुझे उस प्रकार नहीं करना चाहिए)
४०. कदापि (कभी भी) मदिरा कदापि न पातव्या।  
(शराब कभी नहीं पीनी चाहिए)



## पत्र प्रकरणम्

१. अनुपस्थितिः विषयकम् आवेदन-पत्रम्।

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यः महोदयः,  
उच्चतरः माध्यमिकः विद्यालयः,  
जालन्धर नगरम्।

श्रीमन् !

सविनयम् निवेदनम् अस्ति, यत् अद्य मां गृहे एकं विशिष्टं कार्यम् अस्ति।  
अतः अहं अद्य विद्यालयं आगन्तुं न शक्नोमि। कृपया एकस्य दिवस्य अवकाशं  
दत्त्वा मां कृतार्थम् कुरु।

दिनांक --- २००३

भवतः आज्ञाकारी शिष्यः

राकेशः

नवम् कक्षा, क विभागः।

क्रमांक-१५

\*\*\*

२. रुग्ण-अवकाशाय आवेदन पत्रम्।

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यः महोदयः,  
डी०ए०वी० उच्चतरः माध्यमिक विद्यालयः,  
अमृतसर नगरम्।

श्रीमन् !

सविनयम् इयं प्रार्थना अस्ति यत् ह्यः यदा अहं विद्यालयात् गृहम् अगच्छम्,  
तदा एव शीतेन सह ज्वरः अभवत्। अतः रुग्णत्वात् अहम् अद्य विद्यालयम्

आगन्तुं न समर्थः । कृपया एकस्य दिवस्य अवकाशः प्रदातव्यः । भवतः महती कृपा भविष्यति ।

दिनांक : ..... २००३

भवदीयः आज्ञाकारी शिष्यः,

दिनेशः

नवम् कक्षा, क विभागः ।

क्रमांक - २८

\*\*\*

### ३. शुल्क-क्षमार्थम् आवेदनपत्रम्

सेवायाम्

माननीयः प्रधानाध्यापकः महोदयः,

उच्चतरः माध्यमिकः विद्यालयः

पटियाला नगरम् ।

श्रीमन् !

सविनयम् इयं प्रार्थना अस्ति यत् अहं भवतः विद्यालये नवं कक्षायां पठामि मम पिता एकः सामान्यः श्रमिकः अस्ति । वयं त्रयः भ्रातरः अस्मिन् विद्यालये पठामः । वयं सर्वे भ्रातरः पठने, क्रीडने, गायने भाषणे च योग्याः स्मः । गृहे धनस्य अभावः अस्ति । विद्यालयस्य सर्वे अध्यापकाः मयि स्निह्यन्ति । परं खेदः यत् अहं विद्यालयस्य मासिकं शुल्कं दातुं सर्वथा एव असमर्थः अस्मि । कृपया मदीयं मासिकं शुल्कं क्षमां कृत्वा अनुगृहीतव्यः ।

भवदीयः आज्ञाकारी शिष्यः,

दीप कुमारः

नवम् कक्षा क विभागः ।

क्रमांकः १०

दिनांकः .....



#### ४. मित्राय भ्रमण-विषयकम् पत्रम् ।

विकास नगरम् अमृतसरतः,

५-३-२००३

प्रिय मित्र राहुलः

सादरं वन्दे ।

समाचारम् इदम् अस्ति यत् अस्माकं ग्रीष्मावकाशाः जून मासस्य प्रथमे सप्ताहे भविष्यन्ति । मदीया इयं प्रचलतमा इच्छा अस्ति यत् आवां भ्रमणाय शिमला नगरं चलेव । तत्र तव मातुलः मम च पितृव्यः अस्ति । तौ एकस्मिन् एव कार्यालये कार्यं कुरुतः । अतः तत्र गमने न कापि कठिनता भविष्यति । तत्र गमने द्वौ लाभौ स्तः । प्रथमः लाभः यत् आवाम् मिलित्वा पठिष्यावः भ्रमिष्यावः च । द्वितीयः लाभः यत् अस्माकं स्वास्थ्यं वर्धिष्यते ।

अतः स्वपितुः आज्ञां प्राप्य अतिशीघ्रं पत्रोत्तरं प्रदातव्यम् ।

भवदीयं मित्रम्,

मुनीषः



## निबन्ध

### अस्माकं विद्यालयः

अस्माकं विद्यालयस्य नाम '-----' उच्चतरः माध्यमिकः विद्यालयः अस्ति । एतस्य भवनम् अतिविशालं सुंदरं च अस्ति । अत्र बहवः छात्राः पठन्ति ।

अस्माकं विद्यालये विंशतिः अध्यापकाः सन्ति । सर्वे अध्यापकाः सुयोग्याः सुशिक्षिताः च सन्ति । अस्माकं मुख्याध्यापकः अपि सुशिक्षितः सुप्रबन्धकः च अस्ति । सर्वे अध्यापकाः छात्राः च तस्य सम्मानं कुर्वन्ति ।

अस्माकं विद्यालये पुस्तकालयः अपि अस्ति । तत्र छात्राः समाचार - पत्राणि पठन्ति ।

अस्माकं विद्यालयस्य क्रीडाक्षेत्रं विशालम् अस्ति । तत्र छात्राः प्रतिदिनं क्रीडन्ति । क्रीडाक्षेत्रे अस्माकं विद्यालयः अग्रणीयः अस्ति ।

अस्माकं विद्यालयस्य छात्राः गणवेष्टे आगच्छन्ति । अतः ते अतिप्रियाः श्रेष्ठाः च लगन्ति । अस्माकं विद्यालयस्य परिणामः सर्वोत्तमः भवति । अस्माकं विद्यालयः सम्पूर्ण-पंजाब-प्रान्ते प्रसिद्धः अस्ति । एतत् विद्यालयं प्राप्य वयं धन्याः स्मः ।

### मम प्रिय मित्रम्

मानवः सामाजिकः प्राणी अस्ति । समाजे सुखपूर्वकं जीवनं गमयितुम् संमित्रस्य आवश्यकता अस्ति । संजीवः मम प्रियं मित्रम् अस्ति ।

संजीवः मम प्रतिवेशी अस्ति । सः मम विद्यालये मया सह पठति । तस्य जनकः चिकित्सकः अस्ति माता च अध्यापिका । स स्वस्थः, स्वच्छः, गुणवान्, बुद्धिमान् च अस्ति । सः मातुः, पितुः, गुरुणां च आदरं करोति । आवां प्रातः भ्रमणाय गच्छावः, खेलावः पठावः च ।

संजीवः अस्माकं कक्षायाः नायकः अस्ति । सः अध्ययने अतीव निपुणः अस्ति ।

सः सर्वेषां छात्राणां अध्यापकानां च प्रियः अस्ति । सः सच्चरित्रः, विवेकशीलः सद्व्यवहारशीलः च अस्ति । सः पादकन्दुकस्य सुयोग्यः क्रीडकः अस्ति । सः मृदुभाषी, संगीतज्ञः गायकः च अस्ति । सः निर्धनानां छात्राणां सदैव सहायतां करोति । एतादृशम् मित्रं प्राप्य अहं गौरवम् अनुभवामि ।

## दीपावली

अस्माकं देशे जनाः बहवः उत्सवाः मानयन्ति । परं च तेषु दीपावली उत्सवः अतीव प्रसिद्धः अस्ति । कार्तिक-मासस्य कृष्णपक्षे अमावस्यायां जनाः स्वगृहेषु मालारूपेण दीपान् स्थापयन्ति । अतएव एषः उत्सवः दीपमाला इति प्रसिद्धः । सर्वं प्रथमा दीपमाला रावणं जित्वा आयोध्यां सम्प्राप्ते रामे तत्रत्यैः जनैः हर्षं प्रकटीकर्तुं घृतदीपान् प्रज्वाल्य कृता । तदारभ्य अयम् उत्सवः प्रतिवर्षं सोत्साहं मन्यते ।

अस्मिन् एव दिने जैनानाम् अन्तिमः तीर्थंकरः महावीरः मोक्षं प्राप्तः । आर्यसमाज-प्रवर्तकः महर्षिः दयानन्दः स्वर्गं गतः । ग्वालियर-कारागारात् मुक्तः षष्ठः सिक्ख गुरुः हरगोबिन्दः अस्मिन् एव दिने अमृतसरम् आगच्छत् । अस्मिन् एव दिने स्वामी रामतीर्थः देहं त्यक्त्वा मुक्तः अभवत् । अतः सर्वेषां भारतीयां कृते इदं पुण्यकारकं दिनम् ।

जनाः दीपमालायाः पूर्वम् एव तस्याः स्वगताय सयत्नाः भवन्ति । त्रयोदश्यां ते हाटकात् नूतन-पात्राणि क्रीत्वा गृहम् आनयन्ति । अन्येद्युः नरक-चतुर्दश्यां स्वगृहाणि निर्मलानि कुर्वन्ति । अस्मिन् एव दिने भगवता नरकासुरवधः कृतः । अस्मिन् एव दिने नृसिंहः भक्त-प्रह्लादम् अरक्षत् । रात्रौ गृहे लक्ष्मी पूजनं भवति ।

अस्य उत्सवस्य एकः दोषः अपि अस्ति यत् दीपमाला-रात्रौ केचित् जनाः द्यूतक्रीडां मदिरापानं च कुर्वन्ति । परित्यक्तव्यः अस्माभिः एषः दोषः ।

\*\*\*\*

## मम अध्यापकः

मम विद्यालये बहवः अध्यापकाः सन्ति । सर्वे अध्यापकाः विद्वांसः, परिश्रमशीलाः च सन्ति, परं तेषु श्री सुरेन्द्रः मम प्रियः अध्यापकः अस्ति । सः सुयोग्यः सुशिक्षितः च अस्ति । सः अस्मान् संस्कृतं पाठयति । सः संस्कृत-भाषायाः प्रसिद्धः विद्वान् अस्ति । सः आंग्ल भाषायाः अपि विद्वान् अस्ति । तस्य अध्यापन-विधिः सरला सुस्पष्टा च अस्ति । छात्राः तस्य कक्षायां ध्यानेन पठन्ति ।

श्री सुरेन्द्रः सुशीलः अध्यापकः अस्ति । सः सर्वेषु छात्रेषु स्निह्यति । सः छात्रान् कदापि न दण्डयति । सर्वे छात्राः तस्य सम्मानं कुर्वन्ति ।

सः समये विद्यालयम् आगच्छति । सः अनुशासनप्रियः अध्यापकः अस्ति । तस्य स्वभावः अपि सरलः अस्ति । अध्यापकैः सह तस्य व्यवहारः श्रेष्ठः अस्ति । अतः मुख्याध्यापकः अध्यापकाः, च तस्य प्रशंसां कुर्वन्ति । अयं मम अध्यापक-गुणानां निधिः अस्ति । वस्तुतः सः आदर्शः अध्यापकः अस्ति ।

\*\*\*\*

### विज्ञानस्य चमत्काराः

विज्ञानं पदार्थानाम् विशिष्टं ज्ञानम् अस्ति । अस्मिन् मनुष्याणां, पशूनाम्, वनस्पतीनां भौतिक-पदार्थानाम् च ज्ञानं निहितं भवति । विज्ञानेन मनुष्यस्य, जीवनं सुखमयं कष्टरहितं च भवति ।

अद्यत्वे यातायातस्य साधनानि सुलभानि सन्ति । अद्यतनं युगं वैज्ञानिकं युगम् अस्ति । विज्ञानेन जनाः आकाशमार्गेण अल्पेन एव कालेन सुदूरं प्राप्नुवन्ति । राकेट-यानेन अन्तरिक्ष-यात्रिणः चन्द्रलोकमपि प्राप्ताः ।

विज्ञानेन नवानि संचार-साधनानि सुलभानि सन्ति । दूरभाषेण दूरे स्थिताः अपि जनाः परस्परं वार्तालापं कुर्वन्ति । दूरदर्शने वयम् वक्तुः चित्रमपि पश्यामः ।

विद्युतः शक्तिः विज्ञानस्य महत्त्वपूर्णः आविष्कारः अस्ति । अनेन अस्माकं जीवने महत् परिवर्तनं जातम् अस्ति । रात्रेः अन्धकारः अनेन पूर्णतः वशीकृतः । यदा वयं शीतं अनुभवामः तदा विद्युत्तापकेन शीतं निवारयामः । ग्रीष्मकाले विद्युद-व्यजनैः प्रशीतकैः च वयम् गृहाणि शीतलानि कुर्मः । कम्प्यूटर यन्त्रेण कार्यालयेषु कार्यं शीघ्रम् सुष्ठु-रूपेण च भवति । किम् बहुना, यत्रापि अस्माकं दृष्टिः गच्छति तत्रैव वयं विज्ञानस्य चमत्कारान् पश्यामः ।

◆◆◆◆

## अनुवाद भागः

### अभ्यास १

( कर्ता कारकः, लट् लकार, प्रथम पुरुष )

- |                        |                        |
|------------------------|------------------------|
| १. छात्र पढ़ता है।     | २. अध्यापक बोलता है    |
| ३. बालक हँसता है।      | ४. घोड़ा दौड़ता है।    |
| ५. दो छात्र पढ़ते हैं। | ६. दो बालक हँसते हैं।  |
| ७. दो शिष्य बोलते हैं। | ८. सब बालक हँसते हैं।  |
| ९. बादल गरज रहे हैं    | १० सब लोग हँस रहे हैं। |

### शब्दावली

अश्व (पुं०) = घोड़ा

वद् = बोलना

शिष्य (पुं०) = शिष्य

धाव् = दौड़ना

मेघ (पुं०) = बादल

गर्ज् = गरजना

जन (पुं०) = लोग, आदमी

हस् = हँसना

### अभ्यास २

( कर्ता कारकः लट् लकारः, प्रथम पुरुष )

- |                        |                       |
|------------------------|-----------------------|
| १. वह पढ़ता है।        | २. वह बोलता है        |
| ३. वह हँसती है।        | ४. वह पढ़ती है।       |
| ५. वे दोनों पढ़ते हैं। | ६. वे दोनों पढ़ती हैं |
| ७. वे सब हँसते हैं।    | ८. वे सब बोलते हैं।   |
| ९. वे सब हँसती हैं।    | १०. वे सब बोलती हैं।  |

### अभ्यास ३

( कर्म कारकः लट् लकारः प्रथम पुरुष )

- |                                 |                                       |
|---------------------------------|---------------------------------------|
| १. प्रभा गीता पढ़ती है          | २. वह कथा कर रही है।                  |
| ३. वह पाठ याद कर रही है।        | ४. वह दुध पीता है।                    |
| ५. वे दोनों गंगा पर जा रहे हैं। | ६. वे दोनों बकरियों को ले जा रही हैं। |



७. वे स्कूल कब जाते हैं ?

८. वे हमेशा सत्य बोलती हैं।

९. लड़कियां बन्दर को देख रही हैं।

१०. महिलाएं सूरज को नमस्कार कर रही हैं।

### शब्दावली

स्मृ (स्मर्) = याद करना

बाला (स्त्री०) = लड़की

पा (पिब) = पीना

वानर (पुं०) = बन्दर

दुग्ध (नपुं०) = दूध

सदा (अ) = हमेशा

नी (नय्) = ले जाना

दृश् (पश्य) = देखना

कदा (अ०) = कब

नम् = नमस्कार करना

### अभ्यास ४

(कर्म कारक, लट् लकार, मध्यम पुरुष, प्रश्न वाचक, निषेध वाचक)

१. तू मुनि को नमस्कार क्यों नहीं करता ?

२. तू वस्त्र क्यों नहीं धो रही ?

३. क्या तू फूटबाल खेलता है ?

४. क्या तुम दोनों फल खा रहे हो ?

५. क्या तुम दोनों बाग में जाते हो ?

६. क्या तुम दोनों हवाई जहाज़ को देख रहे हो ?

७. क्या तुम सब विद्या चाहते हो ?

८. तुम सब वृक्ष पर कैसे चढ़ाते हो ?

९. तुम सब चावल कैसे पकाती हो ?

१०. तुम सब ईश्वर को क्यों नहीं भजते हो ?

### शब्दावली

किमर्थम् (क्रि० वि०) = क्यों

पादकन्दुक (नपुं०) = फुटबॉल

वस्त्र (नपुं०) = वस्त्र

उद्यान (नपुं०) = बाग

प्र √क्षाल् = धोना

वायुयान (नपुं०) = हवाई जहाज़

√इष् (इच्छ्) = चाहना

कथम् (अ०) = कैसे

आ √रूह् = चढ़ना

√पच् = पकाना



तण्डुल (नपुं०) = चावल

√भज् = भजना

## अभ्यास ५

(करण कारकः लट् लकारः उत्तम पुरुष)

- |                                 |                                                            |
|---------------------------------|------------------------------------------------------------|
| १. मैं पैर से चलता हूँ।         | २. मैं कानों से सुनता हूँ।                                 |
| ३. मैं आँखों से देखता हूँ।      | ४. मैं हाथों से मिट्टी फैकती हूँ।                          |
| ५. हम दोनों पैर से लिखते हैं।   | ६. हम दोनों नाव से नदी पार करते हैं।                       |
| ७. हम आजकल सुख से रह रहे हैं।   | ८. हम मेहनत से धन कमा रहे हैं।                             |
| ९. हम दाँतों से अन्न चबाते हैं। | १०. हम शरीर से, वाणी से और चित्त से देश की रक्षा करते हैं। |

## शब्दावली

पाद (पुं०) = पैर

श्रु = सुनना

नौका (स्त्री०) = नाव

अद्यत्वे (अ०) = आजकल

कर्ण (नपुं०) = कान

अन्न (नपुं०) = अन्न

चित्त (नपुं०) = चित्त

नेत्र (नपुं०) = आँख

अर्ज् = कमाना

मृत्तिका (स्त्री) = मिट्टी

चर्व् = चबाना

क्षिप् = फैकना

रक्ष् = रक्षा करना

लेखनी (स्त्री०) = पैर, कलम

उद् √ तृ = पार करना

## अभ्यास ६

(सम्प्रदान कारकः लृट् लकारः)

१. मैं तेरे लिए गीत गाऊँगा।
२. माता बच्चों के लिए सब्जी पकाएगी।
३. शिष्य गुरु के लिए तोहफा लाएगा।
४. हम निर्धनों के लिए धन माँगेंगे।
५. वह जीने के लिए झूट बोलेंगे।
६. मैं सेहत के लिए दवाई पीऊँगा।

७. हम देश के लिए प्राण देंगे ।  
 ८. लड़कियां प्रसन्नता के लिए फिल्म देखेंगी ।  
 ९. राजा प्रजा के लिए शत्रुओं का जीतेगा ।  
 १०. वह सोने के लिए यहाँ आएगा ।

### शब्दावली

|                          |                                   |
|--------------------------|-----------------------------------|
| शाक (पुं०) = सब्जी       | चलचित्र (नपुं०) = फिल्म           |
| उपहार (पुं०) = तोहफा     | शयन = सोना                        |
| जीवन (नपुं०) = जिंदगी    | √ त्यज् (नपुं०) = छोड़ना, त्यागना |
| स्वास्थ्य (नपुं०) = सेहत | √ जि (जय्) = जीतना                |
| औषध (नपुं०) = दवाई       | √ याच् = माँगना                   |
| प्राण (पुं०) = प्राण     | √ गै (गाय्) = गाना                |

### अभ्यास ७

#### (अपादान कारक, लड़लकार)

- |                                        |                              |
|----------------------------------------|------------------------------|
| १. आश्रम गाँव से बाहर वन में था        | २. सूर्य से आग पैदा हुई।     |
| ३. लड़की महल से गिर पड़ी।              | ४. भिखारी गाँव-गाँव घूमा।    |
| ५. वह प्रयाग से कल आया था।             | ६. बिल से नेवला निकला।       |
| ७. मुनि ने पिंजरे से तोते को छोड़ दिया | ८. सैनिक घोड़े से गिर पड़ा।  |
| ९. वह आसन से न उठा                     | १०. तू स्कूल से कहाँ गया था? |

### शब्दावली

|                       |                              |
|-----------------------|------------------------------|
| आश्रम (पुं०) = आश्रम  | प्रासाद (पुं०) = महल         |
| बहिः (अ०) = बाहर      | ग्रामात् ग्रामम् = गाँव-गाँव |
| बिल (नपुं०) = बिल     | आसन (नपुं०) = आसन            |
| नकुल (पुं०) = नेवला   | उद् √ स्था (तिष्ठ्) = उठना   |
| पंजर (नपुं०) = पिंजरा | प्र √ भू (भव्) = पैदा होना   |

## अभ्यास ८

(सम्बन्ध कारक, लङ् लकार)

१. तूने कल मेरे भाई को पीटा ?
२. मेरे भाइयों ने मेरी जायदाद की रक्षा नहीं की ।
३. राम दशरथ का पुत्र था ।
४. ऋषि मंत्रों के ज्ञाता थे ।
५. विधाता की कृपा से आग बुझ गई ।
६. भरत ने पिता की प्रतिमा देखी ।
७. शूर्पनखा रावण की बहिन थी ।
८. राम पिता की आज्ञा से वन गए ।
९. मैंने कल तुम्हारा लेख नहीं पढ़ा
१०. सभापति ने दानियों की सूची पढ़ी ।

## शब्दावली

सम्पत्ति (स्त्री०) = जायदाद

दातृ (पुं०) = दानी

सूची (स्त्री०) = सूची, लिस्ट

विधातृ (पुं०) = विधाता

√ ताड् = पीटना

स्वसृ (स्त्री०) = बहिन

## अभ्यास ९

(अधिकरण कारक; लोट् लकार)

१. वह हमारे घर में रामायण पढ़े ।
२. बच्चे रास्ते में न खेलें ।
३. तू अन्धेरे में न दौड़ ।
४. वे दोनों मेरे पास आवें ।
५. तुम दोनों में से एक ही बोले ।
६. स्कूल में सब छात्र पाठ याद करें ।

७. तुम सब यहाँ आओ।
८. कुएं में पानी न देखो।
९. बालक सर्दी में न घूमें।
१०. लड़कियाँ आज रात को उसके घर में नाचें।

### शब्दावली

|                         |                  |
|-------------------------|------------------|
| मार्ग (पुं०) = रास्ता   | √ भ्रम् = घूमना  |
| अन्धकार (पुं०) = अँधेरा | √ नृत् = नाचना   |
| शीतकाल (पुं०) = सर्दी   | √ क्रीड् = खेलना |

### अभ्यास १०

#### (सम्बोधन, विधिलिङ्)

१. गुरु जी, आप आगे-आगे चलें।
२. मूर्ख, तुम्हें प्रभु का भजन करना चाहिए।
३. हे भगवान्, तुम्हारी भक्ति को मैं कभी न भूलूँ।
४. बालकों, तुम्हें किसी का धन नहीं चुराना चाहिए।
५. उसे शराब नहीं पीनी चाहिए।
६. हमें सच बोलना चाहिए।
७. शिकारियों को मृग नहीं मारने चाहिए।
८. भाई, तुम्हें वहाँ नहीं जाना चाहिए।
९. वह (स्त्री) बोझ न ले जाए।
१०. तुम्हें आज रोटी नहीं खानी चाहिए।

### शब्दावली

|                          |                         |
|--------------------------|-------------------------|
| अग्रतः = आगे-आगे         | रोटिका (स्त्री०) = रोटी |
| वि √ स्मृ (स्मर) = भूलना | अद्य (अ०) = आज          |
| मदिरा (स्त्री०) = शराब   | √ हन् = मारना           |
| व्याध (पुं०) = शिकारी    | √ खाद् = खाना           |
| भार (पुं०) = बोझ         | √ चुर = चुराना          |

## अभ्यास ११

( विशेषण - विशेष्य सम्बन्ध )

१. काले बादल जल बरसा रहे हैं।
२. वह लड़की सुन्दर फूल चाहती है।
३. हमारे बाग में सुंदर तालाब है।
४. वह सुंदर लड़की किसकी बेटी है?
५. राही वृक्ष की शीतल छाया में बैठता है।
६. शहद मीठा होता है।
७. कोयल का स्वर मीठा होता है।
८. वीर सैनिकों ने नगर की रक्षा की।
९. कालिदास संस्कृत के प्रसिद्ध कवि हैं।
१०. वृक्ष से सूखे पत्ते गिरते हैं।

## शब्दावली

कृष्ण (वि०) = काला  
 सुंदर (वि०) = सुंदर  
 दुहितृ (स्त्री०) = बेटी  
 पथिक (पुं०) = राही  
 मधु (नपुं०) = शहद  
 स्वर (पुं०) = स्वर  
 मधुर (वि०) = मीठा

सैनिक (पुं०) = सैनिक  
 शुष्क (वि०) = सूखा  
 पत्र (नपुं०) = पत्ता  
 √ रक्ष् = रक्षा करना  
 √ वृष (वर्ष) = बरसना  
 √ इष् (इच्छ्) = चाहना  
 उपविश् = बैठना

## अभ्यास १२

( अस्मद् : युष्मद् )

१. हम प्रतिदिन मंदिर में जाते हैं।
२. अध्यापक तुम सबको पीटेगा।
३. ईश्वर हम सब को देखता है।
४. वह तेरे लिए परिश्रम करेगा।

५. तुम सब मेरे घर कब आओगे ?
६. मैं कल तुम्हारे घर आऊँगा।
७. मैं तुम्हें पूछता हूँ।
८. मेरा भाई कल तुम्हारे घर गया था।
९. तू मेरे लिए दवाई कहां से लाएगा ?
१०. तुम दोनों हमारे पत्रों को क्यों पढ़ते हो ?

### शब्दावली

देवालय (पुं०) = मंदिर

कुतः = कहीं से

√ प्रच्छ् (पृच्छ्) = पूछना

औषध = दवाई

### अभ्यास १३

(तत्, यत्, इदम्, किम्)

१. उन बालकों को यहाँ लाओ।
२. वे किस मार्ग से जाएं ?
३. मृत्यु को कौन चाहता है ?
४. ये छात्र उस होस्टल में रहते हैं।
५. वह किस विद्यालय में पढ़ता है ?
६. इस पाठ को कौन पढ़ेगा ?
७. दरवाजे पर कौन है ?
८. जिसकी बुद्धि उसी का बल।
९. उसके घर में कोई बूढ़ा आदमी नहीं है।
१०. जो बादल गरजते हैं, वे बरसते नहीं।

### शब्दावली

आ √ नी (नय्) = लाना

द्वार (नपुं०) = दरवाजा

छात्रावास (पुं०) = होस्टल

वृद्ध (वि०) = बूढ़ा

नि √ वस् = रहना

बल (नपुं०) = बल



## अभ्यास १४

(संख्यावाचक शब्द)

१. अकेला चाँद अंधेरे को हर लेता है।
२. मनुष्य का एक मुख, एक नाक और दो नेत्र होते हैं।
३. तीन बालक और दो लड़कियाँ खेलती हैं।
४. ये तीन फल किसके हैं?
५. इस घर में चार पुरुष और चार स्त्रियाँ हैं?
६. उस गाँव में चार मित्र रहते हैं।
७. एक वर्ष में बारह महीने होते हैं।
८. हमारी कक्षा में पैंतालीस छात्र हैं।
९. आज पाँच छात्र गैरहाज़िर हैं।
१०. हमारे स्कूल में तिरपन छात्राएँ हैं।

## शब्दावली

|                        |                             |
|------------------------|-----------------------------|
| ह (हर) = हरना          | कर्ण (पुं०) = कान           |
| चन्द्र (पुं०) = चाँद   | वर्ष (पुं०) = वर्ष          |
| मुख (नपुं०) = मुख      | मास (पुं०) = महीना          |
| नासिका (स्त्री०) = नाक | मित्र (नपुं०) = मित्र       |
| नेत्र (नपुं०) = आँख    | अनुपस्थित (वि०) = गैरहाज़िर |

## अभ्यास १५

(प्रेरणार्थक क्रियाएँ)

१. अध्यापक छात्रों को पढ़ाता है।
२. मैं बस चलाता हूँ।
३. बालक कीड़ों को नष्ट कर रहे हैं।
४. माता बच्चे को दूध पिलाती है।
५. मैं नौकर से काम करवाता हूँ।

६. मालिक नौकर को भेजता है।
७. पक्षी फल गिराते हैं।
८. पिता पुत्र को आम खिलाता है।
९. चित्रकार लोगों को चित्र दिखाता है।
१०. वह मुझ से पत्र लिखवाता है।

### शब्दावली

|                      |                       |
|----------------------|-----------------------|
| पाठयति = पढ़ाता है   | नाशयति = नष्ट करता है |
| गमयति = भेजता है     | पाययति = पिलाती है    |
| मोटरयान (नपुं०) = बस | चित्र (नपुं०) = चित्र |
| चालयति = चलाता है    | दर्शयति = दिखाता है   |
| खग (पुं०) = पक्षी    | कारयामि = करवाता हूँ। |
| पातयति = गिराता है   | लेखयति = लिखवाता है।  |
| कीट (पुं०) = कीड़ा   | खादयति = खिलाता है।   |

### अभ्यास १६

#### ( उपसर्ग-सहित धातु )

१. यहाँ कौन आ रहा है ?
२. वे धीरे-धीरे पर्वत पर चढ़ते हैं।
३. कृष्ण कंस पर प्रहार करता है।
४. बछड़ा गाय के पीछे जाता है।
५. वे दोनों गुरु का अनुसरण करते हैं।
६. सुदामा गुरु के लिए लकड़ियाँ लाता है।
७. मैं घर में प्रवेश करता हूँ।
८. कमल जल में पैदा होता है।
९. मैं प्रातःकाल मुख धोता हूँ।
१०. भगवान हर युग में पैदा होता है।

**शब्दावली**

काष्ठ (नपुं०) = लकड़ी

आहरति = लाता है

प्रहरति = प्रहार करता है

प्रभवति = पैदा होता है

वत्स (पुं०) = बछड़ा

अनु √ सृ (सर्) = पीछे चलना

सम √ भू (भव्) = पैदा होना

आरोहति = चढ़ता है

प्रविशति = प्रवेश करता है

युगे-युगे = हर युग में

आ √ हृ (हर्) = लाना

आ √ रुह् = चढ़ना

प्र √ हृ (हर्) = प्रहार करना

प्र √ भू (भव्) = पैदा होना

**अभ्यास १७****( क्त्वा प्रत्यय )**

१. वह प्रतिदिन पाठ पढ़ कर विद्यालय जाता है।
२. वहाँ जाकर तूने क्या देखा?
३. आज स्त्रियाँ चाँद को देखकर अन्न खाएँगी।
४. गुरु को पूछ कर बाहर जाओ।
५. वह हँस कर चुप हो गया।
६. कवि कविता लिखकर संतुष्ट होता है।
७. वह शराब पीकर अपशब्द बोलता है।
८. मुझे वहाँ ले जाकर शेर दिखाओ।
९. अन्धा अक्षरों को छूकर पुस्तक पढ़ता है।
१०. मैं फल खाकर खेल के मैदान में जाऊँगा।

**शब्दावली**

प्रतिदिनम् (क्रि.वि) = प्रतिदिन

गत्वा (गम्) = जाकर

पीत्वा (पा) = पीकर

दृष्ट्वा (दृश्) = देखकर

√ तुष् = संतुष्ट होना

नीत्वा (√ नी) = ले जाकर

पृष्ट्वा (प्रच्छ्) = पूछकर

स्पृष्ट्वा (स्पृश्) = छूकर

तूष्णम् (अ०) = चुप

क्रीडाक्षेत्र (नपुं०) = खेल का मैदान

## अभ्यास १८

## ( तुमुन् प्रत्यय )

१. मैं अब घर जाना चाहता हूँ।
२. हाथी पानी पीने के लिए तालाब पर गया।
३. हम यहाँ नेता को देखने के लिए खड़े हैं।
४. बिल्ली चूहे को खाने के लिए दौड़ी
५. तू संस्कृत पढ़ने के लिए मेरे घर कब आएगा ?
६. मैं कहानी लिखने के लिए समर्थ नहीं हूँ।
७. देवता को पूजने के लिए फूल और पानी दो।
८. मैं विद्या अर्जित करने के लिए परिश्रम करता हूँ।
९. मैं दान देना चाहता हूँ।
१०. इस काम को करने के लिए कौन समर्थ है ?

## शब्दावली

|                                   |                                       |
|-----------------------------------|---------------------------------------|
| पातुम् (√ पा) = पीने के लिए       | समर्थ (वि०) = समर्थ                   |
| द्रष्टुम् (√ दृश्) = देखने के लिए | अर्जितुम् (अर्ज) = अर्जित करने के लिए |
| मार्जारी (स्त्री०) = बिल्ली       | लिखितुम् (√ लिख्) = लिखने के लिए      |
| पूजयितुम् (√ पूज्) = पूजने के लिए | दातुम् (√ दा) = देने के लिए           |

## अभ्यास १९

## ( क्त प्रत्यय )

१. बेटा, लिखे हुए पत्र को पढ़ ।
२. कुएँ में गिरे हुए शेर को देखकर खरगोश हँसता है।
३. किसान मरे हुए साँप को गड्ढे में फेंकता है।
४. मैं अब देखे हुए स्थानों का वर्णन करता हूँ।
५. ये धुले हुए कपड़े किसके हैं ?
६. मैं पढ़े हुए श्लोक को याद करता हूँ।

७. बीता हुआ समय फिर नहीं आता।
८. पढ़ी हुई कहानी को दोबारा कहो।
९. रोगी पका हुआ फल खाता है।
१०. कहे हुए वचन को याद कर।

### शब्दावली

|                        |                          |
|------------------------|--------------------------|
| गतः काल = बीता हुआ समय | दृष्ट (वि०) = देखा हुआ   |
| पठित (वि०) = पढ़ा हुआ  | स्थान (नपुं०) = स्थान    |
| मृत (वि०) = मरा हुआ    | पक्व (वि०) = पका हुआ     |
| गर्त (पुं०) = गड्ढा    | क्षालित (वि०) = धुला हुआ |
| पुनः (अ०) = दोबारा     | उक्त (वि०) = कहा हुआ     |

### अभ्यास २०

#### (अनीय, तव्य प्रत्यय)

१. यह पुस्तक पढ़ने योग्य है।
२. यह फिल्म देखने योग्य है।
३. तुम्हें प्रतिदिन काम करना चाहिए।
४. पटियाला में अजायब घर देखने योग्य है।
५. करने योग्य काम को शीघ्र करो।
६. यह ग्रन्थ पढ़ने योग्य है।
७. हमें देश की रक्षा करनी चाहिए।
८. हम दोनों को कल वहाँ जाना चाहिए।
९. यह एक देखने योग्य स्थान है।
१०. यह श्लोक याद करने योग्य है।

### शब्दावली

|                             |                                  |
|-----------------------------|----------------------------------|
| पठितव्य (वि०) = पढ़ने योग्य | संग्रहालय (पुं०) = अजायब घर      |
| ग्रन्थ (पुं०) = ग्रन्थ      | शीघ्रम् (अ०) = शीघ्र             |
| श्वः (अ०) = कल (आने वाला)   | श्लोक (पुं०) = श्लोक             |
| कार्य (नपुं०) = काम         | स्मर्तव्य (वि०) = याद करने योग्य |

## अभ्यास २१

( द्वितीया विभक्ति-विशेष प्रयोग )

१. गाँव के चारों ओर वृक्ष हैं।
२. मेरे गाँव के दोनों ओर नदियाँ बहती हैं।
३. मार्ग के दोनों ओर वृक्ष हैं।
४. विद्या के बिना संसार में सुख नहीं।
५. पापी को धिक्कार है।
६. विद्यालय के दोनों ओर पानी है।
७. किले के सब ओर सैनिक खड़े हैं।
८. मेहनत बिना विद्या नहीं।
९. तेरे बिना मैं फिल्म नहीं देखूंगा।
१०. चोर को धिक्कार है।

## शब्दावली

उभयतः = दोनों ओर

सर्वतः = सब ओर

वह = बहना

धिक् (अ०) = धिक्कार है

परितः = चारों ओर

स्था (तिष्ठ) = खड़े होना, ठहरना

## अभ्यास २२

( तृतीया विभक्ति-विशेष प्रयोग )

१. तू मेरे साथ चल।
२. छात्र अध्यापक के साथ प्रार्थना बोलते हैं।
३. श्रीमान् के साथ और कौन आएगा?
४. सभापति के साथ कवि मंच पर चढ़ रहे हैं।
५. क्रोध मत करो।
६. सीता राम के साथ वन में गयी।
७. मैं किसके साथ बोलूँ?



८. दिलीप पत्नी के साथ गुरु के आश्रम में चला गया।  
 ९. हँसो मत।  
 १०. आलस्य मत करो।

### शब्दावली

|                               |                       |
|-------------------------------|-----------------------|
| सह, साकम्, सार्धम् (अ०) = साथ | √ वद् = बोलना         |
| अलम् (अ०) = मत, न             | √ क्रुध् = क्रोध करना |
| √ चल् = चलना                  | आलस्य (नपुं०) = आलस्य |

### अभ्यास २३

#### (चतुर्थी विभक्ति-विशेष प्रयोग)

१. देव को नमस्कार है।  
 २. गुरु को नमस्कार है।  
 ३. मुनि सूर्य को पानी देता है।  
 ४. हैडमास्टर होशियार लड़कों को इनाम देता है।  
 ५. मुझे पाँच रुपये दो।  
 ६. भगवान् शंकर को नमस्कार है।  
 ७. भारत माता को नमस्कार है।  
 ८. मंत्री गरीबों को वस्त्र देता है।  
 ९. मैं तुम्हें कुछ भी न दूँगा।  
 १०. गुरु शिष्य पर क्रोध करता है।

### शब्दावली

|                                |                          |
|--------------------------------|--------------------------|
| नमः (अ) = नमस्कार              | पारितोषिक (नपुं०) = इनाम |
| भगवत् (पुं०) = भगवान्          | रूप्यक (नपुं०) = रुपया   |
| वस्त्र (नपुं०) = वस्त्र, कपड़ा | √ दा (यच्च्) = देना      |
| पटु (वि०) = होशियार            | निर्धन (पुं०) = गरीब     |

## अभ्यास २४

( पंचमी विभक्ति- विशेष प्रयोग )

१. मेरा घर गाँव से बाहर है ।
२. कौए ने बिल से लेकर वृक्ष तक माँस के टुकड़े फेंक दिए।
३. बालक को बन्दर से डर लगता है।
४. देवदत्त श्याम से अधिक चतुर है
५. मैं भोजन के बाद दूध पीऊँगा
६. कमरे से बाहर निकल जाओ।
७. मोहन के बिना दूसरा कौन पाठ पढ़ेगा।
८. कृष्ण राम से पृथक् नहीं हैं ।
९. सरला कमला से अधिक मूर्ख है ।
१०. स्नान के बाद मैं घर आ गया।

## शब्दावली

|                          |                                  |
|--------------------------|----------------------------------|
| कक्ष (पुं०) = कमरा       | मूर्खतर (वि०) = अधिक मूर्ख       |
| खण्ड (नपुं०) = टुकड़ा    | अनन्तरम् (क्रि० वि०) = बाद में   |
| अन्य (वि०) = दूसरा       | स्नान (नपुं०) = स्नान            |
| भय (नपुं०) = डर          | निर् √ गम् (गच्छ्) = बाहर निकलना |
| चतुरतर (वि०) = अधिक चतुर | वानर (पुं०) = बंदर               |

## अभ्यास २५

( षष्ठी विभक्ति-विशेष प्रयोग )

१. वह पिता के सदृश है।
२. बेटी माता के तुल्य है।
३. मोहन के समान कोई छात्र नहीं।
४. अर्जुन के समान कोई वीर नहीं।
५. मेरे पास आओ।
६. उस लड़की का मुख चाँद के तुल्य है ।

७. मूर्ख पुरुष पशु के समान है।
८. प्रभा के समान कोई छात्रा नहीं।
९. कर्ण के समान कोई दानी नहीं।
१०. नदी के पास एक बड़ा वृक्ष है।

### शब्दावली

|                     |                                  |
|---------------------|----------------------------------|
| सदृश (वि०) = सदृश   | समीपे (क्रि० वि०) = पास, पास में |
| तुल्य (वि०) = तुल्य | महत् (वि०) = बड़ा                |
| समान (वि०) = समान   | चन्द्र (पुं०) = चाँद             |

### अभ्यास २६

#### ( सप्तमी विभक्ति- विशेष प्रयोग )

१. गुरु शिष्य पर स्नेह करता है।
२. मैं उस लड़की से प्रेम करता हूँ।
३. मैं संस्कृत बोलने में कुशल हूँ।
४. हिमालय पर्वतों में सबसे ऊँचा है।
५. सुनन्दा लड़कियों में सबसे अधिक चतुर है।
६. माता पुत्र पर स्नेह करती है।
७. वह वीणा-वादन में कुशल है।
८. वह भोजन पकाने में कुशल है।
९. महेश छात्रों में सबसे अधिक चतुर है।
१०. गंगा नदियों में सबसे अधिक पवित्र है।

### शब्दावली

|                                     |                                   |
|-------------------------------------|-----------------------------------|
| स्निह्यति (√ स्निह) = स्नेह करता है | उच्चतम (वि०) = सबसे अधिक ऊँचा     |
| अनुरक्त (वि०) = प्रेम-युक्त         | चतुरतम (वि०) = सबसे अधिक चतुर     |
| कुशल (वि०) = कुशल                   | सुन्दरतम (वि०) = सबसे अधिक सुंदर  |
| भाषण (नपुं०) = बोलना, भाषण          | पवित्रतम (वि०) = सबसे अधिक पवित्र |

## अभ्यास २७

## ( विविध )

१. हिमालय की पुत्री पार्वती, शंकर की पत्नी थी ।
२. आग के पास न जाओ ।
३. कौआ रोटी के टुकड़े खाता है
४. अब रोने से क्या लाभ ?
५. मेरे घर में एक कन्या और दो पुत्र हैं ।
६. भारत की रक्षा करना हमारा धर्म है ।
७. भोजन के बिना शरीर कमजोर हो जाता है ।
८. मैं लाल किला देखना चाहता हूँ ।
९. कमला, तू सुलेख लिख कर व्याकरण याद कर ।
१०. बोपदेव एक दिन जल पीने के लिए कुएँ पर गया ।

## शब्दावली

|                              |                          |
|------------------------------|--------------------------|
| अग्नि (पुं०) = आग            | सुलेख (पुं०) = सुलेख     |
| क्षीण (वि०) = कमजोर          | √ स्मृ (स्मर) = याद करना |
| काक (पुं०) = कौआ             | दो पुत्रौ = दो पुत्र     |
| रक्तदुर्ग (नपुं०) = लाल किला | एकदा (अ०) = एक दिन       |
| लाभ (पुं०) = लाभ             | कूप (पुं०) = कुआँ        |

## अभ्यास २८

## ( विविध )

१. तू कल किस कारण से विद्यालय नहीं आया ।
२. स्वर्ण मंदिर में दीपामाला देखने योग्य होती है ।
३. सप्ताह में सात दिन होते हैं ।
४. संसार में ऋग्वेद से अधिक प्राचीन अन्य ग्रंथ नहीं है ।
५. हमारी परीक्षा मार्च के महीने में होगी ।

६. मैं अपने भाई के साथ आज नाटक देखने जाऊँगा।
७. काली गाय को घास दो।
८. तारा ने बाग में जाकर मरे हुए रोहित को देखा।
९. इस घर से शीघ्र बाहर निकल जाओ।
१०. माली जल से बेलों को सींचता है।

### शब्दावली

|                        |                       |
|------------------------|-----------------------|
| कारणात् = कारण से      | गो (स्त्री०) = गाय    |
| सप्ताह (पुं०) = सप्ताह | घास (पुं०) = घास      |
| नाटक (नपुं) = नाटक     | मालाकार (पुं०) = माली |
| लता (स्त्री०) = बेल    | √ सिञ्च् = सींचना     |

### अभ्यास २९

#### ( विविध )

१. तू चण्डीगढ़ में कहाँ रहता है ?
२. मैं कभी किसी की चीज़ न चुराऊँ।
३. क्रोध न करो।
४. मुझे क्या पढ़ना चाहिए।
५. भारत में एक वर्ष में छः ऋतुएं होती हैं।
६. मैं तुम से एक प्रश्न पूछता हूँ।
७. आप मेरे पिता के समान हैं।
८. वृहस्पति ग्रहों में सबसे अधिक भारी है।
९. उसने सेवा से माता को प्रसन्न कर दिया।
१०. तू छात्रावास छोड़कर बाहर कहाँ रहेगा।

### शब्दावली

|                        |                          |
|------------------------|--------------------------|
| ऋतु (पुं०) = ऋतु, मौसम | ग्रह (पुं०) = ग्रह       |
| वस्तु (नपुं०) = चीज़   | गुरुतम (वि०) = सबसे भारी |
| प्रश्न (पुं०) = प्रश्न | चुर = चुराना             |

अभ्यास ३०  
(विविध)

१. उसके हाथ से फूल गिर गया।
२. किसान ने पुराने वृक्ष को गिरा दिया।
३. चतुर बालक सबको हँसा रहा है।
४. मैं मेहनत से पढ़कर पिता को चिन्ता मिटाऊँगा।
५. कौन सा कुली मेरा भार ले जाएगा।
६. तुम्हारे बीच में यह दूसरी लड़की कौन है?
७. हम में से एक भी चोर नहीं है।
८. अब मैं कहाँ जाऊँ? किससे पूछूँ?
९. परिश्रम से कार्य सिद्ध होते हैं।
१०. क्या तू अपने पिता जी को पत्र लिखना चाहता है?

शब्दावली

|                      |                          |
|----------------------|--------------------------|
| √ पत् = गिरना        | √ ह (हर्) = हरना, मिटाना |
| अपातयत् = गिरा दिया  | भारवाहक (पुं०) = कुली    |
| हासयति = हँसा रहा है | √ सिध् = सिद्ध होना      |





## शब्द-कोषः

|                                                    |                                                         |
|----------------------------------------------------|---------------------------------------------------------|
| अक्ष (पुं०) धुरी, पहिए या चक्र का केन्द्र बिन्दु   | अध्ययन (नपुं०) नपुं०, पढ़ना, पढ़ाई                      |
| अखिल (वि०) संपूर्ण, समस्त                          | अध्यापक (पुं०) पढ़ाने वाला, टीचर                        |
| अग्नि (पुं०) आग                                    | अनन्तरम् (क्रि० वि०) बाद में                            |
| अग्र (नपुं०) अगला भाग, चोटी                        | अनन्य (वि०) निराला, अनोखा, अपूर्व                       |
| अग्र-जन्मन् (पुं०) ब्राह्मण                        | अनल (पुं०) आग                                           |
| अग्रे (अ०) आगे                                     | अनागत (वि०) न आया हुआ                                   |
| अङ्क (पुं०) गोद                                    | अनिवार्य (वि०) लाजमी                                    |
| अङ्ग (नपुं०) शरीर, शरीर का भाग                     | अनुपम (वि०) अद्वितीय                                    |
| अङ्गी √ कृ (तना०) स्वीकार करना                     | अनुपस्थित (वि०) गैर हाज़िर                              |
| अङ्गुली (स्त्री०) उंगली                            | अनु (भू) > भव् (भ्वा०) महसूस करना                       |
| अजा (स्त्री०) बकरी                                 | अनुयायिन् (वि०) पीछे चलने वाला                          |
| अजीर्णता (स्त्री०) बदहज्मी                         | अनुराग (पुं०) प्रेम                                     |
| अण्डाकार (वि०) अण्डे की शक्ल वाला                  | अनुलेपन (नपुं०) लेप, मरहम                               |
| अतः (अ०) इसलिए                                     | अनु √ सू (भ्वा०) अनुसरण करना, पीछे चलना                 |
| अति √ क्रम (भ्वा०) पार करना                        | अनृत (नपुं०) असत्य, झूठ                                 |
| अतिथि (पुं०) मेहमान                                | अनेक (वि०) कई, बहुत, अनेक                               |
| अतिभार (पुं०) अधिक बोझ                             | अनेकदा (पुं०) अनेक बार                                  |
| अतीव (अ०) अत्यन्त                                  | अन्त (वि०) अन्त, समाप्ति                                |
| अत्र (अ०) यहाँ                                     | अन्तिम (वि०) आखिरी                                      |
| अद्य (अ०) आज                                       | अन्धकार (पुं०) अन्धेरा                                  |
| अद्यतन (वि०) आज का, वर्तमान                        | अन्न (नपुं०) अनाज, अन्न                                 |
| अद्यत्वे (अ०) आजकल                                 | अन्य (सर्व०) दूसरा                                      |
| अधः, अधस्तात् (अ०) नीचे                            | अन्यत्र (अ०) दूसरी जगह                                  |
| अधि √ गम् > गच्छ् (भ्वा०) प्राप्त करना, अधिगत करना | अन्येद्युः (अ०) दूसरे दिन                               |
| अधुना (अ०) अब                                      | अप् (स्त्री०) जल (इसके रूप केवल बहुवचन में ही होते हैं) |

अपद (वि०) पैरों से रहित  
 अपर (वि०) दूसरा  
 अपराध (पुं०) कसूर  
 अपवाद (पुं०) अनिन्दा  
 अपि (अ०) भी, क्या (वाक्य के आरम्भ में)  
 अपूर्व (वि०) अनोखा  
 अप्रिय (वि०) न प्यारा, कड़वा  
 अफल (वि०) निष्फल, निष्प्रयोजन  
 अभितः (क्रि० वि०) की ओर, सामने  
 अभिधान (नपुं०) नाम  
 अभिमुख (वि०) की ओर मुँह किए हुए  
 अभिराम (वि०) सुंदर  
 अभिलाष (वि०) इच्छा  
 अभिवादन (नपुं०) नमस्कार करना, प्रणाम करना  
 अभीष्ट (वि०) मनचाहा  
 अभ्यागत (वि०) अतिथि, आया हुआ  
 अमुख (वि०) मुँह से रहित  
 अमृत (नपुं०) मोक्षप्रद, अमृत  
 अम्बा (स्त्री०) माता  
 अम्भस् (नपुं०) पानी  
 अरघट्ट (पुं०) रहट  
 √ अर्च (भ्वा०) पूजा करना  
 √ अर्ज (भ्वा०) इकट्ठा करना, (धन) कमाना  
 अर्जन (नपुं०) कमाई, प्राप्त करना  
 अर्थ (पुं०) धन, पदार्थ, शब्दार्थ  
 अर्थवत् (वि०) धनयुक्त, धनी

अलंकृत (वि०) सजा हुआ  
 अलम् (वि०) बस, मत  
 अल्प (वि०) छोटा, थोड़ा  
 अल्पाहार (पुं०) नाश्ता  
 अवगम् (गच्छ् (भ्वा०) समझना, जानना  
 अवनत (वि०) झुका हुआ  
 अवलम्बिन् (वि०) लटका हुआ  
 अवशिष्ट (वि०) बच रहा, बचा हुआ  
 अविनय (पुं०) शरारत  
 अशेष (पुं०) सब  
 अश्व (पुं०) घोड़ा  
 अष्टन् (सं० वि०) आठ  
 अस् (अदा०) होना, विद्यमान  
 अस्मद् (सर्व०) हम, मैं  
 आकाश-वाणी (स्त्री०) रेडियो  
 आकुल (वि०) बिखरा हुआ, परेशान  
 आ √ गम् (गच्छ्) (भ्वा०) आना  
 आग्रह (पुं०) अनुरोध  
 आच्छन्न (वि०) ढका हुआ  
 आजीवनम् (क्रि० वि०) जीवन पर्यन्त  
 आतुर (पुं०) रोगी  
 आत्म-कथा (स्त्री०) आप बीती, अपनी कहानी  
 आत्मगतम् (क्रि० वि०) अपने आप से, मन में  
 आत्मन् (पुं०) आत्मा, अपना-आप  
 आदि (पुं०) आरम्भ, शुरू  
 आदिष्ट (वि०) बताया हुआ, आज्ञा किया हुआ  
 आद्य (वि०) प्रथम, आदि

आ √ धा (जुहो०) धारण करना  
 आनंद आनन्द, खुशी  
 आ √ नी (भ्वा०) लाना  
 आप् (स्वा०) प्राप्त करना, पाना  
 आपण (नपुं०) दुकान  
 आपणिक (पुं०) दुकानदार  
 आयात (वि०) आया हुआ  
 आ √ रभ् (भ्वा०) आरम्भ करना  
 आ √ रुह् (भ्वा०) चढ़ना  
 आर्ति (स्त्री०) पीड़ा  
 आ √ लप् (भ्वा०) बोलना, बातचीत  
 करना  
 आलय (पुं०) स्थान, घर  
 आवपन (नपुं०) क्षेत्र, खेत, स्थान  
 आवृत्त (वि०) दोहराया हुआ  
 आशा (स्त्री०) उम्मीद  
 आश्चर्य (नपुं०) विस्मय, अचम्भा  
 आसक्त (वि०) जुटा हुआ, सटा हुआ  
 आसन (नपुं०) आसन  
 आस्तीर्ण (वि०) बिछा हुआ  
 आस्था (स्त्री०) विश्वास  
 आहत (वि०) टकराया हुआ  
 आहार (पुं०) भोजन  
 आह्लाद (पुं०) खुशी  
 आ √ ह्वे > ह्वय (भ्वा०) बुलाना  
 इतः (अ०) इधर, इस ओर  
 इतर (सर्व०) दूसरा  
 इतस्ततः (अ०) इधर, उधर  
 इत्थम् (अ०) इस प्रकार  
 इदम् (सर्व०) यह

इष् > इच्छ (तुदा०) चाहना  
 इह (अ०) यहां  
 ईश (पुं०) ईश्वर, मालिक  
 उज्ज्वल (वि०) चमकीली, स्वच्छ, शुभ्र  
 उत्तर (नपुं०) जवाब  
 उत्तरा (स्त्री०) उत्तर दिशा  
 उत्तीर्ण (वि०) पार हुआ, पास हुआ  
 उत्सुकता (स्त्री०) उत्कण्ठा  
 उदक (नपुं०) पानी, जल  
 उद् √ अय् (भ्वा०) उदय होना  
 उदर (नपुं०) पेट  
 उद् √ तृ (भ्वा०) उत्तीर्ण करना, पास  
 करना  
 उददण्डता (स्त्री०) शरारत  
 उद्यान (नपुं०) बाग़  
 उद्यान-पालक (पुं०) माली  
 उद् √ स्था तिष्ठ (भ्वा०) उठना  
 उन्नति (स्त्री०) तरक्की, उन्नति  
 उपचार (पुं०) चिकित्सा, इलाज  
 उपत्यका (स्त्री०) वादी, घाटी  
 उप √ दिश् (तुदा०) बताना, पढ़ाना,  
 उपदेश देना  
 उपरत (वि०) समाप्त, मर चुका  
 उप √ रम् (भ्वा०) मरना  
 उपवन (नपुं०) बगीचा, बाग़  
 उप √ विश् (तुदा०) बैठना, पास बैठना  
 उप √ स्था > तिष्ठ (भ्वा०) उपस्थित  
 होना, हाजिर होना  
 उपस्थित (वि०) हाजिर  
 उपहार (पुं०) भेंट, तोहफा

उपाधि (पुं०) पदवी  
 उभ (सर्व०) दोनों  
 उष्ट्र (पुं०) ऊँट  
 ऊर्जा (स्त्री०) शक्ति  
 ऋतु (पुं०) मौसम  
 ऋषि (पुं०) मुनि  
 एक (सं० वि०) एक  
 एकदा (क्रि० वि०) एक समय, एक  
 दिन  
 एकाकिन् (वि०) अकेला  
 एकैक (वि०) एक-एक  
 एव (अ०) ही  
 एवम् (अ०) इस प्रकार  
 ऐक्य (नपुं०) एकता  
 ओदन (नपुं०) भात, चावल  
 ओष्ठ (पुं०) होंठ  
 ओष्ठ-गत (वि०) होंठ या जुबान पर  
 याद  
 औषध (नपुं०) दवाई  
 कक्ष (पुं०) कमरा  
 कक्षा (स्त्री०) घेरा, श्रेणी  
 कठिन (वि०) मुश्किल  
 कण्टक (पुं०) काँटा  
 कण्ठ (पुं०) गला  
 कण्ठाग्र (वि०) जुबान की नोक पर  
 कथ् (चुरा०) कहना  
 कथम् (अ०) कैसे, क्यों  
 कथा (स्त्री०) कहानी, कथा  
 कदा(अ०) कब  
 कदाचित् (अ०) कभी भी

कदापि (अ०) कभी  
 कन्दुक (नपुं०) गेंद  
 कन्या (स्त्री०) लड़की, पुत्री  
 करिन् (पुं०) हाथी  
 कर्ण (पुं०) कान  
 कर्मन् (नपुं०) काम, कर्म  
 कलह (पुं०) झगड़ा  
 कवि (पुं०) कविता रचने वाला  
 कविता (स्त्री०) काव्य  
 काक(पुं०) कौआ  
 कान्ता (स्त्री०) प्रिया, पत्नी  
 कान्ति (स्त्री०) शोभा, चमक  
 काम (पुं०) इच्छा  
 काय (पुं०) शरीर  
 कारण (नपुं०) सबब, कारण  
 काल (पुं०) समय  
 काष्ठ (नपुं०) लकड़ी  
 कितव (पुं०) जुआरी  
 किम् (सर्व०) कौन  
 कुक्षि (पुं०) कोख, पेट  
 कुटीर (नपुं०) कुटिया  
 कुतः (अ०) कहाँ पर  
 कुतुहल (नपुं०) उत्सुकता  
 √ कुप् (दिवा०) कुपित होना  
 कुपित (वि०) नाराज़  
 कुप्य मुद्रा (स्त्री०) खोटा सिक्का,  
 नकली सिक्का  
 कुमार (पुं०) लड़का  
 कुम्भ (पुं०) घड़ा  
 कुम्भकार (पुं०) कुम्हार



कुल (नपुं०) वंश, परिवार, समूह  
 कुल्या (स्त्री०) नहर  
 कुशल (नपुं०) कल्याण, (वि०) निपुण  
 कुसुम (नपुं०) फूल, पुष्प  
 कूज् (भ्वा०) कूजना, चहचहाना  
 कूट (नपुं०) षड्यंत्र, चाल  
 कूप (पुं०) कुआँ  
 √ कृ (तना०) करना, बनाना  
 कृपण (वि०) कंजूस  
 कृषक (पुं०) किसान  
 कृष्णः (पुं०) काला  
 केवलतम (क्रि० वि०) केवल, सिर्फ  
 कोटर (नपुं०) वृक्ष का खोल  
 कोष, कोश (पुं०) खज़ाना, शब्द-कोश  
 कोषाध्यक्ष (पुं०) खज़ानची  
 कौन्तेय (पुं०) कुन्ती का पुत्र अर्जुन  
 कौमार (नपुं०) कुमारावस्था  
 क्रमशः (क्रि० वि०) क्रम से, धीरे-  
 धीरे  
 क्री (क्रया०) खरीदना  
 क्रीड् (भ्वा०) खेलना  
 क्रीडा (स्त्री०) खेल  
 क्रीडा-क्षेत्र (नपुं०) खेल का मैदान  
 क्रुध् (दिवा०) क्रुद्ध होना  
 क्रोध (पुं०) गुस्सा  
 √ क्षल् > क्षाल् (चुरा०) धोना  
 क्षिप् (तुदा०) फेंकना  
 क्षीण (वि०) कमज़ोर  
 क्षेत्र (नपुं०) खेल, मैदान  
 खग (पुं०) पक्षी

खण्ड (नपुं०) टुकड़ा  
 खल (पुं०) दुष्ट  
 खाद् (भ्वा०) खाना  
 खेला (स्त्री०) खेल, क्रीड़ा  
 गगन (नपुं०) आकाश  
 गज (पुं०) हाथी  
 गण् (चुरा०) गिनना  
 गति (स्त्री०) पहुँच, चाल  
 गम् (गच्छ्) (भ्वा०) जाना  
 गरीयस् (वि०) अधिक महान्  
 गर्ज् (भ्वा०) गरजना  
 गर्त (पुं०) गड्ढा  
 गर्दभ (पुं०) गधा  
 गलित (वि०) गला हुआ, ढीला पड़ा  
 हुआ  
 गिर् (स्त्री०) वाणी  
 गीत (नपुं०) गीतिका, (स्त्री०) गीत  
 गोवार्ण -भारती (स्त्री०) देव-भाषा  
 संस्कृत (भाषा)  
 गुरु (पुं०) अध्यापक (वि०), भारी  
 गृह (नपुं०) घर  
 √ गै > गाथ् (भ्वा०) गाना  
 गोधा (स्त्री०) गोह  
 गौरव (नपुं०) महत्त्व, महिमा  
 ग्रन्थ (पुं०) ग्रन्थ, पुस्तक, पोथी  
 ग्रह् (क्रया०) पकड़ना, ग्रहण करना,  
 लेना  
 ग्राम (पुं०) गाँव, ग्राम  
 ग्रास (पुं०) कौर, रोटी का टुकड़ा  
 ग्रीष्म (पुं०) गर्मी का मौसम

ग्लानि (स्त्री०) हानि  
 घट (पुं०) घड़ा  
 घटित (वि०) घड़ी हुई, बनी हुई  
 घास (पुं०) घास  
 घृत (नपुं०) घी  
 च (अ०) और  
 चकित (वि०) विस्मित, आश्चर्य-  
 चकित  
 चतुर् (सं० वि०) चार  
 चन्द्र, चन्द्रमस् (पुं०) चन्द्रमा, चन्द्र  
 चपल (वि०) चञ्चल, शरारती  
 चमत्कार (पुं०) आश्चर्य-जनक कार्य,  
 चमत्कार  
 चर् (भ्वा०) चलना-फिरना, चरना,  
 खाना, पालन करना  
 चर्मपुट (पुं०) चमड़े की थैली, बैग  
 चर्व् (भ्वा०) चबाना  
 चल (भ्वा०) चलना  
 चल (वि०) चलने वाला  
 चलचित्र (नपुं०) सिनेमा  
 चलचित्र-शाला (स्त्री०) सिनेमा घर  
 चापल (नपुं०) शरारत, चंचलता  
 चिकित्सक (पुं०) डाक्टर, वैद्य  
 चिकित्सालय (नपुं०) अस्पताल  
 चित्त (नपुं०) चित्त, मन  
 चिन्त (चुरा०) सोचना  
 चिन्ता (स्त्री०) फिक्र, चिन्ता  
 चिरम्, चिराय (क्रि० वि०)  
 देर तक, चिरकाल तक  
 चीत्कार-ध्वनि (पुं०) चीखने की आवाज

चुर (चुरा०) चुराना  
 चौर (पुं०) चोर  
 छात्र (पुं०) विद्यार्थी, छात्र  
 छात्रा (स्त्री०) छात्रा  
 छात्रावास (पुं०) होस्टल  
 जगत् (नपुं०) संसार, जग  
 जन् (दिवा०) उत्पन्न होना  
 जन (पुं०) लोग, मनुष्य  
 जनक (पुं०) पिता  
 जननी (स्त्री०) माता, जननी  
 जनवाद (पुं०) लोक-निन्दा  
 जन्मन् (पुं०) जन्म  
 जय (पुं०) जीत, विजय  
 जरा (स्त्री०) बुढ़ापा  
 जल (नपुं०) पानी, जल  
 जात (वि०) उत्पन्न, उत्पन्न हुआ  
 जातु (अ०) कभी, कदाचित्  
 जि > जय् (स्वा०) जीतना  
 जीर्ण (वि०) पुराना, जीर्ण  
 √ जीव् (भ्वा०) जीना  
 जीवन (नपुं०) जीना, जिन्दगी  
 √ ज्ञा (क्रया०) जानना  
 ज्ञात (वि०) जाना हुआ, विदित  
 ज्ञान (नपुं०) ज्ञान  
 ज्योत्स्ना (स्त्री०) चौदनी  
 टङ्क-शाला (स्त्री०) टकसाल  
 तण्डुल (नपुं०) चावल  
 ततः (अ०) तब, उसके बाद, वहाँ से  
 तत्त्व (नपुं०) सच्चाई, वास्तविकता,  
 असलियत



तत्र (अ०) वहाँ  
 तत्रभवति (स्त्री०) पूज्या  
 तथा (अ०) उस प्रकार, वैसे  
 तद् (सर्व०) वह  
 तदा (अ०) तब  
 तनय (पुं०) पुत्र  
 तप् (भ्वा०) तपना, गर्म करना  
 तमस् (नपुं०) अन्धकार  
 तरुण (पुं०) युवक  
 तात (पुं०) पिता  
 ताप (पुं०) गर्मी  
 ताम्बूलिक (पुं०) तंबोली, पान बेचने  
 वाला  
 तावत् (क्रि० वि०) तो, तब तक  
 तिमिर (पुं०) अंधकार  
 तीक्ष्ण (वि०) तीखा, तेज़  
 तीव्र (वि०) तेज़, तीक्ष्ण  
 तुङ्ग (वि०) ऊँचा  
 तुण्ड (नपुं०) मुँह  
 तुला (स्त्री०) तराजू  
 तुल्य (वि०) सदृश, समान  
 तुष् (दिवा०) संतुष्ट होना  
 तृष्णीम् (अ०) चुप, शांत  
 तृण (नपुं०) तिनका तिनकों से बना  
 आसन  
 तृ (भ्वा०) तैरना, तरना  
 तोरण -माला (स्त्री०) द्वार की माला,  
 बन्दरगाह  
 त्यज् (भ्वा०) छोड़ना  
 त्रस् (दिवा०) डरना

त्रि (सं० वि०) तीन  
 त्वच् (स्त्री०) वृक्ष की छाल, शरीर की  
 चमड़ी  
 त्वर् (स्वा०) जल्दी करना  
 त्वरितम् (क्रि० वि०) जल्दी से  
 दक्ष (वि०) चतुर, निपुण  
 दक्षिण (वि०) दाहिना, दायाँ  
 दक्षिणा (स्त्री०) दक्षिण (दिशा)  
 दण्ड (पुं०) डंडा, दण्ड  
 दन्त (पुं०) दाँत  
 दशन् (सं० वि०) दस  
 √ दह् (भ्वा०) जलाना  
 √ दा (जुहो०) देना  
 √ दा > यच्छ् (भ्वा०) देना  
 दायद (पुं०) शरीक  
 दारक (पुं०) पुत्र  
 दिन (नपुं०) दिन  
 √ दिव् (दिवा०) चमकना  
 दिवस (पुं०) दिन  
 दिवा (अ०, क्रि० वि०) दिन के समय  
 दिव्य (वि०) अलौकिक  
 दिश् (तुदा०) बताना, कहना  
 दिश् (स्त्री०) दिशा, तरफ  
 दिष्ट्या (क्रि० वि०) सौभाग्य से  
 दीर्घ (वि०) लंबा  
 दीर्घता (स्त्री०) लम्बाई  
 दुःख (नपुं०) दुख, कष्ट  
 दुग्ध (नपुं०) दूध  
 दुन्दुभि (पुं०) नगाड़ा  
 दुष्कृत (वि०) बुरा काम करने वाला

दुहितृ (स्त्री०) बेटी, पुत्री  
 दूर (वि०) दूर  
 दूरदर्शन (पुं०) टेलीविज़न  
 दूरभाष (पुं०) टेलीफ़ोन  
 दूरम् (क्रि०वि०) दूर, दूरी पर  
 दृढ (वि०) पक्का, मज़बूत  
 √ दृश् > पश्य (भ्वा०) देखना  
 दृश्य (वि०) देखने योग्य  
 दृश्यावली (स्त्री०) झांकी  
 दृष्टा (वि०) देखा गया  
 दृष्टि (स्त्री०) नज़र, आँख  
 देव (पुं०) देवता  
 देवालय (पुं०) मंदिर, देव-मंदिर  
 देह (पुं०) शरीर  
 देहान्तर (नपुं०) दूसरा शरीर  
 देहिन् (पुं०) देह धारण करने वाला,  
 आत्मा  
 √ द्रु (भ्वा०) पिघलना  
 द्रुम (पुं०) वृक्ष  
 द्वार (नपुं०) दरवाज़ा  
 द्वारपक्ष (पुं०) किवाड़  
 द्वि० (सं० वि०) दो  
 द्विचक्रिका (स्त्री०) साइकिल  
 द्वितीय (वि०) दूसरा  
 द्विधा (क्रि० वि०) दो भागों में  
 धन (नपुं०) धन, धन-सम्पत्ति  
 धनिन् (वि०) धनी, धनिक  
 धर्म (पुं०) धर्म  
 धा (जुहो०) रखना, धारण करना  
 धराधर (पुं०) बादल

धाव् (भ्वा०) दौड़ना  
 धावन (नपुं०) दौड़ना, दौड़  
 धिक् (अ०) धिक्कार है  
 धृति (स्त्री०) धैर्य, हौंसला  
 धेनु (स्त्री०) गाय, गौ  
 ध्यान (नपुं०) ग़्याल, चिंतन  
 ध्वनि (पुं०) आवाज़, शब्द  
 न (अ०) नहीं  
 नकुल (पुं०) नेवला  
 नक्तम् (क्रि० वि०) रात के समय  
 नगर (नपुं०) शहर, नगर  
 नदी (स्त्री०) दरिया, नदी  
 नम् (भ्वा०) झुकना, प्रणाम करना  
 नमस् (अ०) नमस्कार हो  
 नयन (नपुं०) आँख, नेत्र  
 नर (पुं०) मनुष्य  
 नल-कूप (पुं०) ट्यूब-बैल  
 नव (वि०) नया, नवीन  
 नवन् (सं०वि०) नौ  
 नवी √ भू > भव् (भ्वा०) ताज़ा होना  
 नश् (दिवा०) नष्ट होना  
 नाटक (नपुं०) नाटक  
 नाभि (पुं०) नेफ, केन्द्र बिन्दु  
 नामधेय (नपुं०) नाम  
 नामन् (नपुं०) नाम  
 नारी (स्त्री०) स्त्री, स्त्री जाति  
 नासिका (स्त्री०) नाक  
 निःसंज्ञ - बेहोश  
 निकर (पुं०) समूह  
 नि √ क्षिप् (तुदा०) रखना, डालना

निदेश (पुं०) आज्ञा, आदेश  
 निद्रा (स्त्री०) नींद  
 निधि (पुं०) खजाना, कोष  
 निन्दा (स्त्री०) बुराई, निन्दा  
 निपुण (वि०) कुशल, कुशलतापूर्वक,  
 ध्यानपूर्वक

निरङ्गुलि (वि०) उँगली से रहित  
 निरनुक्रोश (वि०) निर्दय  
 निरन्तरम् (क्रि० वि०) लगातार, निरन्तर  
 निरू आ √ कृ (तना०) टुकराना  
 निरामय (वि०) नीरोग  
 निरीक्षण (नपुं०) मुआयना, जांच  
 निर्गत (वि०) बाहर गया हुआ  
 निरू √ गम् गच्छ (भ्वा०) बाहर जाना,  
 निकलना

निर्झर (पुं०) झरना  
 निर्वाचन (नपुं०) चुनाव  
 नि √ वस् (भ्वा०) रहना, निवास करना  
 नि √ वृत् (भ्वा०) लौटना  
 निशा (स्त्री०) रात्री, रात  
 निश्चल (वि०) न चलने वाला, स्थिर  
 निष्क्रियता (स्त्री०) निकम्मापन,  
 निश्चेष्टता

निष्ठुर (वि०) कठोर, निर्दय  
 निष्ठुरता (स्त्री०) कठोरता  
 निष्णात (वि०) पारंगत, माहिर  
 √ नी > नय् (भ्वा०) ले जाना  
 नूनम् (अ०) अवश्य ही, निश्चित रूप से  
 नृत् (दिवा०) नाचना  
 नृप (पुं०) राजा

नृपासन (नपुं०) राजसिंहासन  
 नेत्र (नपुं०) आँख, नयन  
 नेमि (स्त्री०) पहिए का घेरा या छल्ला  
 नौ, नौका (स्त्री०) नाव  
 पक्व (वि०) पका हुआ  
 पच् (भ्वा०) पकाना  
 पञ्चन् (सं० वि०) पाँच  
 पञ्जर (नपुं०) पिंजरा  
 पटु (वि०) चतुर  
 √ पट् (भ्वा०) पढ़ना  
 पण्य (नपुं०) सौदा, बिकाऊ वस्तु  
 पत् (भ्वा०) पड़ना, गिरना  
 पत्र (नपुं०) पत्ता, चिट्ठी  
 पथिक (पुं०) राही  
 पथिन् (पुं०) राह, रास्ता  
 पथ्य (वि०) उचित, अनुकूल, हितकर  
 पदक (नपुं०) तमगा  
 पद पंक्ति (स्त्री०) पैरों के चिन्हों की कतार  
 पर (वि०) दूसरा, पराया  
 परम्परा (स्त्री०) रवायत, प्रथा, परम्परा  
 परशु (पुं०) कुल्हाड़ा  
 परस्परम् (क्रि० वि०) आपस में, एक  
 दूसरे की  
 परिग्रह (पुं०) लेना, स्वीकार करना  
 परिणाम (पुं०) नतीजा  
 परितः (क्रि० वि०) चारों ओर  
 परि √ नी (भ्वा०) विवाह करना  
 परिपीडन (नपुं०) सताना  
 परि √ भ्रम (भ्वा०) चारों ओर घूमना,  
 चक्कर लगाना

परि √ वृत् (भ्वा०) बदलना  
 परिव्राजक (पुं०) संन्यासी  
 परिश्रम (पुं०) मेहनत  
 परीक्षा (स्त्री०) इम्तिहान  
 परीक्षित (वि०) परखा हुआ  
 परोपकार (पुं०) दूसरे की भलाई  
 पर्ण (नपुं०) पत्ता  
 पर्यटक (पुं०) सैलानी  
 पर्याय (पुं०) बारी, उचित क्रम  
 पलित (वि०) सफेद (बाल)  
 पवन (पुं०) हवा  
 पश्चिम (वि०) पिछला  
 पश्चिमा (स्त्री०) पश्चिम दिशा  
 पा √ पिब् (भ्वा०) पीना  
 पाठशाला (स्त्री०) स्कूल  
 पाठित (वि०) पढ़ाया हुआ  
 पाणि (पुं०) हाथ  
 पात्र (नपुं०) बर्तन, योग्य  
 पाद (पुं०) पैर  
 पाद कन्दुक (नपुं०) फुटबाल  
 पादप (पुं०) वृक्ष  
 पारंगत (वि०) विद्वान्, निष्णात  
 पारितोषिक (नपुं०) इनाम  
 पावक (पुं०) आग  
 पिण्ड (पुं०) गोल वस्तु, शरीर  
 पितृ (पुं०) पिता  
 पितृव्यः (पुं०) चाचा  
 पीडा (स्त्री०) दर्द  
 पुत्र (पुं०) बेटा  
 पुरा (अ०) पहले, प्राचीन काल में

पुलकित (वि०) रोमांचित  
 पुस्तक (नपुं०) पुस्तक, ग्रन्थ, पोथी  
 √ पूज् (चुरा०) पूजा करना, आदर करना  
 पूजा (स्त्री०) पूजा, आदर, सत्कार  
 पुज्य (वि०) पूजा योग्य  
 पूत (वि०) पवित्र किया गया, छाना गया  
 पूर्व (वि०) पहला, पहले का  
 पूर्वम् (क्रि० वि०) पहले  
 पूर्वा (स्त्री०) पूर्व दिशा  
 पृथिवी (स्त्री०) जमीन  
 पृष्ठ (नपुं०) पीठ, पिछला हिस्सा  
 पोत (पुं०) समुद्री जहाज  
 प्र √ आप् (स्वा०) प्राप्त करना, हासिल  
 करना, पाना  
 प्रकाश (पुं०) रोशनी  
 प्रकृति (स्त्री०) कुदरत, स्वभाव  
 प्र √ क्षल् > क्षाल् (चुरा०) धोना  
 प्र √ क्षिप् (तुदा०) फैकना  
 प्रचार (पुं०) प्रसार  
 प्रच्छ् > पृच्छ् (तुदा०) पूछना  
 प्रच्छद (पुं०) बिछौना, चादर  
 प्रच्छन्न (वि०) छुपा हुआ, ढका हुआ  
 प्रति (अ०) की ओर  
 प्रति + आ √ गम् < गच्छ् (भ्वा०) वापिस  
 आना, लौटना  
 प्रमाद (पुं०) लापरवाही  
 प्रयत्न (पुं०) यत्न, कोशिश  
 प्रलम्बित (वि०) लटका हुआ  
 प्र √ विश् (तुदा०) दाखिल होना  
 प्रवीण (वि०) कुशल, निपुण



|                                           |                                                 |
|-------------------------------------------|-------------------------------------------------|
| प्रवीणता (स्त्री०) कुशलता, निपुणता        | प्रसन्न (वि०) खुश                               |
| प्रतिदिनम् (क्रि० वि०) रोजाना, प्रतिदिन   | प्रसन्नता (स्त्री०) खुशी                        |
| प्रतिध्वनि (पुं०) टकराकर लौटी आवाज़,      | प्रसाद (पुं०) प्रसन्नता                         |
| प्रतिशब्द                                 | प्रसिद्ध (वि०) विख्यात, मशहूर                   |
| प्रति √ पाल् (चुरा०) प्रतीक्षा करना       | प्र √ स्था < तिष् (भ्वा०) चलना, रवाना होना      |
| प्रतिबुद्ध (वि०) जागा हुआ                 | प्र √ ह् (भ्वा०) प्रहार करना                    |
| प्रति √ भा (अदा०) मालूम होना, भासना       | प्रहेलिका (स्त्री०) पहेली                       |
| प्रतिभा (स्त्री०) विशेष योग्यता, बुद्धि   | प्रांगण (नपुं०) आँगन                            |
| प्रतियोगिता (स्त्री०) मुकाबला             | प्राण (पुं०) जान, प्राण                         |
| प्रतिवचन (नपुं०) उत्तर                    | प्राण-संशय (पुं०) खतरा                          |
| प्रति √ वद् (भ्वा०) उत्तर देना            | प्रातः (अ०) सवेरे                               |
| प्रति √ वस् (भ्वा०) रहना                  | प्राध्यापक (पुं०) प्रोफ़ेसर                     |
| प्रत्युत (अ०) बल्कि                       | प्रार्थना (स्त्री०) विनय, विनती                 |
| प्रथम (वि०) पहला                          | प्रावारक (पुं०) ओढ़ना, शाल                      |
| प्र √ दा > यच्छ (भ्वा०) देना, प्रदान करना | फल (नपुं०) फल                                   |
| प्र √ नम् (भ्वा०) प्रणाम करना             | फूत् √ कृ (तना०) चिल्लाना, फूँक मारना, फुफकारना |
| प्र √ नश् (दिवा०) अच्छी तरह नष्ट होना     | बोध (पुं०) ज्ञान, समझ                           |
| प्रभा० (स्त्री०) चमक                      | बन्धन (नपुं०) बौधना                             |
| प्रभात (नपुं०) प्रातःकाल                  | बन्धु (पुं०) सम्बन्धी                           |
| पुत्री (स्त्री०) बेटी                     | बल (नपुं०) बल, ताकत                             |
| पुनर्, पुनः (अ०) फिर                      | बहिःस्थ (वि०) बाहर स्थित                        |
| पुर (नपुं०) नगर                           | बहिरु, बहिः (अ०) बाहर                           |
| पुरस्कार (पुं०) इनाम, पारितोषिक           | बहु (वि०) बहुत                                  |
| प्रभूत (वि०) अनेक                         | बाढम् (अ०) हाँ, अवश्य                           |
| प्रासाद (पुं०) महल                        | बाल, बालक (पुं०) लड़का                          |
| प्रिय (वि०) प्यारा, प्रिय                 | बाला, बालिका (स्त्री०) लड़की                    |
| प्रियवादिन् (पुं०) मीठा बोलने वाला        | बाल्य (नपुं०) बचपन                              |
| प्रीति (स्त्री०) प्रेम, प्रसन्नता         | बाहु (पुं०) बाँह, भुजा                          |
| प्रशीतक (नपुं०) कूलर                      |                                                 |
| प्रश्न (पुं०) सवाल                        |                                                 |

बिन्दु (पुं०) बूंद  
 बिल (नपुं०) बिल, खोल  
 बुद्धि (स्त्री०) समझ, ज्ञान, मति  
 बुद्धिमत (वि०) बुद्धिमान, समझदार  
 √ बुद्ध (दिवा०) जानना, समझना  
 बुभुक्षित् (वि०) भूखा  
 भक्ति (स्त्री०) भजन-पूजन, भक्ति  
 भक्ष् (चुरा०) खाना  
 भज् (भ्वा०) भजना, भजन करना,  
 सेवा करना  
 √ भञ्ज् (रुधा०) तोड़ना, भग्न करना  
 भण् (भ्वा०) बोलना, कहना  
 भय (नपुं०) डर, भय  
 भयंकर (वि०) डरावना, भयानक  
 भाग (पुं०) हिस्सा, खण्ड  
 भैषज्य (नपुं०) इलाज, चिकित्सा, औषध  
 भोजन (नपुं०) खाना, भोजन  
 √ भ्रम् (स्वा०, दिवा०) घूमना  
 भ्रमर (पुं०) भौंरा  
 भ्रष्ट (वि०) गिरा हुआ, अलग हुआ  
 भ्रातृ (पुं०) भाई  
 भाजन (नपुं०) बर्तन, पात्र, योग्य  
 भानु (पुं०) सूर्य  
 भार (पुं०) बोझ  
 भारती (स्त्री०) भाषा, सरस्वती  
 भाव (पुं०) अभिप्राय, भाव होना  
 भावुक (वि०) भावना-पूर्ण  
 भिषज् (पुं०) वैद्य, चिकित्सक, डॉक्टर  
 भीरु (पुं०) डरपोक  
 √ भू > भव् (भ्वा०) होना

भुवन् (नपुं०) संसार  
 भूति (स्त्री०) ऐश्वर्य, कल्याण  
 भृशम् (क्रि० वि०) बहुत, खूब, अधिक  
 मात्रा में  
 मनस् (नपुं०) मन  
 मनाक् (अ०) थोड़ा सा  
 मनोयोग (पुं०) मन की एकाग्रता  
 मनोरथ (पुं०) मन की इच्छा  
 मन्द (वि०) धीमा  
 मन्दं मन्दम् (क्रि० वि०) धीमे-धीमे,  
 धीरे-धीरे  
 मराल (पुं०) हंस (पक्षी)  
 मलयज (नपुं०) चन्दन  
 महत् (वि०) बड़ा  
 महाविद्यालय (पुं०) कालेज  
 महिला (स्त्री०) नारी, स्त्री  
 मक्षिका (स्त्री०) मक्खी  
 मग्न (वि०) डूबा हुआ  
 मंच (पुं०) स्टेज  
 मंजन (पुं०) दाँत साफ करने का चूर्ण  
 मंजूषा (स्त्री०) संदूकची, छोटी पेटी  
 मातामह (पुं०) नाना  
 माधुर्य (नपुं०) मिठास  
 माध्यमिक (वि०) मिडल  
 मान (पुं०) अभिमान  
 मारुत (पुं०) वायु  
 मण्डूक (पुं०) मेंढक  
 मति (स्त्री०) बुद्धि, समझ  
 मद (पुं०) घमण्ड  
 मदिरा (स्त्री०) शराब, मद्य



|                                                                                              |                                                  |
|----------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------|
| मधु (नपुं०) शहद                                                                              | मास (पुं०) महीना                                 |
| मधुकर (पुं०) भौरा                                                                            | मित्र (नपुं०) सखा, साथी, दोस्त                   |
| मधुर (वि०) मीठा, जिह्वा को प्रिय लगने वाला, (इसी समानता से) आँख, कान, नाक को प्रिय लगने वाला | मिथ्यावादिन्, (वि०) झूठ बोलने वाला               |
| मध्यम (वि०) मँझला, बीच का                                                                    | √ मिल् (तुदा०) मिलना                             |
| मध्याह्न (पुं०) दोपहर                                                                        | मिथ्यान्कार (पुं०) हलवाई                         |
| √ मन् (दिवा०) मानना, समझना                                                                   | मेघ (पुं०) बादल                                  |
| मिहिर (पुं०) सूर्य                                                                           | मेधाविन् (वि०) तीक्ष्ण बुद्धि वाला               |
| मीन (पुं०) मछली                                                                              | मोद (पुं०) प्रसन्नता, खुशी                       |
| मुख (नपुं०) मुँह, वदन                                                                        | मोदक (नपुं०) लड्डू                               |
| मुख्य (नपुं०) प्रमुख, मुख्य                                                                  | मोह (पुं०) अज्ञान, मूढ़ता                        |
| मुख्याध्यापक (पुं०) हैडमास्टर                                                                | यत् (भ्वा०) यत्न करना                            |
| √ मुच् > मुञ्च् (तुदा०) छोड़ना,                                                              | यत्न (पुं०) प्रयत्न, कोशिश                       |
| मुण्ड (नपुं०) सिर                                                                            | यथा (क्रि०वि०) जैसे                              |
| मुद्रा-पत्र (नपुं०) नोट                                                                      | यद् (सर्व०) जो                                   |
| मुष्टि (स्त्री०) मुट्ठी, मुक्का                                                              | यदि (अ०) अगर, यदि                                |
| मुह् (दिवा०) मोहित होना                                                                      | √ यम् > यच्छ् (भ्वा०) रोकना, देना                |
| मुहूर्त्तकं (अ०) थोड़ी देर                                                                   | यमल (वि०) जुड़वाँ                                |
| मूढ (वि०) मूर्ख                                                                              | यशस् (नपुं०) कीर्ति, यश                          |
| मूढत्व (नपुं०) मूर्खता, अज्ञान                                                               | याच् (भ्वा०) माँगना, याचना करना                  |
| मूर्ख (पुं०) जड़                                                                             | यातायात (नपुं०) आवागमन, आना-जाना                 |
| मूषिक (पुं०) चूहा                                                                            | यात्रा (स्त्री) सफर, यात्रा                      |
| मृगया (स्त्री०) शिकार                                                                        | यात्रोत्सव (पुं०) जलूस                           |
| मृत्तिका (स्त्री०) मिट्टी                                                                    | यान (नपुं०) गाड़ी                                |
| मार्ग (पुं०) रास्ता, सड़क                                                                    | यामिनी (स्त्री०) रात                             |
| मार्जार (पुं०) बिलाव                                                                         | यावत् (क्रि० वि०) जब तक                          |
| माला (स्त्री०) हार, माला                                                                     | युग (नपुं०) काल, समय, युग                        |
| मालाकार (पुं०) माली, माला बनाने वाला                                                         | युष्मद् (सर्व०) तुम, तू                          |
|                                                                                              | योग-दान (नपुं०) देन                              |
|                                                                                              | यौवन (नपुं०) जवानी                               |
|                                                                                              | रक्त (वि०) रंजित, रंगा हुआ, रमा हुआ, (नपुं०) खून |

रक्ष (भ्वा०) बचाना  
 रजक (पुं०) धोबी, रंगरेज  
 रति (स्त्री०) प्रेम, लगाव  
 रत्नापण (नपुं०) सर्राफ की दुकान  
 रमणीय, रम्य (वि०) सुहावना  
 रवि (पुं०) सूर्य  
 राजन् (पुं०) राजा  
 राजपथ (पुं०) सड़क  
 राज्यपाल (पुं०) गवर्नर  
 रात्रि (स्त्री०) रात  
 रिक्त (वि०) खाली  
 रीति (स्त्री०) ढंग  
 रुच् (भ्वा०) अच्छा लगना, भाना  
 रुचि (स्त्री०) दिलचस्पी  
 रुद् (अदा०) रोना  
 रुह (भ्वा०) उगना  
 रूप (नपुं०) शकल, रूप  
 रूप्यक (नपुं०) रुपया  
 रोग (पुं०) बीमारी  
 लक्ष्य (नपुं०) उद्देश्य, निशाना  
 लग्न (वि०) लगा हुआ  
 लघु (वि०) छोटा, हल्का  
 लघुता (स्त्री०) छोटापन  
 लता (स्त्री०) बेल, लता  
 लभ् (भ्वा०) पाना, प्राप्त करना  
 ललित (वि०) सुन्दर, मनोहर  
 लाभ (पुं०) फायदा, लाभ, प्राप्ति  
 लिख् (तुदा०) लिखना  
 लेखनी (स्त्री०) पैन, कलम  
 लोक (पुं०) संसार, लोग

लोभ (पुं०) लालच  
 लोल (वि०) चञ्चल  
 वन्द्य (वि०) पूजा के योग्य  
 वयस् (नपुं०) आयु, अवस्था  
 वरद् (वि०) वर देने वाला  
 वर्ग (पुं०) समूह  
 वर्ष (नपुं०) साल  
 √ वस् (भ्वा०) रहना  
 वसन्त (पुं०) बहार का मौसम, चैत्र  
 और वैसाख के दो महीने  
 वसुधा (स्त्री०) पृथ्वी  
 वस्तु (नपुं०) चीज, पदार्थ  
 वस्त्र (नपुं०) कपड़ा, वस्त्र  
 √ वह (भ्वा०) बहना, ढोना  
 वाच् (स्त्री०) वाणी, वचन  
 वानर (पुं०) बन्दर  
 वाम (वि०) बाएँ, बायाँ  
 वायु (पुं०) हवा  
 वारि (नपुं०) पानी  
 वार्ता (स्त्री०) समाचार, बात  
 वाष्प (पुं०) भाप  
 वासस् (नपुं०) कपड़ा, वस्त्र  
 वक्तृ (पुं०) बोलने वाला  
 वचस् (नपुं०) वचन, शब्द  
 वत्स (पुं०) बछड़ा  
 वद् (भ्वा०) बोलना, कहना  
 वन् (नपुं०) वन, जंगल  
 वन्द (भ्वा०) वन्दना करना, नमस्कार  
 करना  
 विजयोपहार (पुं०) ट्राँफी

विज्ञान (नपुं०) प्राकृतिक नियमों पर  
आधारित क्रमबद्ध तथा  
व्यवस्थित ज्ञान।

वि √ तृ (भ्वा०) वितरण करना, प्रदान  
करना

वित्त (नपुं०) धन

विद् (दिवा०) होना, विद्यमान होना

√ विद् (तुदा०) प्राप्त करना

विद्या (स्त्री०) विद्या, ज्ञान

विद्यार्जन (नपुं०) विद्या की प्राप्ति

विद्यालय (पुं०) स्कूल

विद्युत (स्त्री०) बिजली

विद्युतापक (नपुं०) बिजली का हीटर

विद्युद्दीप (पुं०) बिजली का लैंप

विनय (पुं०) नम्रता, शिष्टता, प्रार्थना

वि √ नश् (दिवा०) नष्ट होना

विना (अ०) बिना

विनोद (पुं०) मन बहलाव

विपरीत (वि०) उल्टा

विभूति (स्त्री०) सम्पत्ति

वि √ कस् (भ्वा०) खिलना, फैलना

विकसित (वि०) विस्तृत, फैला हुआ

वि √ क्री (क्रया०) बेचना

वि √ चर् (भ्वा०) घूमना, चलना फिरना

वि √ चिन्त् (चुरा०) सोचना

विजय (पुं०) विजय, जीत

विवासन (नपुं०) देश निकाला, वनवास

विशाल (वि०) बड़ा

वि √ श्रम (दिवा०) विश्राम करना

विश्रान्ति (स्त्री०) विश्राम

विश्व (सर्व०) सब, (नपुं०) संसार

विश्वविद्यालय (पुं०) यूनिवर्सिटी

विश्वसृज् (पुं०) सृष्टिकर्ता, प्रभु

विश्वास (पुं०) यकीन, विश्वास

वि √ स्मृ (भ्वा०) भूलना

विहीन (वि०) रहित

वीथी (स्त्री०) गली

वृक्ष (पुं०) पेड़

वृज् > वर्ज् (चुरा०) छोड़ना

वृत् (भ्वा०) होना

वृत्त (नपुं०) घेरा, चक्कर

वृत्तान्त (पुं०) समाचार, घटना

वृद्ध (वि०) बूढ़ा

वृध् (भ्वा०) बढ़ना

वृष् (भ्वा०) बरसना

वेग (पुं०) तेज़ी

वेत् (वि०) जानने वाला

वेदना (स्त्री०) दर्द

वेष (पुं०) भेष

वैरिन् (पुं०) शत्रु, दुश्मन

व्यवसायिन् (वि०) परिश्रम, दृढ़ निश्चयी

व्यवस्था (स्त्री०) प्रबन्ध, इन्तजाम

व्याघ्र (पुं०) बाघ

व्याध (पुं०) शिकारी

व्याधि (पुं०) रोग, बीमारी

विमान (नपुं०) हवाई जहाज़

वि √ रम् (भ्वा०) रुकना

विलक्षण (वि०) अद्भुत, विचित्र

विलम्ब (पुं०) देरी

विवश (वि०) बेबस, लाचार

विवाद (पुं०) बहस

व्यायाम (पुं०) कसरत

व्रण (पुं०) फोड़ा  
 √ शक् (स्वा०) समर्थ होना, सकना  
 शक्ति (स्त्री०) ताकत, बल  
 शत्रु (पुं०) दुश्मन  
 शब्द (पुं०) ध्वनि, आवाज़, शब्द  
 शयनीय (नपुं०) खाट  
 शय्या (स्त्री०) खाट, सेज, बिछौना  
 शल्य-क्रिया (स्त्री) सर्जरी  
 शशिन् (पुं०) चन्द्रमा  
 शस्य (नपुं०) फसल  
 शाक (पुं०) साग, सब्जी  
 शादय (नपुं०) धूर्तता, चालाकी  
 शाला (स्त्री०) घर  
 शाश्वत् (वि०) नित्य, चिरंतन  
 शिश् (भ्वा०) सीखना, शिक्षा प्राप्त करना  
 शिक्षक (पुं०) अध्यापक  
 शिखर (नपुं०) चोटी, पर्वत-शिखर  
 शिथिल (वि०) ढीला  
 शिरस् (नपुं०) सिर  
 शुष् (दिवा०) सूखना  
 शुष्क (वि०) सूखा, सूखा हुआ  
 शूल-पाणि (पुं०) शिव  
 शैशव (नपुं०) बचपन, बालपन  
 शोभा (स्त्री०) छवि, सुन्दरता  
 शौच (नपुं०) सफाई  
 श्यामल (वि०) सौंवला, हरा-भरा  
 श्येन (पुं०) बाज  
 श्रद्धा (स्त्री) विश्वास, यकीन  
 श्रम (पुं०) मेहनत  
 श्रान्ति (स्त्री०) थकावट

श्रीमत् (वि०) शोभायुक्त  
 √ श्रु (स्त्री०) सुनना  
 श्रुत (नपुं०) अध्ययन, ज्ञान, विद्या  
 श्रेष्ठ (वि०) उत्तम, बढ़िया  
 श्रेष्ठिन् (पुं०) सेठ  
 श्रोत् (पुं०) सुनने वाला  
 श्रोत्र (नपुं०) कान  
 श्रोत्रिय (पुं०) विद्वान्, ब्राह्मण  
 श्लोक (पुं०) श्लोक  
 शिशिर (पुं०) पतझड़ का मौसम, माघ  
 और फाल्गुन के दो महीने  
 शिशु (पुं०) बच्चा  
 शिष्य (पुं०) शागिर्द, चेला  
 शीघ्रम् (अ०, क्रि०, वि०) जल्दी  
 शीत (नपुं०) सर्दी, ठण्डा, शीतल, ठण्ड  
 शीर्ष (नपुं०) सिर  
 √ शुभ् (भ्वा०) शोभा देना, चमकना  
 सकाशात् (क्रि० वि०) पास से  
 सखि (पुं०) मित्र  
 संकलित (वि०) संगृहीत, एकत्र किया  
 हुआ  
 संकल्प (पुं०) पक्का-इरादा, दृढ़ निश्चय  
 संकुचित (वि०) सीमित, सिकुड़ा हुआ  
 संकुल (वि०) व्याप्त, घिरा हुआ  
 संग्राम (पुं०) युद्ध-लड़ाई  
 संचार (पुं०) संदेश-प्रेषण  
 सततम् (क्रि० वि०) सदा, निरंतर  
 सत्त्व (पुं०) पशु  
 सदन (नपुं०) भवन, घर  
 सदाचार (पुं०) श्रेष्ठ आचार, श्रेष्ठ आचरण



सदृश (वि०) समान, तुल्य  
 सद्यः (क्रि० वि०) उसी समय, तत्क्षण  
 सनातन (वि०) प्राचीन, परम्परागत  
 सनिवेश (क्रि० वि०) ध्यान-सहित  
 सनिवेशम् (क्रि० वि०) ध्यानपूर्वक  
 सन्देह (पुं०) संशय, शक  
 श्वः (अ०) कल (आने वाला)  
 श्वासः (सं० वि०) सांस  
 संवाद (पुं०) संभाषण, बातचीत  
 संवादिन् (वि०) मिलता-जुलता  
 संशय (पुं०) शक, सन्देह  
 सं √ ह (भ्वा०) समेटना, संहार करना  
 सकाशम् (क्रि० वि०) पास, निकट  
 समवयस्क (वि०) बराबर उम्र वाला  
 सम आ √ दिश् (तुदा०) कहना  
 समान (वि०) तुल्य, सदृश  
 समारोह (पुं०) रौनक, शान  
 समीपम्, समीपे (क्रि० वि०) पास में  
 समुद्र (पुं०) सागर  
 समृद्ध (वि०) उन्नत, सम्पन्न  
 समृद्धि (स्त्री०) उन्नति, वृद्धि  
 सम्पत्ति (स्त्री०) जायदाद  
 सम्पर्क (पुं०) मेल जोल, सम्बन्ध  
 सम्भ्रम (पुं०) घबराहट  
 सम √ मिल् (तुदा०) इकट्ठे होना  
 सम्यक् (क्रि० वि०) भली प्रकार  
 सरस, सरोवर (नपुं०) सरोवर, झील  
 सरित् (स्त्री०) नदी  
 सर्प (पुं०) साँप  
 सर्वतः (अ० क्रि० वि०) सब ओर

सर्वत्र (अ०) सब जगह  
 सर्वथा (अ० क्रि० वि०) सब प्रकार से  
 सन्धि (पुं०) समझौता  
 संन्यासिन् (पुं०) परिव्राजक  
 सन्मति (वि०) अच्छी बुद्धि वाला  
 सप्तन् (सं० वि०) सात  
 सप्ताह (पुं०) हफ्ता, सप्ताह  
 सम (वि०) समान  
 सम अधिगम् > गच्छ (भ्वा०) प्राप्त  
 करना, सीखना, जानना  
 समर्थ (वि०) बलशाली  
 सहसा (क्रि० वि०) एकदम, अचानक  
 सहाय (पुं०) सहायक, साथी  
 साक्षर (वि०) अक्षरों सहित, पढ़ा लिखा  
 सागर (पुं०) समुद्र  
 साधु (वि०) अच्छा, भला  
 साधु (क्रि० वि०) खूब, शाबाश  
 सायम् (क्रि० वि०) शाम के समय  
 सार्थ (पुं०) झुण्ड  
 साहस (नपुं०) साहस, बहादुरी  
 साहसिक (वि०) साहसी  
 सिंह (पुं०) सिंह, शेर  
 सिच् > सिञ्च (तुदा०) सींचना  
 सीमन्तिनी (स्त्री०) स्त्री, नारी  
 सुख (नपुं०) सुख  
 सुखद (वि०) सुख देने वाली, सुखप्रद  
 सुत (पुं०) पुत्र  
 सुन्दर (वि०) मनोहर, सुरूप  
 सुभाषित (नपुं०) सुन्दर वचन, सूक्ति  
 सुरभित (वि०) सुगन्धित

सुरम्य (वि०) बहुत सुहावना  
 सर्षप (पुं०) सरसों  
 सलीलम् (क्रि० वि०) खेल-खेल में,  
 धीरे-धीरे  
 सविद्य (वि०) विद्यावान, विद्वान्  
 सस्मितम् (क्रि० वि०) मुस्कराहट के  
 साथ  
 सस्वर (वि०) सुर-सहित  
 सस्वरम् (क्रि० वि०) सुर के साथ  
 सह (भ्वा०) सहना, सहन करना  
 सह (अ०) साथ, के साथ  
 सेव् (भ्वा०) सेवा करना, सेवन करना  
 सौन्दर्य (नपुं०) सुन्दरता  
 स्तम्भ (पुं०) खम्भा  
 स्तर (पुं०) दर्जा, परत  
 स्तोकम् (क्रि० वि०) थोड़ा-सा  
 स्था > तिष्ठ (भ्वा०) ठहरना, रुकना  
 √स्ना (नपुं०) स्नान  
 स्नान (नपुं०) स्नान करना  
 स्नेह (पुं०) प्यार  
 स्पृश् (तुदा०) छूना, स्पर्श करना  
 स्फुट (वि०) स्पष्ट  
 स्मित (नपुं०) मुस्कराहट  
 स्मृ > स्मर् (भ्वा०) याद करना  
 स्मृत (वि०) याद किया हुआ  
 स्वच्छ (वि०) साफ  
 स्वप् (अदा०) सोना  
 स्वर (पुं०) सुर, स्वर  
 स्वर-लहरी (स्त्री०) आवाज़ की तरंग  
 सुवर्ण (नपुं०) सोना

सुवर्णकार (पुं०) सुनार  
 सुष्ठु (क्रि० वि०) अच्छी तरह से  
 सुहृद (पुं०) मित्र  
 सूक्ति (स्त्री०) सुन्दर उक्ति, वचन  
 सूची-वेध (पुं०) इन्जेक्शन  
 सूनृत (वि०) मधुर, मीठा  
 सुरंगा (स्त्री०) सुरंग  
 सूर्य (पुं०) सूरज, सूर्य  
 सू (भ्वा०) सरकना  
 स्वसृ (स्त्री०) बहिन  
 स्वस्थ (वि०) तन्दरुस्त  
 स्वामिन् (पुं०) स्वामी, मालिक  
 स्वास्थ्य (नपुं०) सेहत  
 स्वी √ कृ (तना०) स्वीकार करना  
 हत (वि०) मारा गया  
 हन् (अदा०) मारना  
 हर्ष (पुं०) प्रसन्नता  
 हस् (भ्वा०) हैंसना  
 हानि (स्त्री०) नुकसान, हानि  
 हित (नपुं०) हित, कल्याण  
 हितावह (वि०) हितकारी, लाभप्रद  
 हिम (नपुं०) बर्फ  
 √ ह् (भ्वा०) हरना, ले जाना  
 हृषीकेश (पुं०) श्रीकृष्ण  
 हेतु (पुं०) कारण  
 हेम-धातु (पुं०) सोना  
 होरा (स्त्री०) घंटा  
 होरात्रय (नपुं०) तीन घण्टे  
 ह्यः (अ०) कल (बीता हुआ)